प्रस्तावना.

सुज्ञ जैन वन्धुओ अने व्हेनो.

आपने सुविदितज छे के आवा हंमेश--भणवा वांचवा विचारवा जेवा लघु पुस्तकनी प्रस्तावनानी अति आवश्यक्ता होइ शके नहि, छतां आ पुस्तक शा हेतुथी वाहार पाडवामां आव्युं, तेम कोना सदुपदेशथी विगेरे सहज हकीकत वहार मुकवी उचित धारी छे.

घणा आन्दनी वात छे के हिंदुस्तानना घणा शहेरो अने गामोमां ज्यां ज्यां आपणा पवित्र पूज्यपाद उत्तम चारित्र रत्नथी विभूषित गुरुणीजी महाराजाओ विचरी रह्या छे त्यां त्यां आधुनिक समयमां जैन स्त्रीवर्गमां तेम वालिकाओमां खास परमपवित्र वितराग परमात्माना अविच्छिन्न प्रभावशाळी धर्म क्रियामां तेम ते परमात्माना अलौकिक ग्रन्थोने पठनपाठन करवाना उद्यम माटे पूरतो उत्साह दाखल करेलो दृष्टिगोचर थाय छे, दरेक स्त्रीयो अने वालिकाओ पोतानुं दुर्लभ्य मानुष्य जीवन जो वितराग परमात्माना धर्म सेवनथी तेमज पठनपाठनथी पावन करे तो ते शिवाय आनि; सार दुनीयामां आत्म कल्याणनो वादशाही मार्ग वीजो कयो छे ? मतलव के तेज छे आ उत्साहने पूरो पाडवा माटे अने कर्मानुसार चारे गतिना चोवीसे दंडकमां परिभ्रमणा करवारुप दंडकादि द्वारना पुस्तको प्रसिद्ध थयेला द्रष्टिगोचर थाय छे छतां पण आवा विस्तार पूर्वक प्रसिद्ध थयेल नहीं होवाथी अने तेनी घणी जरुर समजी तेवा प्राचीन हस्तलिखित ४१ द्वारवाली प्रत " परम उपगारी साध्वीजी

घणी तेनी मूल कींमते वेचाण करेली छे तेमां जे खर्चमां खुटता रुपैया पुरा करी जे वध्ये ते आ दंडकादि द्वार संग्रह नामना पुस्तकमां वापरवा पूज्यपाद गुरुणीजी महाराजे परवानगी आपेली छे कारणके आ पुस्तकमां वीलकुल नहींज जेवी अल्प मदद मळेली छे तो पण आ पुस्तक पुज्यश्रीए योग्य साधुसाध्वीजी महाराजाने भेट आपवा मुकरर करेलुं छे अने श्रावक श्रावीकाओने जेमने आ पुस्तकनी जरुर होय तेमने प्रसिद्ध कर्तानी पांसेथी. योग्य कींमते मली शकशे.

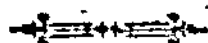
जेवी रीते उक्त गुरुणीजी महाराज तरफथी उपरना छपावेला वे पुस्तको लोकप्रीय थइ पडया तेम आ त्रीजुं पण अती उपयोगी पुस्तक लोकप्रीय थइ पडशे तेम अमारु सहज मानवुं छे कारण के घणा विस्तारवाळा जाणवा लायक विषयोथी भरपूर छे. वली आ पुस्तकनी आवकनो कोइने अंगत लाभ पण नथी तेनी जे कींमत वेचाणथी उपजशे ते ते पुस्तकना खर्चमां जतां वाकी वधशे ते तेवाज पुस्तको उद्धार अगर ज्ञान खातामांज जवानी छे. जेथी आ पुस्तक खरीदनारने ज्ञान दान अने ज्ञाननुं प्राप्त थवुं एम वेवडो लाभज छे.

आ पुस्तक छपाववानो उपदेश करनार पूज्यपाद गुरुणीजी महाराज श्री देव श्रीजीना सुविहित शिष्या साध्वीजी श्रीश्री १००८ वार सौभाग्य श्रीजीमहाराजनो खरा अतःकरणथी आभार मानवामां आवे छे के जे माहा उपगारी गुरुणीजी माहाराज तरफथी उपर वतावेला उत्तम अने लोकप्रीय वे पुस्तको तो वाहार पडी आ त्रीजुं पुस्तक पण तेमनाज उपदेश अने प्रेरणानुं फल छे.

आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां जे जे दाना गृहस्थो तथा व्हेनोए

मदद करी छे तेमना मुबारक नाम अहीं नीचे सविस्तर जोडवा साथे तेमनो पण खरा अंतःकरणथी आभार मानवामां आवे छे.

प्रसिद्ध कर्तानी नम्रविनंती.



आ पुस्तक प्रसिद्ध करवा माटे—पुज्यपाद गुरुणीजी महाराजश्री सौभाग्यश्रीजीए मने भलामण करेली, तेथी तेमनो अन्तःकरणथी उपकार मानुछुं. परंतु वास्तविकरीते आवा ग्रन्थोने प्रकाशमां मुकवां ते जो के लाभ रुप छे,पण तेमां अशुद्धि अने शास्त्रकारनी आज्ञाथी विरुद्ध थाय ते विगेरे घणुं जोखमरुप होइ तेनुं भवभीति पणुं स्वीकारी "शुभे यथाशक्ति यतनीयम्" ए न्यायथी, मारी अल्पशक्ति मुजब जनसमूहने उपकारी अने लोकप्रिय थाय तेम करवा आ पुस्तकमां संपूर्ण प्रयत्न करेलो छे छतां पण आ प्रसिद्ध थयेला पुस्तकमां दृष्टि दोषथी या यंत्र (छापाकलाना) दोषथी शास्त्र विरुद्ध या अशुद्ध छपायुं होय ते बाबते सुज्ञ भाइयो व्हेनोनी क्षमा चाहुं छुं अने सुधारी वांचवा भलामण करुं छुं वली—छपाया पछी—तपास करतां जे जे कंइ भुलो जणाइ छे तेनुं शुद्धिपत्रक पण आ पुस्तकना छेडे जोडेलुं छे तो ते प्रमाणे प्रथमथी सुधारीनेज वांचवा भणवा विशेष भलामण करी अत्रे विरमुंछुं.

संवत १९७३ नां चैत्र सुद १५

ली. प्रसिद्ध कर्ता.

मास्तर. उमेदचंद रायचंद.

ठे. अमदावाद दा. पांजरापोळ.

आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां जे जे गृहस्थो तथा व्हेनोए मदद करेली छे तेनां मुबारक नामो नीचे मुजब छे.

२५–०–० चोकशी अमरचंद मुलचंदनी पत्नि सोभाग्यवंती बाइ समरत मुं. खंभात बंदर.

२५–०–० अमरचंद कानजीनी विध्वा बाइ दीवाळीबाइ मुं. मांगरोळ.

१०–०–० कालीदास उमेदचंद मुं. अमदावाद.

५–०–० मफाभाइ चुनीलाल डागवाला मुं. अमदावाद.

५–०–० हीरालाल चुनीलालनी विध्वा बाइ जासुद मुं. अमदावाद

कुल ७०–०–०

सूचना.

पुस्तकने जेम तेम ज्यां त्यां रखडतुं मूकी आशातना करवी नहि. तेमज अशुद्ध हाथे पुस्तकने अडकवुं नहि. उघाडे मुखे पुस्तक वांचवुं नहि.

मंगल.

जैनो धर्मः प्रकटविभवः संगतिः साधुलोके, विद्वद्गोष्ठी वचनपटुता कौशलं सत्क्रियासु । साध्वी लक्ष्मीश्चरणकमलोपासना सद्गुरूणां, शुद्धं शीलं मतिरमलिना प्राप्यते नाल्पपुण्यैः ॥ १ ॥

सार–प्रगट प्रभाववालो जैनधर्म, संत-सुसाधु जनोनी संगति, ज्ञानी पुरुषो साथे गोष्टी, वाक्चतुराइ, शुभकरणीमां कुशलता, न्यायोपार्जित लक्ष्मी, सद्गुरुना चरणकमलनी उपासना, निर्मलशील अने शुद्धमति, एटलां वानां प्रबल पुण्ययोगेज प्राप्त थइ शके छे.

अथ विषयानुक्रमणिका.



श्री सर्वज्ञाय नमः

अथ श्री दंडकादिक द्वार लीख्यते.

॥ गाथा ॥

दंडग भुवण शरीरं, अवगाहणा लेस्सेंदिश्र समुग्घाया.
संघयण संठाण पाणा, पज्जति योनी कुलकोडी. ॥१॥
नाणान्नाणं दंसण, दिठि जोगोवउग गुण ठाणा.
श्राहार श्नाहारे, किमाहारउ जीश्र नेया. ॥ २ ॥
वेश्र कसाय सन्ना, य कायठिइ विरहकाळउ चेव.
चवणोववाय संख्या, गइ श्रागइ संपया देव. ॥३॥
संज्या जराउ परि-ग्गह श्रप्प बहु सन्निय श्याइं.
दाराइं श्ग चत्ता, मरणाश्रं संगहे इश्थं ॥ ४ ॥

१ दंडक २ भुवन ३ शरीर ४ अवगाहना ५ लेश्या

६ इंडिय ७ समुद्घात ८ संघयण ९ संस्थान १० प्राण ११ पर्याप्ति १२ योनी १३ कुळ कोडी १४ ज्ञान १५ अज्ञान १६ दर्शन १७ द्रष्टि १८ जोग १९ उपयोग २० गुणठाणा २१ आहार २२ आहारनी इछा २३ किमाहार २४ जीवभेद २५ वेद २६ कषाय २७ संज्ञा २८ स्वकाय स्थिति २९ विरहकाळ ३० चवन संख्या ३१ उपजवानी संख्या ३२ गति ३३ आगति ३४ संपदा ३५ देवद्वार ३६ संजति ३७ जराऊ ३८ परिग्रह ३९ अल्प बहुत्व ४० संज्ञी अने वळी ४१ प्रकीर्ण विगेरे एकतालीस द्वारोना संभारवाना अर्थे अहीं संग्रह करीएछीए.

अथ पहेलुं दंडक द्वार प्रारंभः

दंडयते जीवा यस्मिन स दंडकः—जीवो जेने विषे दंडाय छे तेने दंडक कहीए. ए दंडक चोवीश छे के जेमां सर्व संसारी जीवो परिभ्रमण करे छे. ते दंडक ना नाम तथा वाख्या निचे प्रमाणे.

प्रथम नारकीनो एक दंडकः—नारकी एटले अशुभ कर्मोदयवंत जीवोनुं वसवुं छे जेमां एवुं जे स्था-

नक ते नारकी कहीए, ते नारकी पृथ्वीना भेद क- रीने सात छे तेना नाम. १ घमा २ वंसा ३ सेला ४ अंजणा ५ रिठा ६ मघा ७ माधवति.

दश भुवनपतिना दश दंमकः–भुवन पति–अधो लोकमां रहेला जे शास्वता भुवन–घर–तेना पति–धणी–ते भुवनपति, तेना दशभेदछे, तेनानाम, असुर कुमारनिकाय, नागकुमारनिकाय, सुवर्णकुमारनिकाय, विद्युतकुमारनिकाय, अग्निकुमार निकाय, द्वीपकुमार- निकाय, उदधिकुमारनिकाय, दिशीकुमारनिकाय, वायुकुमारनिकाय, अने स्तनितकुमारनिकाय एवं अगियार दंमक.

पृथ्वीकायनो एक दंमकः–तेना मूळ बे भेद सू- क्ष्म ने बादर, तेमां सुक्ष्म एटले अतिशे झीणां च- क्षुथी नहि देखाय एवा सुक्ष्मनाम कर्मोदयवंत जीवो, के जे आ चौदराजलोकमां सर्व ठेकाणे भर्यां छे कोइथी छेदाय भेदाय नहि पर्वतादिमांथी पण आरपार जाय आवे अग्निथी बळे नहि कोइना उप- योगमां न आवे एवा अने निरतीशायी जीवो ते सु-

क्ष्म कहेवाय. बादर एटले स्थुल शरीरवाळा चक्षुथी देखी शकाय एवा बादर नाम कर्मोदय वंत, नीयत स्थानवर्त्ती अने बीजाथी छेद भेद थाय एवा जीवो बादर कहेवाय, ते बादर पृथ्वीकायना शुद्ध, वालुका, मणसिल, शर्करा, सुंहाळी, अने खरपृथ्वी ए मूळ छे. तथा बीजा स्फटिक रत्न, मणिरत्न, परवाळा हिंगळोक, हडताळ, पारो, सोनुं, रुपुं, तांबु, जसत, शिशु, कथीर, अबरख, खडी, रमची, तूरी माटी, खारी माटी, सुरमो, सिंधव, संचळ, तथा पाषाणनी सर्व जातीउ अने मीठुं विगेरे घणा भेद बादर पृथ्वीकायना छे. ॥ एवं बार दंडक ॥

अपकाय--पाणीना जीवो--तेनो एक दंडक, तेना मूळ बे भेद छे एक सुक्ष्म अने बीजो बादर तेमा सुक्ष्म ते पुर्वोक्त रीते जाणवा अने बादर ते भूमीनुं पाणी,[1] आकाशनुंपाणी,[2] झाकळनुं,[3] करानुं,[4] हीमनु. लीलावाळुउपरनुं धुंवरीनुं तथा घनोदधि अने

---

१ कुवा अने वावडी वगेरेनुं पाणी. २ नदी तळाव अने सरोवरनुं पाणी.

तनोदधि विगेरेना पाणी ते सर्व बादर अपकायना भेदो जाणवां. ॥ एवं तेर दंडक ॥

तेउकाय अग्निना जीवोनो एक दंडक. तेना सुक्ष्मने बादर एवा बे भेद छे, सुक्ष्म ते पूर्वोक्त रीते जाणवा ने बादर ते अंगारानोअग्नि ज्वालानो अग्नि, भरसाडयनो अग्नि, उल्कापातनो अग्नि, कणीआनो अग्नि, असनी(घसाराथी अग्नि उत्पन थाय छे ते जेवा के लोढुं चकमक अरणी वगेरे घसवाथी अग्नि पेदा थाय ते),अने विजळी विगेरे बादर अग्नि कायना भेदो छे. ॥ एवं चौद ॥

वाउकाय--वायराना जीवोनो एक दंडक. ते वायु कायना सुक्ष्मने बादर एवा बे भेद छे. तेमा सुक्ष्म ते पूर्वोक्त रीते जाणवा अने बादरते उद्भ्रामक(उंचे चडतो) वायु, उत्कलिक (निचे पडतो) वायु मंडळीक (वंटोळीउ) वायु, महा (मोटो–जे आंधी कहेवाय छे ते) वायु, शुद्ध(सुखकारी झीणो)वायु, गुंज (घुघुवाट करतो) वायु, घनवायु अने तन-

वायु वगेरे बादर वायु कायना घणा भेदो छे. तेनो एक दंमक ॥ एवं पंदर ॥

वनस्पतिकाय–झाड पालाना जीवोनो एक दंमक ते वनस्पतिकायना, साधारण अने प्रत्येक एवा बे भेद छे, तेमा साधारणएटलेअनंताजीवोनुं एक शरीर होय, ते साधारणवनस्पतिकाय, तेना बे भेद, एक सुक्ष्मने बीजो बादर, सुक्ष्म वनस्पतिकाय ते पूर्वोक्त सुक्ष्म जीवोना जेवा जाणवा, अने बादर साधारण वनस्पतिकायने जेना सांधा नसो गांठ वगेरे प्रगट न देखाताहोय भांगवाथी सरखा भाग थता होय, तांतणा(रेशां)विनाना होय अने छेदीने वाववाथी पण उगे एवी सर्व वनस्पति जेवी के सर्व जातना कुंणाफळ, कंद, अंकुरा, कुंपळो, पांचवर्णनी लील फूल, बिलाडीना टोप, लीलुं आदु, लीली हळदर, लीलो कचुरो, मोथ, थेग, थोर, गळो, अने सण वगेरेना पांदमा तथा कुंवारनुं पाठु वगेरे बादर साधारण वनस्पतिकायना घणाभेदोजाणवा. प्रत्येक वनस्पतिकाय ते एक शरीरने वीषे एक जीव होय ते

प्रत्येकवनस्पतिकाय, तेना फळ, फुल, छाल, काष्ट, मूळीआ, पांदडा अने बीज ए सर्व प्रत्येक वनस्पति काय जाणवा ॥ एवं १६ दंडक ॥

विगलेंद्रिय–पांच इंडीउथी उछी छे इंडी जेने एवा त्रसजीवो ते विगलेंद्रिय कहेवाय, तेना बेइंडीय, तेइंडीय, अने चौरींडीय, एम त्रएय दंडक छे, तेमा बेइंडीय ते स्पर्श (चामडी) इंडी, अने रस (जीभ) इंडी ए बे इंडीय वालाजीव जेवा के शंख, कोडा, गंडोळा, जलो, चंदनक, अलशिया, लाळीयां जीवो, मेर (लाकडामां थता जीवो) करमीआ, पोरा, अने चुडेल विगेरे बेइंडीय जीव जाणवा तेनो एक दंडक, तथा स्पर्श–रस अने घ्राण (नाक) ए त्रएय इंडीउवाला जीवो जेवा के कानखजुरा, माकण, जुंआ, जुंउ, लिखो, कीडीउ, उद्धेहिउ, मंकोडा, इयळो, धीमेलो, सवा (वाळना मूळमां थाय छे) गींगोडा (कुतराना कान उपर थाय छे ते) इंतरडी, गद्दहीआ, चोरकीडा, छाणना कीडा धान्यना कीडा (धनेरा) कुंथुआ, अने गोपालीक वगेरे ः

जातना तेइंड्रियजीवो जाणवा, तेनो एक दंरुक, अने स्पर्श–रस–घ्राण अने चक्षु (आंखो) ए चार इंद्रीयवाळा जीवो जेवा के विंछी, नमरा, नमरीउं, तीरुो, मांखीउं, रुांस, मछर, कसारी, करोळीआं, खरुमांकडो अने पतंगीआ विगेरे घणीजातना चौरींडीय जीव छे तेनो एकदंरुक ॥ एवं १ए दंरुक थया ॥

तिर्यंच पंचेंड्रिय–तिर्यंच–तीर्छा (वांका) चाले, अथवा स्वकर्मोदयथी सर्व दंरुके परिभ्रमण करे एवा पंचेड्रिय स्पर्श, रस घ्राण चक्षु अने श्रोत (कान) ए पांचेइंड्रियवाळा जीवो ते तिर्यंच पंचेड्रिय कहेवाय तेना मूळ पांच नेद छे. ते आ प्रमाणे मांछला–काचबा, कुंरु, अने सुसुमार विगेरे जलचर,१ गाय, नेंश, घोरुा, हाथी वगेरे चोपगा, २ नोळीआ, उंदर, खिसकोली वगेरे भुज परी सर्प, ३ सर्प, अजगर वगेरे उर परि सर्प, ४, चकली कागरुा कावर पोपट मोर वगेरे रुवांटानी पांखवाळा अने चामाचीरुीआं वगेरे

रुन. पांखवाळा तथा संकोचेली अने वीस्तारेली पांखोवाळा ते सर्व खेचर ५ कहेवाय. उपर क-

हेवां जलचर, चोपगा, जुजपरि सर्प, उरपरि सर्प अने खेचर ए पांचे जातना तिर्यंच पचेंडिय वळी समुर्छीम अने गर्भज एम बे प्रकारना छे. तेथी पांच ने पांच दश जेद तिर्यंच पचेंड्रियना थया तेनो एक दंरूक ॥ एवं वीस ॥

मनुष्य–मनुथकी उत्पन्न थयेला ते मनुष्य कहीए आ मनुष्य शव्द राज्यादि शव्दनी पेठे जाणवो तेना मुख्य चार जेद छे कर्म जूमिज अकर्म जूमिज अंतरद्वीपना अने समुर्छीम.

कर्मजूमि–असि (शस्त्र) मसि (मेस) कृपि(खेती) ना व्यवहार जेमां छे एवा क्षेत्रो, ते ५ जरत, ५ ऐरवृत्त ५ महाविदेह ए पन्नर कर्म जूमि छे.

अकर्मजूमि–असि मसि अने कृपिनो व्यवहार जेमां नथी एवा क्षेत्रो ते ५ हैमवंत ५ ऐरण्यवृत्त ५ हरिवर्ष ५ रम्यक ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु एम अकर्म जूमि त्रीस छे.

अंतरद्वीप–आ जंवुद्वीपमां मेरुथी दक्षिण दिशाए जरत क्षेत्रना छेरू १०० जोजन उंचो १०५२ जो-

जन १२ कला पहोळो अने २४ए३२ जोजन ना आशरे लांबो पीळा सोनामय पूर्व पश्चिम लवण समुद्र पर्यंत चुल्ल हेमवंत नामनो पर्वत छे. तेना बन्ने छेडाने विषे लवण समुद्रमां ०४०० जोजनथी कांइक अधिक लांबी एवी बब्बे दाढा विदिशीने विषे नीकळी छे. ते चारे दाढा उपर सात सात अंतरद्वीपछे ते अंतरद्वीप मांहेला पहेला चार अंतर द्वीप जगतीथी ३०० जोजन दूर, ३०० जोजनना विस्तारवाळा छे, तथा जगतीथी ४०० जोजन दूर, ४०० जोजनना विस्तारवाळुं बीजुं अंतरद्वीपनुं चतुष्क छे, एम सर्वने विषे १०० जोजननी वृद्धि करतां सातमुं अंतरद्वीपनुं चतुष्क ए०० जोजन दूर, ए०० जोजनना विस्तारवाळुं छे एम २० अंतरद्वीपो थया, तेमजवळी मेरुपर्वतथी उत्तर दिशाए ऐरवृत्त क्षेत्रने छेडे हेमवंत सदृश शिखरी पर्वत छे तेने पण पूर्वोक्त प्रकारे चार दाढाउ छे तेमां पूर्वोक्त रीते सात सात अंतरद्वीपो छे तेथी ते २० अंतरद्वीपो अने प्रथमना हेमवंतपर्वतना २० अंतरद्वीपो मळी ५६ अंतरद्वीपो थया. तेमां युग

ळिया (जोमला) वसे छे.

उपर कहेला कर्मभूमि अकर्म भूमि अने अंतरद्वीपना मनुष्योना वळी गर्भज अने समुर्छीम एवा बव्वे भेद छे. गर्भज ते गर्भमां उत्पन्न थाय छे, अने समुर्छीम ते मनुष्यना (विष्टा) मळमूत्र, बळखा, नाकनोमेल, वमन, पित्त, परु, लोही, वीर्य, शुक्रना सुकायेला पुद्गल, मरुदां, स्त्रीपुरुपना संयोग, नगरनी खाळ, अने सर्व अशुचि दुर्गंध मय स्थानोने विषे उत्पन्न थाय छे. ॥ एवं २१ दंडक ॥

व्यंतर–विविध प्रकारनुं अंतर ते व्यंतर कहिये, व्यंतरादिक आश्रय पणाए करीने छ जेने एटले व्यंतर, वनांतर अने शैलांतरोमां वसे छे, ए स्पष्ट रीते सर्व विज्ञात छे. ते व्यंतरो सोळ प्रकारनां छे, तेमां पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, अने गंधर्व, ए आठ प्रकारनां व्यंतर छे तथा अणपन्नि, पणपन्नि, एसीवादी, भूतवादी, कंदीत, महाकंदीत, कोहंड, अने पतंग, ए आठ प्रकारनां वाणव्यंतरो छे. ॥ एवं २२ दंडक ॥

ज्योतिषि–ज्योतिष्य प्रकाशवाळा जे देव ते ज्योतिषि कहीए. ते चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र अने तारा ए पांच प्रकारनां छे. तेमां अढीद्वीप मांहेला पांच चर छे अने अढीद्वीप बाहेरना स्थिर छे. एम दश भेद थया तेनो एक दंडक ॥ एवं २३ दंडक ॥

वैमानिक–विशिष्ट पुन्ये करी घणा जीवो थकी उपभोग थाय छे जेनो ते विमान कहिए ते विमानने विषे रहेला जे देवो ते वैमानिक जाणवा तेना बे भेद छे, तेमां एक कल्पोत्पन्न अने बीजा कल्पातीत. तीहां कल्प ते स्थिति, जाति, सामानिकादि व्यवस्था मर्यादा छे ज्यां अथवा तिर्थंकरना कल्याणादिके मनुष्य लोकने विषे आववानो व्यवहार छे जेनो तेने कल्पोत्पन्न कहीए तेनां नाम सौधर्म देवलोक, इशानदेवलोक, सनतकुमारदेवलोक, माहेंद्र देवलोक, ब्रह्मदेवलोक, लांतक देवलोक, महाशुक्र देवलोक, सहसारदेवलोक, आणंतदेवलोक, प्राणंत देवलोक, आरणदेवलोक, अने अच्युत देवलोक, एम बार छे. कल्पातीत–कल्प–स्थिति, जाति, सामानिकादि

व्यवस्थारुप मर्यादाथी अतित–रहीत छे अर्थात ज्यां स्वामि, सेवक भाव नथी. ते कल्पातित कहीए. ते कल्पातित वळी बे प्रकारे छे १ नव ग्रैवेयक अने २ पांच अनुत्तर विमान नवग्रैवेयक-चौद राज लोकरुप पुरुषाकारना ग्रीवा(गळा)ना स्थाने वसवुं छे जेनुं तेने ग्रैवेयक कहीए ते सुदर्शन, सुप्रतिबद्ध, मनोरम, सर्वभद्र, विशाल, सुमनस, सोमनस, प्रीयंकर, अने आदित्य एम नव प्रकारनां छे अनुत्तर–सर्वथी उपर छे विमान जेना ते अनुत्तर कहीए ते विजय, विजयंत, जयंत, अपराजित, अने सर्वार्थसिद्ध, एम पांच प्रकारना अनुत्तर विमान छे. ॥ एवं २४ दंडक ॥

अथ श्री बीजो भुवनद्वार.

प्रथम नारकीना भुवननी विविक्षा करवाने माटे साते नारकीनां गोत्र कहे छे. १ रत्नप्रभा २ शर्करा प्रभा ३ वालुका प्रभा ४ पंक प्रभा ५ धुम प्रभा ६ तम प्रभा ७ तम तम प्रभा.

रत्नप्रभा पृथ्वीने पहेले कांडे (वळीये) एटले पृथ्वीना जाडपणाना अमुक भागे रत्नो घणां छे कहुं

छे के. ॥ गाथा ॥

तथ्य सहस्सा सोलस, खरकंड पंक बहुल कंडंतु;
चुलसी सहस्साइं, असइ जल बहुल कंडेतु. ॥ १ ॥

अर्थः—ते रत्न प्रभामां पहेलो सोल हजार जोजन कठण रत्नमय कांड छे, बीजो चोरासी हजार जोजनना पंक (कादव) बहुल कांड अने एंसी हजार जोजननो जल बहुल कांड छे, ए रीते त्रण कांड छे, तेमां पहेले कांडे रत्न घणा छे, माटे तेनुं नाम रत्न प्रभा, बीजी नरक पृथ्वीने विषे कांकरा घणा होवाथी तेनुं नाम शर्करा प्रभा, त्रीजी नरक पृथ्वीने विषे वेलु (रेती) घणी होवाथी तेनुं नाम वालुका प्रभा, चोथी नरक पृथ्वीने विषे कादव घणो होवाथी तेनुं नाम पंक प्रभा, पांचमी नरक पृथ्वीने विषे धुमाडो घणो होवाथी तेनुं नाम धुम प्रभा, छठी नरक पृथ्वीने विषे अंधकार घणो होवाथी तेनुं नाम तमप्रभा अने सातमी नरक पृथ्वीने विषे घणो घणो अंधकार होवाथी तेनुं नाम तमतमप्रभा कहेल छे, एम साते नरक पृथ्वीनां गुण निष्पन्न गोत्र जाणवां.

प्रथमनी रत्नप्रभा पृथ्वी–एक लाख एंशी हजार जोजन जाडी, असंख्याता हजार जोजन विस्तारवाळी (लांबी पहोळी) अने विस्तारथी त्रण गणी झाझेरी परिधिए (घेरावे) करीने सहित झालरना आकारे छे. परिधिने फरता वळीयाकारे छ जोजन सुधी घनोदधि, साडाचार जोजन सुधी घनवात अने दोढ जोजन सुधी तनवात छे, पछी अलोक छे. ते नरक पृथ्वीने नीचे घनवात, तनवात अने आकाशना पींड अनुक्रमे नीचे नीचे एक बीजाथी असंख्यात असंख्यात जोजनना रहेला छे एटले घनोदधिथी असंख्यात गुणो घनवातनो पींड, घनवातना पींडथी असंख्यात गुणो तनवातनो पींड अने तनवातना पींडथी असंख्यात गुणो आकाशनो पींड छे. तेनी नीचे बीजी नारकी रहेली छे. हवे ते रत्नप्रभा नरक पृथ्वी एक लाख एंशी हजार जोजननी जे जाडी कही छे तेमांथी उपर नीचे हजार हजार जोजन काढीए त्यारे बाकी एक लाख अठ्योतेर हजार जोजन पृथ्वी रही. तेने विषे तेर प्रतर (माळ, पाथडा) छे. ते नीचे

मुजब छे, १ सीमंतो २ शेरुर्ड ३ रुन्न ४ उज्जंत ५ संभ्रात ६ असंभ्रात ७ विभ्रांत ८ ऋक्त ए शीत १० वक्रान्त ११ अवक्रान्त १२ विकस्र अने १३ शेरुक ते दरेक प्रतर त्रण हजार जोजनना उंचा, असंख्यात जोजनना लांबा पहोळा अने अगीयार हजार पांच सो त्यासी जोजन उपर एक जोजनना त्रीजा नाग जेटला अंतरे अंतरे एक वीजाथी नीचे नीचे छे. तेमां त्रीस लाख नरकावासा छे. ते बे प्रकारना छे. १ पुष्पावकीर्ण एटले छुटा फूलनी पेठे ज्यां त्यां रहेला छे, ते उंगणत्रीस लाख पंचाणुं हजार पांचसो सरूसठ छे, २ श्रेणीबंध चार हजार चार सो तेत्रीस छे. एम बंने मळी ३०००००० नरकावासा छे. पहेला सीमता नामना प्रतरना मध्य नागमां सीमंत नामनो इंडक [मूख्य]नरकावासो पीस्ताळीस लाख जोजननो लांबो पहोळो छे. अने बाकीना सर्वे नरकावासा संख्याता तथा असंख्याता जोजनना लांबा पहोळा छे. तेमां नारकीना जीवो रहे छे.

बीजी शर्करा प्रना नरकपृथ्वी—एक लाख बत्रीस

हजार जोजन जाम्री, असंख्याता हजार जोजन विस्तारवाळी अने विस्तारथी त्रण गणी जाझेरी परिधिए करीने सहित झालरना आकारे छे. परिधिना फरता वळीयाकारे ० जोजन एक गाउ उपरांत गाउना त्रीजाभागसुधी घनोदधि, चार जोजन त्रण गाउ सुधी घनवात अने एकजोजन बे गाउ उपरांत गाउनात्रीजाभागसुधी तनवात छे. ने ते पछी अलोक छे. ते नरकपृथ्वी नीचे वीसहजारजोजन घनोदधिनो पींड छे. तेनी नीचे घनवात, तनवात अने आकाशना पींड अनुक्रमें नीचे नीचे एक बीजाथी असंख्यात असंख्यात जोजन पूर्वोक्त रीते रहेला छे. तेनी नीचे त्रीजी नारकी छे. हवे ते शर्करा प्रभा नरकपृथ्वी एक लाख बत्रीश हजार जोजननी जेजाडी कही छे तेमांथी उपर तथा नीचेथी एक एक हजार जोजन काढीएत्यारे बाकीनी एक लाख त्रीश हजार जोजन पृथ्वी रही तेने विषे अगीयार प्रतर छे. ते नीचे मुजब छे–१ स्तनिक २ स्तनक ३ मणक ४ चणक ५ घट्ट ६ संघट्ट ७ जीव्ह ० अजीव्ह ए लोल १०

लोलावत ११ घणलोलुक. ते दरेक प्रनर त्रण हजार जोजनना उंचा असंख्यात जोजनना लांबा पहोळा अने नव हजार सातसो जोजनना अंतरे अंतरे एक बीजाथी नीचे नीचे ठे. तेमां पचीसलाखनरकावासा ठे, ते बेप्रकारनां ठे, १ पुष्पावकीर्ण एटले बुटां फुलनीपेरे ज्यांत्यांरहेलांठे, ते चोवीश लाख सत्ताणुं हजार त्रणसो ने पांच ठे अने २ बीजा श्रेणीबंध वेहजारठसोपंचाणुंठे, एमबंनेमळी २५००००० नरकावासाठे. तेसर्वनरकावासामां केटलाएक संख्याता अने केटलाक असंख्याता जोजननां लांबापहोळांठे, तेमां नारकीना जीवो रहे ठे.

त्रीजीवालुकाप्रभा—नरकपृथ्वी एकलाख अठावीसहजार जोजननी जाडी, असंख्याता जोजननीविस्तारवाळी अनेविस्तारथी त्रणगणी फाझेरी परिधिए करीने सहित झालरनां आकारे ठे. परिधिनेफरतां वळीयाकारे ठजोजनवेगाउउपरांत गाउनात्रणभागकरीए एवाबेभागसुधी घनोदधि पांचजोजनसुधी घनवात अने एकजोजनवेगाउउपरांतएकगाउनात्रण

भागकरीए एवा बेभागसुधीतनवातछे,ने तेपछी आकाश आवेछे. ते नरकपृथ्वीनीनीचे वीशहजार जोजन घनो दधिनो पींडछे तेनीनीचे घनवात, तनवात अनेआकाशनापींड अनुक्रमे नीचेनीचे एक बीजाथी असंख्यातअसंख्यातजोजनना पूर्वोक्त रीते रहेलां छे, अने तेनीनीचे चोथीनारक पृथ्वी छे, हवे ते वालुकाप्रभा नरकपृथ्वी एकलाखअठावीसहजारजोजननीजे जाडी कहीछे तेमां उपरथी तथा नीचेथी एकेकहजारजोजनकाढीए त्यारे बाकीनी एकलाखछवीसहजारजोजनपृथ्वी रही तेने विषे नव प्रतरछे.तेना नाम—तप्त, तपिक,तपन,तापन,विदाय,प्रज्वलित,उज्वलित,संज्वलित, अने संप्रज्वलित, ते दरेकप्रतरत्रणहजार जोजननां उंचा,असंख्यात जोजननां लांबा पहोळा अने वारहजारत्रणसेंपंचोतेरजोजनना अंतरे अंतरे एक बीजाथी नीचे नीचे छे. तेमां पंदरलाख नरकावासा छे. ते वेप्रकारनाछे, १ पुष्पावकीर्णएटलेछुटाफुलनीपेठे ज्यांत्यांरहेलां छे, ते चौद लाखअठाणुंहजारपांचसो नेपंदरछे. अने २ श्रेणीबंध एकहजारचारशोनेपंचाशी

छे. एम वन्ने मळी १५००००० नरकावासा छे. ते सर्व नरकावासामां केटलाएक संख्याता तथा केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोलां छे. तेमां नारकीना जीवो रहे छे.

चोथी पंकप्रभा नरकपृथ्वी—एक लाख वीस हजार जोजननी जाडी, असंख्याता जोजननी विस्तारवाळी अने विस्तारथी जगत्य गणी झाझेरी परिधिएकरीने सहीत झालरनां आकारे छे. परिधिनां फरतां वली-पाकोस्सातजोजनसुधीघनोदधि, पांचजोजनने एक गाउघनवात, अनेएकजोजनने त्रणगाउ सुधीतनवात छे. ने तेपछी अलोकआवेछे. ते नरकपृथ्वीनी नीचे वीसहजारजोजनघनोदधिनो पींडछे, तेनीनीचे घनवात, तनवातअनेआकाशनापींड अनुक्रमे नीचेनीचे एक बीजाथी असंख्यातअसंख्यातजोजनना पूर्वोक्तरीते रहेलांछे. अने तेनीनीचे पांचमीनरकपृथ्वी छे. हवे ते पंकप्रभा नरकपृथ्वी ते एक लाख वीस हजार जोजननी जाडी कही छे, तेमांथी उपर तथा नीचेथी एकेक हजार जोजन कहाडीए, त्यारे बाकीनी एक लाख अ-

हार हजार जोजन पृथ्वी रही, तेने विषे सात प्रतर छे. तेना नाम,–थार, तार, मार, वर्च, तम, खमखम अने खंमखम. ते दरेक प्रतर त्रण हजार जोजनना ऊंचा, असंख्यातहजारजोजनना लांबा पहोळा, अने सोलहजारएकसोठासठजोजनउपरांत एक गाउना ब ज्ञाग करीए एवा चारज्ञागनाअंतरेअंतरे एकत्रीजाथी नीचेनीचे छे, तेमां दशलाखनरकावासाछे. ते बेप्रकारनाछे. एक पुष्पावकीर्ण एटले, छुटांफूलनीपेठे ज्यांत्यां रहेलांछे, ते नव लाख नत्राणुंहजारवसेत्राणुं छे अने बीजा श्रेणीबंध सातसो नेसात छे. एमए बंने मळी १०००००० नरकावासा छे. तें सर्वनरकावासामां केटलाएकसंख्याता अने केटलाएक असंख्याताजोजननां लांबापहोळांछे. तेमांनारकीनांजीवोरहेछे.

पांचमी धुमप्रज्ञा नरकपृथ्वी–एकलाखअढार हजारजोजननीजाडी, असंख्याताहजारजोजननी लांबी पहोळी (विस्तारवाळी) अने विस्तारथी त्रणगणी झाझेरी परिधिएकरीनेसहीतझालरनांआकारेछे, परिधिनांफरतां वळीयाकारेसात जोजन एकगाऊउपरांत

एकगाउनात्रीजाभ्नाग सुधी घनोदधि, पांचजोजन अने बेगाउसुधी घनवात अने एकजोजनत्रणयगाऊउपरांत एकगाउना त्रीजाभ्नागसुधी तनवातछे. ने तपछी अलोकछे. ते नरकपृथ्वीनी नीचे वीशहजारजोजन घनोदधि नोपींमछे, तेनीनीचे घनवात, तनवात अने आकाशनांपींम अनुक्रमे नीचेनीचे एकबीजाथी असंख्यात असंख्यातजोजनना पूर्वोक्तरीतेरहेलांछे अने तेनीनीचे छठीनरकपृथ्वी छे.

हवे ते धुमप्रभ्ना नरकपृथ्वी जे एक लाख अढारहजारजोजननीजामीकहीछे. तेमांथी उपर तथा नीचेथी एकक हजार जोजन काढीए त्यारे बाकीनी एकलाखसोलहजारजोजन पृथ्वी रही तेने विषे पांच प्रतर (माल) छे, तेना नाम–आत, तमस ऊस, अंध, अने तिमिस. ते दरेक प्रतर त्रणय हजार जोजननां उंचा असंख्यात जोजननां लावापहोळां अने पचीसहजारबसेंपचासजोजननां अंतरे अंतरे एक बीजाथी नीचे नीचे छे. तेमां त्रणयलाख नरकावासाछे, ते बेप्रकारनांछे एकपुष्पावकीर्ण एटले छुटां

फुलनीपेठे ज्यांत्यांरहेलांठे. ते बे लाख नवाणुंहजार सातसोपांत्रीश अने बीजाश्रेणीबंध पसंपांसठठे एम बन्नेमळी ३००००० नरकावासा ठे ते सर्वनरकावासामां केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांवा पहोळां ठे. तेमां नारकीनां जीवो रहे ठे.

ठठी तमप्रजा नरकपृथ्वी—एक लाख सोळ हजार जोजननीजाडी, असंख्याताहजारजोजननी लांबी पहोळी अने विस्तारथी त्रणय गणी झाझेरी परिधिए करीने सहीत झालरना आकारे ठे. परिधिनां फरतां वळीयाकारे सात जोजन बे गाउ उपरांत एक गाउनां त्रणयज्ञागकरीएएवाबेज्ञागसुधी घनोदधि, पांच जोजनत्रणयगाउसुधी घनवात अने एकजोजनत्रणय गाउ उपरांत एकगाउनात्रण ज्ञागकरीएएवा बेज्ञाग सुधी तनवातठे. ने ते पठी अलोकठे. ते नरक पृथ्वीनी नीचे वीशहजार जोजन घनोदधिनोपींमठे, तेनी नीचे घनवात, तन वात, अने आकाशनां पींम अनुक्रमे निचे निचे एक बीजाथी असंख्यात असंख्यात जोजननां पूर्वोक्त रीते रहेलां ठे. ने तेनी नीचे सातमी नरक-

पृथ्वीछे.हवे ते तमप्रभा नरकपृथ्वी जे एकलाखसोळह-जार जोजननी जाडीकहीछे. तेमांथी उपर तथा निचेथी एकेक हजारकाढीए त्यारे बाकीनी एक लाख चौद हजार जोजन पृथ्वी रही तेने विषे त्रणप्रतरछे तेनां नाम–वाही, वादल, अने नलक, ते दरेक प्रतर त्रणय हजार जोजननां उंचा, असंख्यात जोजननां लांबा पहोळा अने बावन हजार पांचशो जोजननां अंतरे एकबीजाथी निचे निचे छे. तेमां नवाणुं हजार नवसो पंचाणुं नरकावासा छे ते वेप्रकारनांछे नवाणुं हजार नवसो बत्रीस पुष्पावकीर्ण अने त्रेसठ श्रेणी वंध एम बन्नेमळी ९९९९५ नरकावासा छे. ते सर्वे नरकावासामां केटलाक संख्याता अने केटलाक अ-संख्याताजोजनना लांबापहोळानरकावासा छे. ते सर्वमां नारकीनां जीवो रहे छे.

सातमी तमःतम प्रभा नरकपृथ्वीएक लाख आठ हजारजोजननीजाडी, असंख्यातांहजारजोजननीवि-स्तारवाळी अने विस्तारथी त्रण गणी झाझेरीपरिधिए करीनेसहीत झालरनेआकारेछे. परिधिनाफरतावळी

माकारेथ्याठजोजनसुधी घनोदधि, ठजोंजनसुधी घनपात अने वेजोजनसुधीतनवातछे. ने तेपछी अलोक आवेछे. ते नरकपृथ्वनी निचे वीशहजारजोजनघनोदधिनो पींमछे तेनी निचे घनवात, तनवात. अने आकाशनां पींम अनुक्रमे निचेनिचे एकवीजाथी असंख्यात असंख्यात जोजननां पूर्वोक्त रीते रहेलां छे. ने तेनीनिचे अलोकछे. हवेते तमःतमप्रभा नरकपृथ्वी जे एकलाखआठहजारजोजननीजामीकहीछे; तेमांथी साढीवावनहजारजोजनउपर मुकीए अने साढीवावनहजारजोजन नीचे मुकीए, तेनी वचमां एक प्रतर छे तेनुं नाम अपइठाणो. ते प्रतर त्रणहजारजोजनउंचो, असंख्यात जोजननो लांवो पहोळो छे अनेतेमां एकजप्रतरहोवाथीअंतर नथी. ते नरकपृथ्वीमां पांचनरकावासाछे तेश्रेणीवंधछे तेपांचनरकावासामां मध्यनोअपइठाणो नरकावासो एकलाखजोजननोलांवोपहोळोछे अने वाकीना चारे नरकावासा असंख्यातअसंख्यात जोजनना लांवापहोळाछे, तेमां नारकीनाजीवो रहे छे.

ऊपर कह्या प्रमाणे साते नारकीमां सीमंत प्रतरथी अपइठाणाप्रतरसुधीसर्वेमळीनेउंगणपचास प्रतरोछे. तेमां पहेला सीमंत नामना प्रतरने विषे सीमंत नामनोनरकावासो जेपीस्ताळीसलाख जोजननो छे, तेनेफरतां चारदिशाए उंगणपचास उंगणपचास तथा चारविदिशाए अडताळीसअडताळीसनरकावासाछे तेश्रेणीबंधछे. तेमांथी तेनी नीचेना बीजा प्रतर वगेरे सर्वे प्रतरोमां दिशा तथा विदिशाएथइने आठआठ नरकावासा उंगाउंग श्रेणीबंध छे. छेवटसर्वथीनीचला अपइठाणा नामनानरकावासानीचारदिशाए एकेको नरकावासोछे सर्व श्रेणीबंध नरकावासा नवहजार छसो त्रेपन अने पुष्पावकीर्णनरकवासा त्यासीलाखनेउंहजारत्रणयसोसुडताळीसछे. ते बन्ने मळीने चोरासीलाखनरकावासाथया. तेमां पहेलो सीमंतो तथा छेल्लो अपइठाणो मुकीने बाकीना सर्वे नरकावासा संख्याता असंख्याता जोजननां लांबा पहोळा उपर कह्यांप्रमाणेछे, तेनुं कांइक प्रमाण समजाववानेमाटे शास्त्रज्ञोकहेछेके. कोइदेवतात्रणवारचपटीवगाडतां

जेटलोवखतलागे तेटला वखतमां आजंबुद्वीपनेएक-वीसवारप्रदिक्षणादे, एवीशीघ्रगतिए साडाआठ आठ लाखजोजननुं पगलुं भरतो नरकावासामांचाले, तो पण कोइकनो एक मासे अने कोइकनो ठ मासे, संख्याता जोजनवाळानरकावासानोपारपामे. पण अ-संख्याता जोजनना नरकावासानो पारपामेनहि, एवा मोटा ते नरकावासाछे. संख्याता अने असंख्याता जोजनना नरकावासामां अनुक्रमे संख्याता अने असं-ख्याता नारकीउ रहे छे, श्रेणीबंधनरकावासावाटला, त्रिखूणां अने चोखूणां आकारेछे, अने पुप्पावकीर्ण विविध आकारनां छे. रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा अने वालु-काप्रभा मांहेनासर्वे, तथा पंकप्रभा मांहेना घणां, अने धुमप्रभामांहेनाथोडानरकावासानी भूमीका लाखचोळखेरनांअंगारार्थीपणअति उष्ण छे. अनेथोडा पंकप्रभामांहेना, घणां धुमप्रभा मांहेना अने तम-प्रभातथातमःतमप्रभामांहेना सर्वे नरकावासा, जा-मेलापाणी(बरफ)थी पण अति शीतळ भूमीवाळा छे, उष्ण भूमीमां रहेनां नारकीउने उष्णवेदना, अने

शीतभूमीमां रहेलां नारकीओने अति शीत वेदना छे. जेम पीत्तज्वर (ताव) वाळो माणस आच्छादन वीना उनाळाना दिवसमां मध्यान काळे चारेबाजुए अग्निनीवचमांरहेलोहोय अने त्यांतेनेजेटली उष्ण-वेदनाथाय, तेनाथी अनंतगुणी उष्णवेदना उष्ण-भूमीना नरकावासामां रहेलानारकीओनेहोय छे, अने अतिदुर्बळवृद्ध माणस कांइपणआछादनवीना शियाळानीरात्रे, उंचेथी वरफपडतोहोय, चारेबाजुथी शीतवायु वातोहोय, अने हीमाचळनाठंडाप्रदेशमां व-वरफ उपररहेलोहोयतो त्यां तेने जेटली शीतवेदना थाय, तेथी अनंतगुणी शीतवेदना शीतभूमीना न-रकावासामांरहेलां नारकीओने होयछे. नरकावासाना क्षेत्रोनो वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श अति भयंकर, बिहामणो अने अति दुःखदायी छे.



यंत्र.

सात नारकीना नाम.	पृथ्वी पींड	प्रतर,	पुष्पावकीर्ण	श्रेणीबंध	सर्व नरका वासा.
रत्न प्रज्ञा.	१,८००००	१३	२९,९५,५६७	४,४३३	३०,०००००
शर्करा प्रज्ञा.	१,३२०००	११	२४,९७,३०५	२,६९५	२५,०००००
वालुका प्रज्ञा.	१,२८०००	९	१४,९८,५१५	१,४८५	१५,०००००
पंक प्रज्ञा	१,२००००	७	९,९९,२९३	७०७	१०,०००००
धुम प्रज्ञा.	१,१८०००	५	२,९९,७३५	२६५	३,०००००
तम प्रज्ञा.	१,१६०००	३	९९,९३२	६३	९९,९९५
तमःतम प्रज्ञा.	१,०८०००	१	०	५	५

दस भुवनपति निकायना भुवनो रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख एंशी हजार जोजननो जाडो छे. तेमांथी एक हजार जोजन उपर अने एक हजार जोजन नीचे मुकीए बाकी एक लाख अठयोतेर हजार जोजन पींड रह्यो ते मांहे यथायोग्यपणे दस जातिना भुवनपति निकायना देवोना भुवनोछे. मेरुपर्वतना जे आठ रुचक प्रदेश छे, त्यांथी अर्धो अर्ध बे खंड करीए, एक दक्षिण दिशिनुं अर्ध अने बीजुं उत्तर दिशिनुं अर्ध, एवा बे भागे भुवनपतिना भुवनोनी श्रेणीओ छे, तेमां दक्षिण दिशानी श्रेणीमां असुरकुमार निकायना चोत्रीस लाख भुवन छे. नागकुमार निकायना चुंवालीसलाख, सुवर्णकुमार निकायना आडत्रीस लाख, विद्युतकुमारनिकायनां चालीसलाख, अग्निकुमार निकायनां चालीस लाख, द्वीपकुमार निकायनां चालीस लाख, उदधिकुमार निकायनां चालीस लाख, दिशिकुमार निकायनां चालीसलाख, पवनकुमारनिकायनां पचासलाख, अने स्तनितकुमार निकायनां चालीसलाख भुवनो छे, ए सर्व मळी

दक्षिण दिशानी श्रेणीए चार क्रोड अने ठ लाख भुवन छे, तथा उत्तर दिशिनी श्रेणीमां असुरकुमार निकायनांत्रीस लाख भुवन छे, बीजानां चालीस लाख, त्रीजानां चोत्रीसलाख, चोथानां छत्रीस लाख, पांचमानां छत्रीस लाख, छठानां छत्रीस लाख; सातमांनां छत्रीस लाख, आठमानां छत्रीसलाख, नवमानां छेताळीस लाख; अने दशमानां छत्रीस लाख भुवनो छे,ए सर्वे मळी उत्तर दिशानी श्रेणीए त्रण क्रोड छासठ लाख भुवन छे,ए बंनेश्रेणीना मळीने कुल सातक्रोड बहो तेरलाख भुवनपतिना भुवनो छे ए भुवनो नानामां नाना जंबुद्वीप जेवडा मोटा छे, मध्यम संख्याता जोजनना अने मोटामां मोटा असंख्यात जोजन लांबा पहोळा, बहारथी वाटला, अंदरथी चोखुणा अने नीची तळीए कमळनीकर्णीकानाआकारे, घणांसुंदर, सानूकुळ, वर्ण, गंध, रस, अने स्पर्शे करीने सहीत छे. ते दरेकमां मनोहर जीनभुवन छे. एकेका जीन भुवनमां एकसोने एंसी एंसी शाश्वती जीनप्रतिमाओ छे.संख्याता जोजनवाळा भुवनमां संख्याता, अने असं-

ख्याता जोजनवाळा भुवनमां असंख्याता देवो रहे छे.

व्यंतरना भुवनो—रत्नप्रभा पृथ्वी उपर मुकेलो जे एक हजार जोजननो जाडो पृथ्वी पींड. तेमांथी एक सो जोजन उपर अने एक सो जोजन नीचे मुकीने वचलो आठसे जोजननो जाडो, असंख्यात जोजननोलांबो पहोळो पृथ्वीपींडछे.तेमांआठजातिनां व्यंतर देवोना उत्तर तथा दक्षिण श्रेणीए असंख्याता भुवनो छे, ते नानामां नाना भरतक्षेत्र जेवडां, मध्यम महाविदेहक्षेत्रजेवडां अने मोटामां मोटा जंबुद्वीप जेवडा लाख जोजननां छे, ते सर्वे भुवननी बहारथी वाटला, अंदरथी चोखुणां,अने भूमी तळीए कमलनी कर्णीकाने आकारे, अति सुंदर, मनोहर, सानुकुल, वर्ण, गंध, रस, अने स्पर्शेकरीनेयुक्तछे तेमां व्यंतरनां देवो रहे छे. वली रत्नप्रभा पृथ्वीमां उपर मुकेलो जे एकसोजोजननो जाडो पृथ्वी पींड तेमांथी दश जोजन उपर अने दश जोजन नीचे मुकीने वचलो एंसी जोजननो जाडो, असंख्यात जोजननो लांबो पहोलो पृथ्वी पींड छे. तेमां आठ

जातिनां वाणव्यंतर देवना उत्तर तथा दक्षिण श्रेणीए असंख्याता भुवनो छे, ते नानामां नाना भरतक्षेत्र जेवडा, मध्यम महाविदेह जेवडा अने मोटामां मोटा जंबुद्वीप जेवडां लाख जोजननां छे. उपर कह्यां प्रमाणे व्यंतरना तथा वाणव्यंतरना असंख्याता भुवनो छे, तेमां सर्वे मळीने असंख्याता जीन भुवनो छे.

अनंतानंतआकाशप्रदेशनांमध्यभागमां, कटीए (केडये) हाथराखीपगपसारीउभेलापुरुषनांआकारे अकृत्रिम, निश्चळ, अने पंचास्तिकायनां समुदाययुक्त चौदराज प्रमाण लोकछे. ए चौदराजलोकना मध्यमां एकराज लांबो पहोळो अने मेरुसमीपे समभुतलापृथ्वीथी नवसें जोजन नीचो ने नवसेंजोजनउंचो तिर्छालोकछे, ते तिर्छालोकमां पचीसकोडाकोडी उद्धारपल्योपमनां जेटलांसमयथाय तेटलां द्वीप अने समुद्रो छे. अर्थात्असंख्याताद्वीपने असंख्यातासमुद्रो छे. ते सर्वनी अभ्यंतरमां लाखजोजननो लांबो पहोळोअने थाळीनाआकारे गोळ

आ प्रथम जंबुद्वीप छे; तेनां फरतो चुडीनांआकारे बे लाख जोजनना विस्तारे लवण समुद्र छे अने ते पछी धातकीखंड, काळोदधि समुद्र, पुष्करवरद्वीपने पुष्करवरसमुद्रविगेरे एक बीजाथी बमणां बमणां विस्तारे चुडीनाआकारे अने प्रशस्तवस्तुनां नामे असंख्याताद्वीपने असंख्यातासमुद्रो छे. सर्वथी छेल्लो स्वयंभुरमण नामेसमुद्र छे ते अर्धा राजलोक प्रमाण विस्तारे छे.

जंबुद्वीपमां बे चंद्र ने बे सूर्य, लवण समुद्रमां चार चंद्र ने चारसूर्य, धातकीखंडमां बारचंद्र ने बार सूर्य, काळो दधि समुद्रमां बहेताळीस चंद्र ने बहेताळीस सूर्य अने पुष्करार्धमां बहोंतेर चंद्र ने बहोंतेर सूर्य छे. ए बधां मळी एकसो बत्रीसचंद्र ने एकसोबत्रीससूर्य तथा ग्रहादिक ज्योतिषीउंनां विमानो आ मनुष्य क्षेत्रमां छे, ते सर्वे चर छे. मनुष्य क्षेत्रनी बहार असंख्याता द्वीप तथा समुद्रोमां असंख्याता ज्योतिषीनां विमानो छे, ते सर्वे स्थिर छे. दरेक चंद्रने अठयासी ग्रह अठयावीस नक्षत्र अने

ग्ग्सठ हजार नवसें पंचोतेर कोमाकोमी तारानो परिवार ठे.

संजूतला पृथ्वीथी सातसें नेउं जोजने तारानां विमान ठे, आठसें जोजने सूर्यनुं विमान ठे, आठसें एंसी जोजने चंद्रमानुं विमान ठे, आठसेंचोरासी जोजने नक्षत्रनां विमानठे, आठसेंअठयासी जोजने बुधनुं विमान ठे, आठसेंएकाणुं जोजने शुक्रनुं विमान ठे, आठसेंचोराणुं जोजने बृहस्पतिनुं विमानठे, आठसेंसत्ताणुं जोजने मंगळनुं विमान ठे अने नवसें जोजने सर्वथी उपर शनिनुं विमान ठे. एम समजुतला पृथ्वीथी सातसें नेउं जोजन उपरांत एकसो दश जोजनमां ज्योतिष चक्र ठे. ते विमानो मेरुपर्वतथी अगीयारसें एकवीस जोजन चारे तरफ दुर ठे अने अगीयारसें अगीयार जोजन अलोकथी मांहेलीकोरे ठे. एटले अलोकनी अबाधाए ज्योतिष चक्र ठे.

मनुष्यक्षेत्र मांहेनां चंद्रमानां विमान एक जोजनना एकसठभाग करीए एवका ठप्पन्न भागनां

लांबा पहोळा ने अठयावीसज्ञागनां उंचा छे. सूर्यनां विमान एकसठीआ अरुतालीस ज्ञागनां लांबा पहोळां ने चोवीस ज्ञागनां उंचा छे, ग्रहनां बे गाउनां लांबा पहोळां ने एक गाउनां उंचा छे, नक्षत्रनां एक गाउनां लांबा पहोळां ने अर्ध गाउनां उंचा छे, अने ताराउनां पांचशेधनुष्यथी एक हजारधनुष्य सुधीनां लांबा पहोळांने अढीसेंथी पांचसें धनुष्य सुधीनां उंचा छे. मनुष्य क्षेत्रनी बहारनां ज्योतिषीनां विमानोनुं प्रमाण मनुष्य क्षेत्रना विमानोथी अर्धुं अर्धुं छे एटले मनुष्य क्षेत्रमां रहेलां चंडनुं विमान एकसठीयां छप्पन्न ज्ञागनुं छे; तो मनुष्य क्षेत्रनी बहारना चंडना विमान एकसठीया अठयावीस ज्ञागनां छे. एम पांचे ज्योतिषीउनां विमानोनी लंबाइ, पहोळाइ अने उंचाइनुं प्रमाण अर्धुं अर्धुं छे. चंड तथा सूर्यनां विमानवाहक देवो सोळ सोळ हजार छे, ग्रहनां विमानवाहक देवो आठहजार छे, नक्षत्रनां विमान वाहक देवो चारहजार अने ताराना विमानवाहक देवो बबे हजार छे. चंड, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र अने

तारानी चालवानी गति अनुक्रमे एक बीजाथी शीघ्र शीघ्रतर छे, ज्योतिषीउनां विमाननुं मांहोमांहे अंतर, व्याघाते उत्कृष्ट बारहजार बसें बहेंताळीस जोजननुं अने जघन्य बसेंनेगासठ जोजननुं छे, निर्व्याघाते (व्याघात न होय त्यारे) उत्कृष्ट बे गाउनुं अने जघन्यथी पांचसें धनुष्य एक ताराथी बीजा तारानी वच्चे अंतर छे. सूर्य उंचो सो जोजन तपे छे नीचो अढारसें जोजन तपे छे ने तिर्च्छो सुडताळीस हजार बसेंत्रेसठ जोजन अने साठीया एकवीस भाग तपे छे. एटले उपर कह्या प्रमाणे सूर्यनुं ताप क्षेत्र छे.

लवण समुद्रे ज्योतिषीना विमानो छे ते उदक स्फाटिक रत्ननां अने बीजा सर्व ज्योतिषीना विमानो स्फाटिक रत्ननां छे, ते सर्व विमानो अर्ध कवीठ (कोठफळ) कारे, मनोहर जीनभुवने सहीत, देदीप्यमान प्रकाशवाळा अने अति सुंदर ज्योतिषीउनां विमानोछे तेमां असंख्याता ज्योतिषी देवो छे.

वैमानिक देवोनां विमानोः—ज्योतिषीनां विमानोथी असंख्यात कोडाकोडी जोजने अथवा आ-

ठमा राजलोकनां ठेके, घनोदधिना आधारे, पहेलो सौधर्मदेवलोक दक्षिण दिशाए अने वीजो इशानदेवलोक उत्तर दिशाए छे ते बन्ने देवलोकनां नेगा मळी वळीयाकारे तेर प्रतर छे. तेरे प्रतरनी वच्चे अर्धोअर्ध बेखंडकरीए; एक दक्षिण दिशिखंड अने वीजो उत्तर दिशिखंड, दक्षिण दिशि खंडनो अधिपति सौधर्मेंद्र अने उत्तरदिशिखंडनो अधिपति इशानेंद्र छे. सौधर्मेंद्रना बत्रीसलाख विमान छे, तेमां चारसें चोराणुं त्रिखूणां, चारसें छयासी चोखूणा, सातशेंसत्तावीस वाटलां अने एकत्रीस लाख अठाणुं हजारबसें त्राणुं विविध आकारनापुष्पावकीर्ण विमानो छे, तथा इशानेंद्रना अठ्यावीसलाख विमान छे, तेमां चारसें चोराणुं त्रिखूणां, चारसेंछयासीचोखूणां. बसें अडत्रीस वाटलां अने सत्तावीस लाख अठाणुंहजार सातसें व्यासी विविध आकारनां पुष्पावकीर्ण विमानो छे; ते बंन्ने देवलोकना सर्व विमानना नोंय तळीयानो पृथ्वीपींड बे हजार सातसें जोजननो जाडो छे ने ते विमानो पांचशें जोजननां उंचा छे; केटला एक सं-

ख्याता जोजननांने केटलाएक असंख्याता जोजन नां लांबा पहोळां ठे अने काळा, नीला, राता, पीळाने धोळा एम पंचवर्णनां ठे, ते विमानोनी ऊपर असंख्यात जोजने अथवा नवमा राजलोकनां ठेके, घनवातना आधारे त्रीजो सनत्कुमार देवलोक दक्षिण दिशाए अने चोथो माहेंद्र देवलोक उत्तर दिशाए ठे. ते बन्ने देवलोकनां जेगा मळी वळीयाकारे बार प्रतर ठे तेमां पण पूर्वोक्त रीते दक्षिण दिशिखंडनो अधिपति सनत्कुमारेंद्र अने उत्तर दिशिखंडनो अधिपति माहेंद्र ठे. सनत्कुमारेंद्रना बारलाख विमान ठे तेमां त्रणसें उप्पन्न त्रिखूणां, त्रणसेंअडताळीस चोखूणां, पांचसें बावीश वाटलां अने अगियारलाख अठ्ठाणुंहजार सातसेंचुम्मोतेर विविध आकारनां पुप्पावकीर्ण विमान ठे तथा माहेंद्रना आठलाख विमान ठे, तेमां त्रणसेंठप्पन्न त्रिखूणां, त्रणसो अडताळीस चोखूणां एकसो सीत्तेर वाटलां अने सातलाख नव्वाणुं हजार एकसो ठवीस विविध आकारनां पुप्पावकीर्ण विमान ठे. ते बन्ने देवलोकना विमानना

त्रोंयतळीयानो पृथ्वीपींड बे हजारछसेंजोजन जाडो छे, ते विमानो छशें जोजन उंचा, केटलाएक संख्याता जोजननां ने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोळां अने काळा वर्ण सिवाय चार वर्णनां छे. त्रीजा, चोथा देवलोक उपर असंख्याता जोजने अथवा दशमा राजलोकमां घनवातना आधारे पांचमो ब्रह्म देवलोक छे. ते देवलोकमां छ प्रतर ने चारलाख विमानो छे तेमां बशें चोरासी त्रिखूणां, बशेंछोंतेर चोखूणां, बशें चुम्मोतेर वाटलां अने त्रणलाख नवाणुं हजार एकसो छासठ विविध आकारनां पुष्पावकीर्ण विमान छे. ते विमाननां त्रोंयतळीयानो पृथ्वीपींड बे जहार पांचसें जोजन जाडोछे, ते विमानो सातसें जोजनना उंचा, केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोला अने कालाने नीलावर्ण सिवाय त्रणवर्णनां छे. पांचमा देवलोकनां उपर असंख्याता जोजने अथवा दशमा राजलोकनां छेडे घनोदधिने घनवातना आधारे छठ्ठोलांतक देवलोक छे. ते देवलोकमां पांच प्रतरने पचाशहजार

विमानो छे तेमां वर्शे त्रिखूणां,एकसो बाणुं.चोखूणा, एकसो त्राणुं वाटला अने ओगणपचाशहजार चारसें पन्नर विविध आकारनां पुष्पावकीर्ण विमान छे. ते विमाननां त्रोंयतळीयानो पृथ्वीपींड बे हजार पांचसे जोजन जाडो छे, ते विमानो सातसें जोजननां उंचा; केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोळां अने कालाने नीला वर्णसिवाय त्रणवर्णनांछे. छठा देवलोकनां उपर असंख्याता जोजने अथवा अगियारमां राजलोकमां घनोदधि अने घनवातनां आधारे सातमो शुक्र देवलोकछे ते देवलोकमां चार प्रतरने चालीशहजार विमानो छे,तेमां एकसो छत्रीस तिखूणां, एकसोछत्रीस चोखूणां,एकसो अठावीस वाटलां अने ओगणचाळीश हजार छसेंनेचार विविध आकारनं पुष्पावकीर्ण विमानो ते विमाननां त्रोंयतळीयाना पृथ्वीपींड बेहजार चारसें जोजन जाडो छे. ते विमानो आठसें जोजननां उंचा केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोळा अने काळा. नीलाने राता वर्ण सिवाय बे

वर्णना छे, सातमादेवलोकनांउपर असंख्याताजोजने अथवा अगियारमां राजलोकनां छेडे घनोदधि अने घनवातना आधारे आठमो सहस्रार देवलोक छे. ते देवलोकमां चार प्रतरने छहजार विमानोछे, तेमां एकसोसोळ त्रिखूणां, एकसोआठ चोखूणां, एकसो-आठ वाटलां अने पांचहजार छसेंअडसठ विविध आकारनां पुष्पावकीर्ण विमानछे. ते विमाननां नींच-तळीयानो पृथ्वीपींड बेहजार चारसेंजोजन जाडोछे, ते विमानो आठसेंजोजननां ऊंचा केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोळां अने काळा, नीलाने रातावर्ण सिवाय बे वर्णनां छे. आठमा देवलोकनां उपर असंख्याता जोजने अथवा बारमा राजलोकमां आकाशनां आधारे नवमो आ-णत अने दशमो प्राणत ए बे देवलोक जोडाजोडछे अने ते बन्ने देवलोकनोएकइंद्र छे. ते बन्ने देव-लोकमां थइने चार प्रतरने चारसें विमानोछे. तेमां बाणुं त्रिखूणां, अठयासी चोखुणां, अठयासी वाटलां अने एकसोबत्रीसविविधआकारनां पुष्पावकीर्ण-

विमानछे. ते विमाननां भोंयतळीयानो पृथ्वीपींम बे हजार त्रणसें जोजन जाम्होछे; ते विमानो नवसें जोजन उंचा, केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोळां अने एक धोळा वर्णनांज छे. नवमा अने दशमा देवलोकनां उपर असंख्याता जोजने अथवा वारमा राजलोकनां छेम्हे आकाशनां आधारे अगियारमो आरण अने वारमो अच्युत देवलोक जोमाजोम छे ते बन्ने देवलोकनो एक इंद्र छे. ते बन्ने देवलोकमां थइने चार प्रतरने त्रणसें विमानो छे, तेमां वहोंतेर त्रिखूणां, अम्सठ चोखूणां, चोसठ वाटलां अने छन्नु विविध आकार नां पुष्पावकीर्ण विमान छे. ते विमानना भोंयतळीयानो पृथ्वीपींम बे हजारत्रणसें जोजन जाम्हो छे, ते विमानो नवसें जोनजनां उंचा, केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोळां अने एक धोळा वर्णनांज छे. अगियारमा अने बारमा देवलोकनां उपर असंख्यात जोजने अथवा तेरमा राजलोकमां आकाशनां आधारे नवग्रैवेयक छे

ते दरेकनो अकेको प्रतर होवाथी नवग्रैवेयकना नव प्रतरो छे. ते नव प्रतरोमां प्रथम नीचेनी त्रीके त्रण प्रतरे एकसो अगियार विमान छे, तेमां चालीश त्रिखुणां, छत्रीस चोखुणां अने पांत्रीस वाटलां विमान छे. ए हेठलो त्रीकमां पुष्पावकीर्ण विमान नथी.तेना उपर असंख्यात जोजने बीजी मध्यनी त्रीके एकसो ने सात विमान छे तेमां अठावीस त्रिखुणां, चोवीस चोखुणां, तेवीस वाटला अने बत्रीस पुष्पावकीर्ण बिमान छे तेना उपर असंख्यात जोजने अथवा तेरमाराजलोकने छेडे उपरनुं त्रीजुं त्रीक छे. तेनां एकसो विमान छे तेमां सोळ त्रिखूणां, बार चोखुणां, अगियार वाटलां अने एकसठ पुष्पावकीर्ण विमान छे,एम नवग्रैवेयकनां सर्वे मळी त्रणसें अढार विमान छे. तेनां भोंयतळीयानो पृथ्वीपींड बे हजार बसें जोजन जाडोछे ते विमानो एक हजार जोजननां उंचा, केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोळा अने एक धोळा वर्णनांजछे. नवग्रैवेयकनी उपर असंख्यात जोजने अथवा चौदमा

राजलोकनां ठेके आकाशनां आधारे पांचअनुत्तरवि-
मान ठे तेनोएक प्रतरने पांच विमान ठे. तेमां वचलुं
सर्वार्थसिद्ध विमान लाख जोजननुं लांबु पहोळुं अने
वाटलुं ठे ते सर्वार्थ सिद्ध विमाननी चारे दिशाए
अनुक्रमे विजय, विजयंत, जयंतने अपराजीत एम
चार विमान ठे. ते त्रिखुणां ठे. ते विमाननां भोंय-
तळीयानो पृथ्वीपींड बे हजारने एकसो जोजन जाडो
ठे. ते विमानो एक हजार ने एकसो जोजन उंचा,
असंख्यात जोजननां लांबा पहोळां अने एक धोळा
वर्णनांज ठे. ते पांच अनुत्तर विमाननी उपर बार
जोजने, पीस्तालीस लाख जोजननी लांबी पहोळी,
ठत्राकारे, मध्यभागे आठ जोजननी जाडी, ठेडे मा-
खीनी पांख जेवी पातळी, एकक्रोड बहेतालीस लाख
त्रीसहजार बसें उंगणपचास जोजन झाझेरी परिधि
अने पाणीनाकणीया, मचकुंदनुंफुल, रुपानोपाटो ने मो-
तीना हारथी पण अधिकउजळी एवी सिद्धशिलाठे.
ते सिद्धशिलानी उपर एक जोजनने ठेडे लोकनो अंत
ठे तीहां एक गाउनो ठठोभाग एटले त्रणसें तेत्रीस धनु-

ष्यनी उपर बत्रीस आंगळमां सर्व सिद्धना अनंताजीवो रह्यां छे.

बार देवलोक, नवग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर विमानना सर्वेमळीने चोरासीलाख सत्ताणुं हजारने त्रेवीस विमानो छे. ते विमानो अत्यंत सुगंधीमय, माखणना जेवो मृदुस्पर्श, नित्यउद्योतवंत, मनोहर, अने जीनभुवनोए सहीत छे, तथा शब्द, रुप, गंध, रस, स्पर्श, ऋद्धि, गति, लावण्य, कान्ति, स्थिति, ए दशबाना मनोज्ञ छे जेमां एवा अति सुंदर विमानो ने विषे असंख्यात देवो रहे छे.

पृथ्वीकायादि एकेंद्रियनां—पांच दंडकवे इंद्रियादि विगलेंद्रियनां त्रण दंडक तिर्यंच पचेंद्रियनो एक दंडक अने मनुष्यनो एक दंडक एम दश दंडके भुवनो अनिश्चल अनित्य अने अनियमीत छे.

भुवनपति निकायमां सातक्रोडने बहोंतेर लाख जीनभुवन छे, वैमानिकमां चोरासीलाख सत्ताणुं हजारने त्रेवीस जीन भुवन छे अने तिर्छालोकमां त्रण हजार बसें ओगणसाठ जीनभुवन छे. एम सर्वे मळी

आठकोम सत्तावनलाख वर्से ने व्यासी तथा व्यंतर निकाय अने ज्योतिषीमां असंख्याता जीनत्रुवनोछे. ते सर्वेशास्वता छे.

त्रुवनपति निकायनां दरेकजीनत्रुवनमां एकसो एंसी एंसी जीनप्रतिमाजी छे. नवग्रैवेयकना त्रणसें अढार अने पांच अनुत्तरनां पांच मळीने त्रणसें त्रे· वीस जीनत्रुवनोमां एकसोवीस वीस जीनप्रतिमाजी अने बीजा सर्व वैमानिकनां जीनत्रुवनोमां एकसो एंसी एंसी जीनप्रतिमाजी छे. तिर्छा लोकनां साठ जीनत्रुवनोमां एकसो चोवीस चोवीस अने बाकीना त्रण हजार एकसो नवाणुं जीनत्रुवनमां एकसोवीस वीस प्रतिमाजी छे. एम गणतां सर्वमळी पंदरअबज बेतालीस करोड अठावन लाख छत्रीस हजारने एंसी जीनप्रतिमाजी छे; तथा व्यंतर निकायमां अने ज्यो- तिषीमां असंख्यात जीनप्रतिमाजी छे.सर्व जीनप्रति· माजी ऋषभ, चंद्रानन, वारिखेण ने वर्द्धमान ए चार नामनी अने सदा शास्वती छे. ॥ इति त्रुवनद्वार ॥

कार्मण—कर्मनोविकार, कर्ममय, कर्मस्वरूप, सर्व शरीरोनुं बीज एवुं, खीरनीरनीपेठे जीव प्रदेशनीसाथे जे कर्मदळमळीरह्यांछे ते कार्मण शरीर कहेवाय छे.

औदारिकनी अपेक्षाए वैक्रियनां प्रदेश असंख्यातगुणा, वैक्रियनी अपेक्षाए आहारकनां प्रदेश असंख्यातगुणा, आहारकनी अपेक्षाए तैजसनां प्रदेश अनंतगुणा अने तैजसनी अपेक्षाए कार्मण शरीरनांप्रदेश अनंतगुणा छे, औदारिकथी वैक्रियनी अवगाहनां सूक्ष्म, वैक्रियथी आहारकनी अवगाहनां सूक्ष्म अने आहारकथी तैजसने तैजसथी पण कार्मणनी अवगाहनां सूक्ष्म छे. तैजस अने कार्मण शरीर अप्रतिघाति एटले कोइथी रोकाय नहि अथवा कोइनेरोकेनहिएवा, जीवने अनादिसंबंधवाळा छे.

नारकीनो एक दंडक, भुवनपतिना दशदंडक, ज्योतिषीनो एक दंडक, व्यंतरनो एक दंडक अने वैमानिकनो एक दंडक, ए चौद दंडके वैक्रिय, तैजस

अने कार्मण, एम त्रण शरीर होय छे. बे इंद्रिय, ते इंद्रिय, चौरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय अने वनस्पतिकाय, ए सात दंमके, तथा समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय अने समुर्छिम मनुष्यने औदारिक तैजस ने कार्मण एम त्रण शरीर होय छे, वायुकाय अने गर्न्नज तिर्यंच पंचेंद्रियना दंमके औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, एम चार शरीर होय अने गर्न्नज मनुष्यना दंमके पांचे शरीर होय छे.

॥ इति शरीरद्वार ॥

अथ अवगाहना द्वार.

अवगाहना–शरीरनुं प्रमाण–जघन्य तथा उत्कृष्ट चोवीश दंमके कहे छे.

प्रथम नारकीना दंमके सामान्यपणे अवगाहना जघन्य अंगुलनां असंख्यातमां न्राग जेटली अने उत्कृष्ट पांचशें धनुष्यनी छे, जुदी जुदी नारकीनी अपेक्षाए पहेली नारकीनी पोणाआठ धनुष्य छ अंगुल, बीजी नारकीनी साडापंन्नर धनुष्य बार अंगुल त्रीजी नारकीनी सवाएकत्रिस धनुष्य, चोथी नारकीनी

साडीबासठ धनुष्य, पांचमी नारकीनी सवासो धनुष्य, छठी नारकीनी अढीसें धनुष्य अने सातमी नारकीनी पांचसें धनुष्यनी वधारेमां वधारे अवगाहनां छे.

प्रथम नारकीमां पहेलां प्रतरे नारकीना जीवोनुं उत्कृष्ट देहमान त्रण हाथनुं कह्युं छे, अने बीजा प्रतरे पांच हाथ साडाआठ अंगुळनुं, त्रीजा प्रतरे सातहाथ सत्तर अंगुळनुं देहमान छे; एम दरेक प्रतरे प्रतरे बे हाथ साडाआठआठअंगुळ वधारतां छेल्ला तेरमा प्रतरमां नारकीना जीवोनुं उत्कृष्ट देहमान पोणाआठ धनुष्य ने छ अंगुळनुं जाणवुं. बीजी नारकीमां पहेले प्रतरे नारकीना जीवोनुं उत्कृष्ट देहमान पोणाआठ धनुष्य ने छ अंगुलनुं कह्युं छे, अने बीजा प्रतरे साडाआठ धनुष्य ने नव अंगुलनुं, त्रीजा प्रतरे सवानव धनुषष्यने बार अंगुलनुं, एम दरेक प्रतरे त्रण हाथने त्रण अंगुल वधारता छेल्लां अगियारमां प्रतरमां नारकीना जीवोनुं उत्कृष्ट देहमान साडापन्नर धनुष्यने बार अंगुलनुं जाणवुं. त्रीजी नारकीमां

पहेला प्रतरे साडापन्नर धनुष्यने वार अंगुलनुं, बीजा प्रतरे साडासत्तर धनुष्य साडासात अंगुलनुं एम दरेक प्रतरे सातहाथने साडीओगणीस अंगुलनी वृद्धि करता करता छेल्ला नवमां प्रतरे सवाएकत्रीस धनुः ष्यनुं उत्कृष्ट देहमान जाणवुं. चोथी नारकीमां पहेले प्रतरे सवाएकत्रीस धनुष्यनुं देहमान कह्युं छे अने बीजा प्रतरादि दरेक प्रतरे पांच धनुष्यने वीस अं- गुळनी वृद्धि करता करता छेल्ला सातमा प्रतरे साडी बासठ धनुष्यनुं उत्कृष्ट देहमान जाणवुं. पांचमी नारकीमां पहेले प्रतरे साडीबासठ धनुष्यनुं अने बीजा प्रतरादि दरेक प्रतरे पन्नरधनुष्यने अर्धहाथनी वृद्धि करता करता छेल्ला पांचमा प्रतरे एकसो पच्चीस धनुष्यनुं उत्कृष्ट देहमान जाणवुं. छठी नारकीमां पहेले प्रतरे एकसोपच्चीस धनुष्यनुं अने बीजा प्रत- रादि दरेक प्रतरे साडीबासठ धनुष्यनी वृद्धि करता करता छेल्ला त्रीजा प्रतरमां नारकीना जीवोनुं उत्कृष्ट देहमान बसेंपच्चास धनुष्यनुं जाणवुं. सातमी नार- कीमां एक प्रतर छे तेमांना नारकीनां जीवोनुं उत्कृष्ट

देहमान पांचसें धनुष्यनुं जाणवुं; ए प्रमाणे साते नारकीमां दरेक प्रतरोना नारकीनुं भव प्रत्ययिक शरीर मान कह्युं; अने ते नारकीना जीवो उत्तरवैक्रिय शरीर करे तो जघन्यथी अंगुलना संख्यातमां भाग जेटलुं अने उत्कृष्टथी पोताना भव प्रत्ययिक शरीरथी बमणुं करी शके छे.

भुवनपतिना दशदंडक, व्यंतरनो एक दंडक अने ज्योतिषीनो एक दंडक एम बार दंडके देवदेवीनुं भव प्रत्ययिक शरीर एटले स्वाभाविक शरीर जघन्य अंगुळना असंख्यातमां भाग जेटलुंने उत्कृष्ट सात हाथनुं होय छे. अने ते देवो उत्तरवैक्रिय शरीर करे तो जघन्य अंगुलना संख्यातमां भाग जेटलुंने उत्कृष्ट लाखजोजनपर्यंत करी शके छे, जघन्य शरीर उत्पत्ती समयेज होय छे.

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय वाउकाय अने साधारण वनस्पतिकायना जीवोनुं शरीर जघन्य अने उत्कृष्टथी अंगुळना असंख्यातमा भाग जेटलुं होय छे. प्रत्येक वनस्पतिकायनुं शरीर जघन्यथी अंगुळना असंख्या-

तमा जाग जेटलुंने उत्कृष्टथी हजार जोजनथी जा-
झेरुं जाणवुं.

सूक्ष्म ने साधारण नाम कर्मना उदए करीने अनंता जीवोए ग्रहण करेलुं एक शरीर ते सूक्ष्म निगोद (सूक्ष्म साधारण वनस्पतिकाय)नुं शरीर कहेवाय ए शरीर, सर्वजीवोना शरीरथी अतिसूक्ष्म अंगुलना असंख्यातमा जाग जेटलुं छे. सूक्ष्म निगोदियाना शरीरथी असंख्यात गणुं मोटुं सूक्ष्म वाउकायनु शरीर जाणवुं. एटले असंख्याता सूक्ष्मनिगोदना शरीरे एक सूक्ष्म वाउकायनुं शरीर होय छे. सूक्ष्म वायुकायना शरीरथी असंख्यात गणुं मोटुं सूक्ष्म तेउकायनुं, तेथी असंख्यातगणु मोटुं सूक्ष्म अपकायनुं अने तेथी असंख्यातगणुं मोटुं सूक्ष्म पृथ्वीकायनुं शरीर कह्युं छे. हवे सूक्ष्म पृथ्वीकायना एक शरीरथी असंख्यात गणुं मोटुं एक बादर वाउकायनुं. तेथी असंख्यातगणुं मोटुं एक बादर अग्नीकायनुं, तेथी असंख्यातगणुं मोटुं एक बादर अपकायनुं तेथी असंख्यातगणुं मोटुं एक बादर पृथ्वी-

कायनुं अने तेथी पण असंख्यातगणुं मोटुं एक बादर निगोद (साधारण वनस्पति काय)नुं शरीर कह्युं छे. ए प्रमाणे पांच सूक्ष्मने पांच बादर ए दशेना शरीर मांहोमांहे एक बीजाथी अनुक्रमे असंख्यात गुणा मोटा मोटा कह्या छे, परंतु दशेना शरीरोमांहेनुं मोटामां मोटुं शरीर पण अंगुलना असंख्यातमां भाग जेटलुंज जाणवुं कारण के अंगुलना असंख्यातमां भागना पण असंख्यात भेद कह्या छे.

पृथ्वीकायादिक पांचे सूक्ष्म एकेंद्रिय जीवोना शरीर एवां सूक्ष्मछेके, एक शरीरतो देखायज नहि पण असंख्याता के अनंता सूक्ष्म जीवोना शरीरोनो पींड एकठो होय तो पण ते देखाता नथी अने प्रत्येक वनस्पति काय सिवाय पृथ्वीकायादि पांचे बादर एकेंद्रिय जीवोना शरीर पण एवा झीणा छे के ते असंख्याता जीवोना शरीरनां पींड एकठां होयतोज देखाय छे तेने माटे शास्त्रज्ञो कहेछे के एक पत्थर के मीठाना ककडाने कोइ अतिबळवान पुरुष घणी वखत वाटी वाटीने झीणो भुको करे तोपण तेमां

रहेलां केटलाएक जीवशरीरोने कीलामणा थाय अने केटलाएक जीवशरीरने कीलामणा पण न थाय, केटलाएक मरे ने केटलाएक मरे पण नहि अने केटलाएकने तो मालम पण पमे नहि. जेमके—बार जोजननी लांबीने नव जोजननी पहोळी नगरीने विषे घणा लोको वसे छे, तेमां कोइना घेर चोर धाम पामे, लुंटे के मारे, तेनी खबर नगरीना लोकमां कोइने पमे ने कोइने न पमे, तेम अहीं पण जाणी लेवुं.

शंख विगेरे बेइंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्ट शरीर प्रमाण बारजोजननुं, कानखजुरा विगेरे तेइंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्ट शरीर प्रमाण त्रणगाउनुं अने भमरा विगेरे चौरिंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्ट शरीर प्रमाण चार गाउनुं कह्युं छे. बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरिंद्रिय जीवोनुं जघन्य शरीरप्रमाण अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलुं जाणवुं.

गर्भजजलचर तथा उरपरिसर्पनी उत्कृष्ट अवगाहना एकहजारजोजननी, गर्भज भुजपरिसर्पनी पृथक्त्व (बेथी नव) गाउनी, गर्भज चोपगा (गाय

विगेरे) नी छ गाउनी अने गर्न्नज खेचरजीवोनी पृथक्त्व धनुष्यनी उत्कृष्ट अवगाहना कही छे. समुर्च्छिम जलचरनी उत्कृष्ट अवगाहना हजार जोजननी; समुर्छिम उरपरिसर्पनी पृथक्त्व जोजननी, समुर्छिम चोपगानी पृथक्त्व गाउनी अने समुर्छिम जुजपरिसर्प तथा समुर्छिम खेचरजीवोनी पृथक्त्व धनुष्यनी उत्कृष्ट अवगाहना कही छे. तिर्यंच पचेंद्रिय कोइ जीव लब्धियोगे वैक्रिय शरीर करे तो जघन्य अंगुलनो संख्यातमो न्नाग अने उत्कृष्ट नवसेंजोजन सुधी करी शके छे.

समुर्छिम मनुष्योनुं उत्कृष्ट अने जघन्य देहमान अंगुलना असंख्यातमां न्नागनुं कह्युं छे. गर्न्नज मनुष्यनुं जघन्य देहमान अंगुलना असंख्यातमा न्नाग जेटलुंने उत्कृष्ट त्रण गाउनुं कह्युं छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए पांच देवकुरुने पांच उत्तर कुरुक्षेत्रना मनुष्यनुं उत्कृष्ट देहमान त्रण गाउनुं, पांच हरिवर्षने पांच रम्यकक्षेत्रना मनुष्यनुं उत्कृष्ट देहमान वे गाउनुं, पांच हेमवंतने पांच ऐरण्यवृतक्षेत्रना मनुष्योनुं उत्कृष्ट

देहमान एक गाउनुं, उप्पन्न अंतरद्वीपना मनुष्योनुं उत्कृष्ट देहमान आठसें धनुष्यनुं अने पांच महाविदेना क्षेत्रना मनुष्योनुं उत्कृष्ट देहमान पांचसें धनुष्यनुं कह्युं छे. पांच भरतने पांच ऐरवतक्षेत्रमां पहेले आरे, धुरे (आरो बेसतां) त्रण गाउनुं ने छेके (आरो उतरतां) बे गाउनुं, बीजेआरे धुरे बे गाउनुं, ने छेके एक गाउनुं, त्रीजे आरे, धुरे एकगाउनुं, ने छेके पांचसें धनुष्यनुं, चोथेआरे, धुरे पांचसें धनुष्यनुं, ने छेके सात हाथनुं, पांचमे आरे, धुरे सात हाथनुं, ने छेके एक हाथनुं. अने छठे आरे, धुरे एक हाथनुं, ने छेके एक हाथ मोठेरुं, देहमान आ अवसर्पिणी काळमां कह्युं छे. कोइ मनुष्य लब्धियोगे उत्तर वैक्रिय शरीर करेतो जघन्यअंगुलनासंख्यातमाभागजेटलुं ने उत्कृष्ट तो लाख जोजनथी झाझेरुं पण करी शके.

वैमानिकनां दंडके जघन्य शरीर अंगुलना असंख्यातमां भागनुं उत्पत्ती काळे होय छे, अने उत्कृष्ट देहमान पहेला सौधर्म ने बीजा इशान देवलोके देव (देवी) नुं सात हाथनुं, त्रीजाने चोथा देवलोके

देवोनुं ७ हाथनुं, पांचमाने ७ठा देवलोके पाच हा-थनुं, सातमाने आठमा देवलोके चार हाथनुं, नवमा, दशमा, अगियारमा ने बारमा देवलोके त्रण हाथनुं नवग्रैवेयके बे हाथनुं अने अनुत्तर विमाने एक हाथनुं उत्कृष्ट देहमान कह्युं ठे.

असुर कुमार निकायना देवोना शरीर स्याम, वायु कुमारना नीला, सुवर्ण कुमार, दिसिकुमार, ने स्तनितकुमारना सुवर्ण जेवा पीळां, अग्निकुमार, वि-द्युतकुमार, ने द्वीपकुमारना राता, अने नागकुमार तथा उदधिकुमारना गौर वर्णवाळां शरीर कह्यां ठे. पिशाच, नूत, यक्ष, महोरग अने गंधर्व निकायना देवोना शरीरस्यास, किन्नरना नीला, अने राक्षस तथा किं-पुरुषना गौर(धोला) वर्णवाळां शरीर कह्या ठे. ज्यो-तिष देवो मांहे ताराउंना शरीर पंचवर्णा अने वीजा सर्वेना तपावेला सुवर्ण सरखा वर्णवाळां शरीर कह्या ठे. सौधर्म अने इशान देवलोकना देवना शरीर राता सुर्वण सरखा कान्तिवाळा, सनत्कुमार, माहेंड, अने ब्रह्मदेवलोकना देवोना शरीर कमळनी केसराना स-

रखा कान्तिवाळा अने लांतकआदि उपरना सर्व दे-वलोकना देवोनो वर्ण एक बीजाथी उत्तरोत्तर उज्ज्वल, उज्ज्वलतर अने उज्ज्वलतम कह्यो छे.

सिद्धना जीवोनी क्षेत्रावगाहना जघन्य एक हाथ ने आठ अंगुलनी, मध्यम चार हाथने सोळ अंगुलनी अने उत्कृष्टी त्रणसें तेत्रीस धनुष्यने बत्रीस अंगुलनी जाणवी.

आ अवसर्पिणी काळमां त्रीजा, चोथा आरामा चोवीस तिर्थंकर थया तेमनुं देहमान—ऋषभदेवनु ५०० धनुष्यनुं, अजीतनाथनुं ४५० धनुष्यनुं, संभवनाथनुं ४०० धनुष्यनुं, अभिनंदननुं ३५० धनुष्यनुं, सुमतिनाथनुं ३०० धनुष्यनुं, पद्मप्रभुनुं २५० धनुष्यनुं, सुपार्श्वनाथनुं २०० धनुष्यनुं, चंद्रप्रभुनुं १५० धनुष्यनुं, सुविधिनाथनुं १०० धनुष्यनुं, शीतळनाथनुं ९० धनुष्यनुं, श्रेयांसनाथनुं ८० धनुष्यनुं, वासुपूज्यनुं ७० धनुष्यनुं, विमळनाथनुं ६० धनुष्यनुं, अनंतनाथनुं ५० धनुष्यनुं, धर्मनाथनुं ४५ धनुष्यनुं, शांतिनाथनु ४० धनुष्यनुं, कुंथुनाथनुं ३५ धनुष्यनुं, अरनाथनुं ३० ध-

नुष्यनुं, मल्लिनाथनुं २५ धनुष्यनुं, मुनिसुव्रतस्वामिनुं २० धनुष्यनुं, नमिनाथनुं १५ धनुष्यनुं, नेमिनाथनुं १० धनुष्यनुं, पार्श्वनाथनुं ए हाथनुं अने वर्द्धमान स्वामिनुं ७ हाथनुं देहमान जाणवुं.

॥ इति अवगाहनाद्वार ॥

अथ पांचमुं लेश्याद्वार.

जेणे करी जीव कर्म साथे आश्लेश पामे तेने लेश्या कहीए. ते लेश्याना बे भेद छे, एक द्रव्यलेश्या तथा बीजी भावलेश्या, त्यां आत्माने काळा तथा पीळादिक द्रव्यरुप कर्मपुद्गळ संयोग ते द्रव्य लेश्या, अने तेथी आत्माना शुभाशुभ परिणाम ते भावलेश्या, अर्थात छ लेश्यानी कोइ एवी जातनी अनंती वर्गणा छे के तेमाथी आत्मानी योग प्रवृत्ति (मन वचन-कायनो व्यापार) ना अनुसारे लेश्यानी वर्गणा ग्रहण कराय ते द्रव्य लेश्या, अने तेथी जीव उपर थती असर ते भाव लेश्या जाणवी.

अशुभ लेश्याथी थती अशुभ असर, आत्माना स्वाभाविक शुभ अध्यवशाय उपर थती नथी, त्यां

दृष्टांत कहे छे, जेम लालनुं धोळा काचमां प्रतिबींब पडे खरुं, पण तेथी ते धोळो काच रंगाय नहि. अधोलोकमां प्राये (घणुं करीने) अशुभ द्रव्योजछे अने उर्ध्वलोकमां प्राये शुभद्रव्यो छे, माटे अधोलोकमां अशुभ द्रव्यलेश्या अने उर्ध्वलोकमां शुभ द्रव्यलेश्याज ग्रहण थाय छे तेथी उर्ध्व अने अधोलोकमां द्रव्यलेश्या अवस्थित रहे अने भावलेश्या फर्या करे छे. ते लेश्याना नाम परिणाम, लक्षण वर्ण रस स्पर्श गंध स्थानक स्थिती चवनगति अने दंडकादिक कहे छे. नाम कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म अने शुक्ल ए लेश्याना नाम जाणवा.

परिणाम–द्रव्यलेश्याथी जीवना अध्यवशाय जे थाय छे ते परिणाम कहेवाय छे. ते परिणाम जघन्य मध्यम उत्कृष्ट विगेरे घणा प्रकारना छे. मूळ ते छ लेश्याना परिणाम केवा होय? तेने माटे कह्युं छे के.

॥ गाथा ॥

पंथाउ पब्भिट्ठा, छ पुरिसा अडवि मज्झ आरंमि.
जंबु तरुस्स हेठा, परुप्परंनेवि चिंतेति. ॥ १ ॥

निम्मूल खंध साखा, सालागुछे पक्केय पडिय सडियाई
जह एएहिं नावा, तह लेसाउ विनायव्वा, ॥ १ ॥

मार्गथकी परिभ्रष्ट थयेला एवा छ पुरुषो वनमां आराम लेवाने एक जंबुवृक्षनी हेठ(नीचे.) आवी बेठा, ने माहोमाहे विचारवा लाग्यां के आ वृक्षना फळ भक्षण करीने आपणे क्षुधातृषा समावीए, एम विचारी एक पुरुष फळने अर्थे ते वृक्षने मूळथी छेदवा लाग्यो, त्यारे बीजो कहे थडथी छेदीए, त्रीजो कहे मोटी डाळाउ छेदीए, चोथो कहे नानी डाळीउ छेदीए, पांचमो कहे के फळनेज तोडीए त्यारे छठो कहे के पृथ्वी उपर खरी पडेला फल मध्येथी वीणी खइए. जेम ए छ पुरुषना परिणाम जुदा जुदा तेम कृष्णादीकथी मांडी यावत् शुक्ल लेश्याना परिणाम पण जुदा जुदा जाणवा.

लक्षण—पांचे आश्रव, त्रण अगुप्ति, छ जीवनि कायनी अव्रति, आरंभने विषे तिव्र परिणाम, डोहि, पापने विषे साहसिक, सुग (डुगंछा) सहित, निध्वंश

परिणाम अने अजीतेंद्रिय वगेरेना व्यापारेसहित जीवनापरिणाम ते कृष्ण लेश्यानुं लक्षण जाणवुं. इर्षा, अमर्षवंत. अतपस्वि, मायावि, पापथकी वीहेनहि, गृद्ध (आशक्त), प्रमादी, रसनोलोलुपी, मायागवेषी, आरंभी अव्रति अने पापनेविषेसाहसिक विगेरेव्यापारेसहितजीवनापरिणाम ते नीललेश्यानुं लक्षणजाणवुं. वांकु वांकु समाचरे, नीवरू माया करे, सरल पणाथी रहित, मोढे जुदो अने पुंठे जुदो, मिथ्यात्वि, अनार्य, दुष्टवचनबोले, चोर अने मछरी विगेरेना व्यापारेसहितजीवनापरिणाम ते कापोतलेश्यानुंलक्षणजाणवुं. अमाइ, अचपळ, अकुतुहळी, विनित, दमितेंद्रिय योगवंत, उपधानवंत, द्रढधर्मी, प्रियधर्मि अने पापथकी वीहे, ए विगेरे व्यापारेसहित जीवनापरिणाम ते तेजोलेश्यानुं लक्षणजाणवुं. क्रोधमानमाया अने लोभ ए चारे कषाय पातळा, प्रशांत चित्त, (इंद्रियोने दमनार), योगवंत, उपधानवंत, थोडुंबोले उपशांत अने जीतेंद्रिय विगेरे व्यापार सहित जीवनापरिणाम ते पद्मलेश्यानुं

लक्षणजाणवुं. आर्त रौद्र ध्यान वर्जी धर्म शुक्ल ध्यान ध्यावे, प्रशांत चित्त, आत्म रमणता, पांच समितिए समित, त्रण गुप्तिए गुप्त, सरागी तथा वितरागी उपशांत चित्त अने जीतेंद्रिय विगेरे व्यापारे सहित जीवनापरिणाम ते शुक्ल लेश्यानुं लक्षण जाणवुं.

वर्ण–स्निग्ध मेघनीघटासरखो, भेंसना शिंगडानीगोळी, अंजण, खंजण, अरिष्टरत्न, नेत्रनी कीकी अने काळा सुरमाथी अनंत गुणो कृष्ण लेश्यानो वर्ण महा भयंकर जाणवो. अशोक वृक्षना अंकुर, नीलचासपक्षी अने वैडुर्यरत्नथी अनंत गुणो नील लेश्यानोवर्ण जाणवो. अळशीनाफूल, कोकीलानी पांख अने पारेवानाकंठना वर्णथी अनंतगुणो कापोत लेश्यानोवर्ण जाणवो. हिंगळोक, ऊगतो सूर्य, दिपकनी शीखा, पोपटनीचांच अने तपावेला लाल सोनानावर्णथी अनंतगुणो तेजो लेश्यानो वर्ण जाणवो. हरियाळनो मध्यवर्ण, हळदर अने सेणानाफूलना वर्णथी अनंतगुणो पद्मलेश्यानो वर्णजाणवो. शंख, मचकुंदनाफूल, दूध, पूर्णचंद्रमा, मोतीनो हार अने

रुपाना वर्णथी अनंतगुणो शुक्ल लेश्यानोवर्ण जाणवो.

गंध–गाय, श्वान अने सापनाशव (मुरदां)ना गंधथी अनंतगुणो खराब गंध कृष्ण, नील अने का-पोतलेश्यानोछे. वासपीस, कपुर, कस्तुरी अने उ-त्तम अत्तरोथी पण अनंतगुणो प्रशस्त (सारो) गंध तेजो, पद्मअनेशुक्ल लेश्यानो जाणवो.

रस–करुवा तुंबरा, इंद्रवारुणी, लींबडो अने रोहणना रसथी अनंतगुणो करुवोरस कृष्णलेश्या नो जाणवो. सूंठ, मरी, पीपर अने गजपीपरना र-सथी अनंतगुणोतीखोरस नीललेश्यानोजाणवो,काची केरी अने काचाकोठनारसथी अनंतगुणो तुरोरस कापोतलेश्यानो जाणवो. पाका आंबा,पाका कोठ अने पाकाबीजोरानारसथी अनंत गुणो मीठोरस तेजो-लेश्यानोजाणवो.प्रधानवारुणी, (मदीरा)विविधप्रकार-नाआसवअने मधकरतां अनंतगुणोमीठोरस पद्मलेश्या नोजाणवो.खजुर,द्राक्ष,दुध,साकर,खांड अने गोळथी अनंतगुणो गळ्यो रस शुक्ल लेश्यानो जाणवो.

स्पर्श–काकचीनापांदडा, गायनीजीभ, सागना

पत्र अने करवतनीधारथी अनंतगुणो करकश स्पर्श कृष्ण, नील अने कापोत लेश्यानो जाणवो, बुरो नामनीवनस्पति,सरसवनाफुल अने मांखणथी अनंतगुणो सुकुमाळस्पर्श तेजो, पद्म अने शुक्ललेश्यानो जाणवो.

स्थानक–असंख्याती उत्सर्पीणी, अवसर्पीणीना जेटलासमयथाय, अथवा लोकनाजेटलाप्रदेश थाय तेटला लेश्याना स्थानक छे ते जाणवा.

स्थिति–लेश्याजीवनेकेटलोवखत रहे एम कहेवुं तेनुंनामस्थितिकहेवाय. छए लेश्यामांथी दरेकलेश्या उछामांउछी(जघन्य) अंतरमुहुर्तरहेछे अने वधारेमां वधारे (उत्कृष्ट) कृष्णलेश्यानीस्थिति. तेत्रीससागरोपमउपरअंतरमुहुर्तनीछे. नीललेश्यानी उत्कृष्टीस्थिति दशसागरोपमउपर पल्योपमनोअसंख्यातमो भाग, कापोत लेश्यानी उत्कृष्टीस्थिति त्रणसागरोपमउपर पल्योपमनोअसंख्यातमोभाग, तेजोलेश्यानी उत्कृष्टी स्थिति वेसागरोपमउपर पल्योपमनोअसंख्यातमो भाग, पद्मलेश्यानी उत्कृष्टीस्थिति दशसागरोपमउपर अंतरमुहुर्त अने शुक्ल लेश्यानीउत्कृष्टी स्थिति तेत्रीस

सागरोपमउपरअंतरमुहूर्त छे.

च्यवन—कइ लेश्याएजीव कइ गतिमांजाय एम जे कहेवुं तेनुंनाम अहीं च्यवन कहेलुंछे. कृष्ण, नील अने कापोत एत्रणलेश्यावाळाजीवो च्यवी (मरी) ने दुरगति(नारकी तथा तिर्यंच)मां जाय, अने तेजो पद्म अने शुक्ल एत्रणलेश्यावाळाजीवो च्यवीने सद्गति [मनुष्य अने देवगति]मां जाय.

गाथा.

अंतमुहुत्तम्मिगए ॥ अंतमुहुत्तम्मि सेस ए चेव ॥
लेसाहि परिणयाहि ॥ जीवा वच्चंति परलोयं ॥

अर्थ—मनुष्य तथा तिर्यंच ते परजवनी लेश्या आव्यापछी, अंतरमुहुर्तेमरणपामे, अने देवता तथा नारकी पोतानी मुलगी (जवस्थ) लेश्यानुंमुहुर्त याकतुं रहे [बाकी रहे] तेवारे मरणपामीने परजव जाय.

अल्पबहुत्व—कइलेश्याए जीवथोका अने कइ लेश्याए जीवघणाहोय एमकहेवुं ते अल्पबहुत्व. छए लेश्यामांहे सर्वथीथोमाजीवो शुक्ललेश्याए होय,

शुक्ललेश्यावंतकरतां पद्मलेश्याए जीव असंख्य गुणा होय, पद्मलेश्याथी तेजोलेश्याएवर्तता जीवो असंख्य गुणाजाणवा, तेजोलेश्याएवर्तता जीवोथी कापोत- लेश्याएवर्तताजीवो अनंतगुणाजाणवा. कापोतलेश्या- वंतजीवोकरतां नीललेश्याएवर्तताजीवो विशेषाधिक अने नीललेश्यावंत जीवोथीपण विशेषाधिक कृष्ण- लेश्यावंतजीवोकह्यां छे, एटले सर्वलेश्याउमां सर्वथी अधिकजीवो कृष्णलेश्याएहोयछे.

गति—नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति अने देवगति. एचारगतिछे तेनेविषे लेश्यानीस्थिति कहे छे—पहेलीनरकगतिमां कृष्णलेश्यानी दससागरोपमा- धिकपल्योपमनोअसंख्यातमोन्नाग जघन्य, अनेतत्रीश सागरोपमनीउत्कृष्टी स्थिति छे, तथा नीललेश्यानीत्रण सागरोपमाधिकपल्योपमनो असंख्यातमोन्नागजघन्य अने दससागरोपमाधिक पल्योपमनोअसंख्यातमो न्नाग उत्कृष्टीस्थितिछे.अने कापोतलेश्यानी दशहजार वरसनीजघन्यने त्रणसागरोपमाधिक पल्योपमनो असंख्यातमोन्नाग उत्कृष्टीस्थितिजाणवी. वीजी तिर्य-

नगति अने त्रीजी मनुष्यगतिनेविषे छएलेश्यानी जघन्य तथा उत्कृष्टीस्थिति अंतरमुहुर्तनीछे, पण तेमां एटलुं विशेष जाणवुंके मनुष्यगतिए शुक्लेश्यानी उत्कृष्टस्थिति केवळीमनुष्यनी अपेक्षाएनववरसऊणी पूर्व क्रोडवरसनीहोयछे. एटलुंविशेपजाणवुं.हवे चोथी देवगतिए समुदाये छएलेश्याहोयछे तेमां कृष्ण-लेश्यानीजघन्यस्थिति दशहजारवरसनी अने उ-त्कृष्टीस्थितिएकपल्योपमनाअसंख्यातमांभाग जेटली जाणवी, जेटली कृष्णलेश्यानीउत्कृष्टीस्थिति क-हीछे तेथी एकसमयअधिक नीललेश्यानी जघन्य स्थितिछे अने उत्कृष्टीस्थितिपल्योपमना असंख्यातमां भागजेटलीजाणवी, जेटली नीललेश्यानी उत्कृष्टी-स्थितिकहीछे तेथी एकसमयअधिक कापोतलेश्यानी जघन्यस्थिति छे अने उत्कृष्टी स्थिति पल्योपमनाअसं-ख्यातमांभाग जेटली जाणवी, हवे तेजोलेश्यानी जघन्यस्थिति दशहजारवरसनीछे अने उत्कृष्टीस्थिति वेसागरोपमउपर पल्योपमना असंख्यातमांभागजेटली जाणवी, जेटली तेजोलेश्यानी उत्कृष्टीस्थितिकहीछे

तेथी एकसमयअधिक पद्मलेश्यानी जघन्यस्थितिछे अने उत्कृष्टीस्थिति दशसागरोपमअधिक अंतरमुहुर्तनीजाणवी, जेटली पद्मलेश्यानी उत्कृष्टीस्थितिकही छे तेथी एक समयअधिक शुक्ललेश्यानीजघन्य स्थिति छे अने उत्कृष्टीस्थिति तेत्रीससागरोपम उपर अंतर मुहुर्तनीजाणवी.

जेम लोटामां, नाना घमामां अने मोटाघमामांथी पाणीभरेलुंहोय तेमां ते दरेकमां असंख्याता जीवछे अने ते एकबीजानीअपेक्षाए थोमाथोमा जीवकहेवाय छे, तेम कृष्ण, नील अने कापोत लेश्यानी उपर कह्या प्रमाणे पल्योपमनाअसंख्यातमांभागनीउत्कृष्टी स्थितिकहीछे ते दरेक एकबीजाथी अधिक अधिकतर जाणवी केमके असंख्याताना असंख्याताभेदछे एम सर्वत्रजाणवुं.

चोवीश दंमके लेश्या.

नरक गतिमां कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण लेश्या होय छे, तेमां पहेलीअनेबीजीनरके एक कापोत लेश्या त्रीजी नरके कापोत थोमी अने नील

घणी,चोथी नरके एकनीललेश्या पांचमीनरके नीलथो-की अने कृष्णघणी, छठीनरके एककृष्ण लेश्या अने सात मीनरके महाकृष्णलेश्याहोयछे.दशभुवनपतिनादंडके प्रथमनी चारलेश्याहोय छे;बादर अपर्याप्ता पृथ्वीकाय, अपकाय अने वनस्पतिकायनेविषे प्रथमनीचारलेश्या होय अने तेउए पर्याप्तिपुरीकर्यापछी तेजो सिवाय बाकी नी त्रण लेश्याहोयछे. पृथ्वीकायादिकपांचे सुक्ष्म पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता, बादर तेउकाय अने वाउकाय पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता,विगलेंद्रिय पर्याप्तातथाअपर्याप्ताअने समुर्छीम तिर्यंच पचेंद्रिय पर्याप्ता तथा अपर्याप्तानेविषे प्रथमनीत्रणलेश्याहोयछे. समुर्छीमनुष्यने एककृष्ण-लेश्याहोय अनेगर्भज तिर्यंच तथागर्भजमनुष्यने कृष्णा दिकछएलेश्याहोय छे,व्यंतर अने वाणव्यंतरने प्रथमनी चार लेश्याहोयछे ज्योतिषीए तथा पहेलेदेवलोके अने बीजेदेवलोके एक तेजोलेश्या त्रीजे,चोथेअने पांचमेदेव लोके एक पद्मलेश्या,छठादेवलोकथीबारमा देवलोकसु-धी अने नवग्रैवेयके शुक्ल लेश्या तथा पांचअनुत्तर विमाने परमशुक्ललेश्याहोयछे.सिद्धनाजीवोअलेश्यावंतजाणवा

यंत्र.

चोवीस दंडके	छ लेश्याना नाम.						
लेश्याद्वार	१ कृष्ण.	२ नील.	३ कापोत.	४ तेजो.	५ पद्म.	६ शुक्ल.	७ कुल.
नारकी १	१	१	१	०	०	०	३
दश भुवनपति १०	१	१	१	१	०	०	४
पृथ्वीकाय १	१	१	१	१	०	०	४
अपकाय १	१	१	१	१	०	०	४
तेउकाय १	१	१	१	०	०	०	३
वाउकाय १	१	१	१	०	०	०	३
वनस्पतिकाय १	१	१	१	१	०	०	४
विगलेंद्रिय ३	१	१	१	०	०	०	३
गर्भजातिर्यंच १	१	१	१	१	१	१	६
गर्भजमनुष्य १	१	१	१	१	१	१	६
व्यंतर १	१	१	१	१	०	०	४
ज्योतिष १	०	०	०	१	०	०	१
वैमानिक १	०	०	०	१	१	१	३

॥ एवं लेश्या द्वार ॥

अथ छठ्ठं इंद्रियद्वार.

इंद्रिय–इंद्र एटले परमैश्वर्यवान् आत्मा तेनुं चिन्ह अथवाजीवेरचेल, सेवेल अने जीवाधिन ते इंद्रियजाणवी. ते इंद्रियोपांचछे, १ स्पर्शेंद्रिय (चामडी), २ रसेंद्रिय (जीभ), ३ घ्राणेंद्रिय, (नाक), ४ चक्षुरिंद्रिय (नेत्र) अने ५ श्रोतेंद्रिय (कान), दरेकइंद्रियो बेप्रकारेछे, एक द्रव्येंद्रिय अने बीजी भावेंद्रिय.

द्रव्येंद्रिय ते निर्माणनामकर्म अने अंगोपांग नामकर्मनाउदयथी प्राप्तथायछे; तेनां बेभेदछे, १ निर्वृत्तिद्रव्येंद्रिय अने २ उपकरण द्रव्येंद्रिय, निर्वृत्ति द्रव्येंद्रियनो बाह्य अने अभ्यंतर आकार छे, तेमां बाह्याकार जातिनी अपेक्षाए घणां प्रकारनो छे, जेमकेः–मनुष्यनांकान सुंदरनेत्रनीबन्नेबाजुएछे, अश्वनांकान उपलाभागमांनेअणीदारछे अने हाथीनां-कान मोटाविशाळनेविंझणा (पंखा) ना आकारेछे अथवा कोइनां नाकचपटां, कोइना अणीदारहोयछे एवीरीते पांचेइंद्रियोनां बाह्याकार घणांप्रकारनां छे

अने अभ्यंतर आकारमां स्पर्शेंद्रियनो आकार घणा प्रकारनो एटले पोतपोतानां शरीरसरखो, रसेंद्रियनो खुरपा (अस्त्रा) सरखो, घ्राणेंद्रियनो अतिमुक्तकपुष्पसरखो, चक्षुरिंद्रियनो मसुरनीदाळसरखो अने श्रोतेंद्रियनो कदंब वृक्षनां फुलसरखो आकारछे, ए प्रमाणे निर्वृत्ति अने स्वविषयग्रहणकरवानीशक्तिरुप उपकरणद्रव्येंद्रिय जाणवी.

भावेंद्रिय–मतिज्ञानावर्णादिकर्मोनां क्षयोपशमप्रमाणे स्वविषयजाणवानी के समजवानी शक्ति ते भावेंद्रिय, तेनां बेभेदछे. एकलब्धिभावेंद्रिय अनेबीजी उपयोगभावेंद्रिय, लब्धि भावेंद्रिय–जाति अने गत्यादिकर्मोथी अने जातिगत्यादिनेआवरणकरवावाळाएवा कर्मनां क्षयोपशमथी जे शक्ति उत्पन्नथायते लब्धिभावेंद्रिय कहेवाय छे. उपयोग भावेंद्रिय–इंद्रियोने पोतपोतानां विषयोमांसावधानता एटले जेज्ञाननोव्यापारने उपयोग भावेंद्रिय कहीछे.

स्पर्शेंद्रियनो विषय उनो, टाढो, भारे, हळवो, स्निग्ध, रुक्ष, मृदु अने बरसट छे, रसेंद्रियनो विषय

मीठो, खाटो, कषायेलो, तीखो अने कडवो छे. घ्राणेंद्रियनो विषय सुगंध अने दुर्गंध छे. चक्षुरिंद्रियनो विषय धोळो, रातो, पीळो, नीलो अने काळो छे. श्रोतेंद्रियनो विषय सचित्त, अचित्त अने मिश्र शब्द छे. वधारेमांवधारे (वैक्रिय शरीरनी अपेक्षाए) स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय अने घ्राणेंद्रियनी ग्रहण शक्ति नवजोजनसुधीनीछे, चक्षुरिंद्रियनी ग्रहण शक्ति एक लाख जोजनथी ऊभेरी अने श्रोतेंद्रियनी ग्रहण शक्ति वार जोजनसुधीनीछे.

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय अने वनस्पतिकाय ए पांच एकेंद्रियनां दंडके एक स्पर्शेंद्रिय, शंखविगेरे बेइंद्रियनां दंडके स्पर्श अने रस, मांकण विगेरे तेइंद्रियनां दंडके स्पर्श, रस अने घ्राण, विंछी विगेरे चौरिंद्रियना दंडके स्पर्श, रस, घ्राण अने चक्षु, नारकी, दश भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक, तिर्यंच अने मनुष्यनां दंडके स्पर्श, रस, घ्राण, चक्षु अने श्रोत ए पांच इंद्रियो छे.

॥ एवं इंद्रियद्वार ॥

अथ सातमुं समुद्घात द्वार.

समुदघात–सम–एकीभाव, उत्–प्रबळता, घात क्षय एकीभाववडेकरी घणांजकर्मनोक्षयजेनी अंदर तेनुंनाम समुद्घात अथवा वेदनादिना प्राबल्यताववडेकरी एकीभावना योगे घणांज कर्मक्षय थे जेक्रियानीअंदर तेनुंनाम समुद्घात, ते समुद्घातसातछे. १ वेदनासमुद्घात, २ कषाय समुद्घात, ३ मरणसमुद्घात, ४ वैक्रियसमुद्घात, ५ तैजससमुद्घात, ६ आहारकसमुद्घात अने ७ केवलीसमुद्घात.

वेदना समुद्घात–अत्यंत वेदनाउत्पन्नथवाथी तेनीअंदरआत्मानुं तन्मयपणुंथइजवुं अने तेमां घणांजकर्मनोक्षयथवो तेनुंनाम वेदनासमुद्घात. ज्यारेजीवने अत्यंतवेदनाथायछे त्यारे पोतानाआत्मप्रदेशोबहारनीकळे, ते नीकळेला आत्मप्रदेशथी पोतानाशरीरनाभाग पुरीदेने लांबाकाळे भोगववालायककर्मने उदीरणाकरणवडेखेंची वर्तमानकाळेभोगवीले, जोके

तेवखते कर्मोनोदय थाय, पण फरी अशातावेदनीयकर्मदळ घणांज बंधायछे.अशाता वेदनीयनोज समुद्घात थाय, पण शातावेदनीयनो समुद्घात नथाय कारणके जेनी शांती नथाय तेनेमाटे समुद्घातहोय, पण शांती थाय तेनेमाटे समुद्घात नहोय जेमकेः— पोताने क्रोधादिउदयआव्यांछतां तेने विषे तन्मय न थाय ने दबावीराखेतो समुद्घातथायनहि, पण क्रोधादिथयेछते तेने न दबावे [शांती धारण न करे] ने तेने विषे तन्मय एटले एकी भाव थइ जाय तो समुद्घात थाय छे, वेदना समुद्घातनो काळ अंतर मुहुर्तनो छे.

कषायसमुद्घात—ज्यारे जीवने तिव्रकषाय थाय त्यारे कषायनीप्रबलतावडेकरीने एकीभाव [तन्मय] ना योगे पोताना आत्मप्रदेशो बहार नीकळे छे, नीकळेलाजीवप्रदेशथी पोलाणनोभाग पुरीदेछे अने लांबाकाळे भोगववालायक कषायने उदीरणा करणवडे खेंची वर्तमानकाळे भोगवी लेछे. तेथी ते कर्मोनो तो क्षय थाय पण अशुभ परिणाम

वके बीजा नवा कर्म घणां बंधाय छे. ते कषाय समुघातनो काळ अंतरमुहुर्तनो छे ने पछीथी आत्मप्रदेशो शांत थइ जाय छे.

मरण समुद्घात—ज्यारे जीवने अंतरमुहुर्त आयुष्य बाकी होय त्यारे आत्माना प्रदेशोने जे गतिमां जवानुं होय त्यांसुधी लंबावे छे अने अंतरमुहुर्तनुं आयुष्य भोगवी ले छे आवखते ते भवसंबंधीना बाकी रहेलां कर्मनो क्षय करे छे पण ते समुद्घातथी नवां कर्मो बंधाता नथी. मरणसमुद्घात असमाधीवाळो जीव करे छे.

वैक्रिय समुद्घात—ज्यारे जीवने वैक्रिय समुघात करवी होय त्यारे वैक्रियनामकर्मवडे वैक्रिययोग्यपुद्गलग्रहणकरीने आत्मप्रदेशो बहार काढी अनेकरूप करे ने वैक्रिय समुद्घात भोगवी ले छे. तेनो काळ उत्तर वैक्रियशरीरनी विकुर्वणाना प्रमाणे जाणवो.

तैजस समुद्घात—ज्यारे जीवने तैजस समुद्घात करवी होय, त्यारे तैजस नामकर्मवडे पुद्गलग्रहण करी तेना उपर तेजो लेश्या मुकवी होय, त्यांसुधी आत्मप्रदेशो लंबावे, तेना उपर तेजो लेश्या मुकी होय

अने ते लेश्या जो शीतळ होय तो तेने शांत करे ने उष्ण लेश्याहोयतो बाळी नांखेछे. तैजस समुद्घात नो काळ अंतरमुहुर्तनो छे.

आहारक समुद्घात—ज्यारे जीवने आहारक समुद्घातकरवीहोयत्यारे आहारक शरीर नामकर्म-वडे करी आहारकनांपुद्गललइने मुंढाहाथ प्रमाण शरीरकरे ने तेनीअंदरआत्मानाप्रदेशो खेपवी महा-विदेह क्षेत्रने विषे तिर्थंकरनीऋद्धिजोवा अथवा कोइ सूक्ष्मशंकानुंसमाधानकरवा मोकले छे. ते आहारक शरीरत्यां जइ अंतरमुहुर्तमां पाछुंआवी विसराळथइ जाय छे.

केवळी समुद्घात—ज्यारे केवळीने समुद्घात करवीहोयत्यारे पोतानाआत्मप्रदेशोने बहार काढी चौदराजलोकप्रमाण दंडकरे, बीजेसमये ते प्रदेशोने उत्तरदक्षिण लंबावे, त्रीजे समये पूर्व, पश्चिम लंबावे, चोथेसमये आंतरापुरे अने पांचमेसमये ते आंतरा-संहरे, छठेसमये उत्तरदक्षिणना आत्मप्रदेश संहरे, सातमे समये पूर्वपश्चिमना आत्मप्रदेश संहरे अने

आठमेसमये दंमसंहरे छे, केवळीसमुद्घातवके घणां कर्मनो क्षयकरे छे.

नारकी अने वाउकायना दंमके वेदनी, कषाय, मरण, अने वैक्रिय ए चार समुद्घात होयछे, पृथ्वी काय, अप्पकाय, तेउकाय, वनस्पतिकाय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरिंद्रिय ए सातदंमके, एक वेदना बीजी कषाय अने त्रीजी मरण समूद्घात छे. दश भुवनपतिना दशदंमक, व्यंतरनो एकदंमक, ज्योतिषीनो एकदंमक, वैमानिकनो एकदंमकने गर्नजतिर्यंचनो एकदंमक एम चौद दंमके, वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय अने तैजस एम पांच समुद्घात होयछे अने गर्नज मनुष्यना दंमके वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने केवळी एम साते समुद्घात कही छे.

॥ इति समुद्घात द्वार ॥

अथ आठमुं संघयण द्वार.

संघयण—सहनन एटले हामना संधि विशेष प्राप्त थाय छे शरीरावस्थाना अवयवो जेणे करीने ते

संहनन अर्थात शरीरना हाडनो दढ दढतरदढतमबंध तेने संघयणकहीए, ते संघयण ७ छे १ वज्ररुषभ नाराच, २ रुषभनाराच, ३ नाराच, ४ अर्धनाराच, ५ कीलिका, ६ सेवार्त्त.

वज्ररुषभनाराचसंघयण—वज्र—खीली, रुषभ—पाटो, अने नाराच एटले मर्कटबंध वांदरीने तेनुं बच्चु बे हाथे आंकडा भीडावे छे तेम सांधाना हाडना माहोमाहे आंकडेआंकडाजोडेलाहोय तेने मर्कटबंधकहेछे, एटलेहाडने बेपासे मर्कटबंध तेना उपर वीजुं पाटानी पेठे फरतुं हाडकुं अने तेना उपर त्रणे हाडने आरपार खीलीरुप हाडकुं एवो अति दढहाड संधिबंध ते वज्र रुषभनाराच संघयण कहेवाय छे. वज्ररुषभनाराचसंघयणवाळो कदि उंचेथी पत्थरउपरपडेतो ते पत्थरना चुरेचुरा थइ जाय पण तेनी हाडसंधि त्रुटेके वछुटे नहि. ए प्रथम संघयणनो धणी अनिउत्कृष्ट विशुद्ध अध्यवसाये चढती पदवीना दरजामांहे उपजे अने कोइक कर्म खपावी केवळज्ञानपामी मोक्षपणजाय. अत्यंतदढतरसंधि

वंधरुपपहेलासंघयण विना बीजा संघयणथी मोक्ष साधीशकायनहि. अति अशुभ अध्यवशाए करी सातमी नारकीए पण वज्ररुषभनाराच संघयण वाळोज जाय छे.

रुषभनाराचसंघयण–बे पासेमर्कटबंध अने उपर पाटो होय ते रुषभनाराचसंघयणकहेवाय. ए रुषभनाराचसंघयणनोधणी अति उत्कृष्ट विशुद्ध अध्यवसाये बारमा अच्युत देवलोक सुधी अने अति संक्लिष्ट अध्यवसाये छठी नारकी सुधी जाय छे.

नाराचसंघयण–बे पासे मर्कटबंध होय पण उपरपाटोकेखीलीनहोय ते नाराचसंघयण कहेवाय. ए नाराच संघयणनो धणी अतिउत्कृष्ट विशुद्ध अध्यवसाये दशमा प्राणतदेवलोकसुधी अने अति संक्लिष्ट अध्यवसाये पांचमी धुमप्रभानारकी सुधी जाय छे.

अर्ध नाराच संघयण–हाडसंधिना एक पासाए मर्कटबंध अने बीजा पासाए कीलिका होय पण बन्ने पासाएमर्कटबंध, पाटोकेखीलिनहोय ते अर्धनाराच

कहेवाय. ए अर्धनाराच संघयणनो धणी अति विशुद्ध अध्यवसाए करी ठेवट आठमा सहस्रार देवलोक सुधी अने अतिसंक्लिष्टअध्यवसाए चोथी पंकप्रभा नारकी सुधी जाय छे.

कीलिकासंघयण—हाडसंधिबंध फक्त एक खीलिएज होय पण मर्कटबंधके पाटो न होयते कीलिका संघयण कहेवाय. ए कीलिका संघयणनोधणी अति विशुद्ध अध्यवसाए करी ठेवट छठा लांतक देवलोक सुधी अने संक्लिष्टअध्यवसाए त्रीजीवालुका प्रभा नारकी सुधी जाय छे.

सेवार्त्त—हाडकाना छेडा लगे एकएक बीजाने जोडे लागेला होय एटले अडेलां होय पण खीलि पाटो के मर्कट बंध न होय ते सेवार्त्त संघयण कहेवाय. ए सेवार्त्त संघयणनोधणी अति विशुद्ध अध्यवसाएकरी ठेवट वहुमां वहु चोथा माहेंद्र देवलोक सुधीजाय अने अति संक्लिष्टअध्यवसाए ठेवट बीजी शर्करा प्रभा नारकीसुधी जायछे.

गर्भज–मनुष्य तथा गर्भज तिर्यंचना दंडके छए संघयण होय. बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरिंद्रिय ए त्रण दंडकने विषे एक सेवार्त्त संघयण होय अने नारकी, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषीने वैमानिक ए चौद दंडक तथा पांच एकेंद्रियना पांच दंडकमळी उंगणीश दंडकना जीव छए संघयणरहीत एटले असंघयणी कह्या छे, कारणके ए उंगणीशदंडकना जीवोने हाड मांस होय नहि अने हाड मांस विना संघयण होतु नथी. केटलाएक आचार्यो तिर्यंच पंचेंद्रिय संमूर्छिम अने मनुष्य संमूर्छिमने छए संघयण, पांचे एकेंद्रियने सेवार्त्त संघयण अने तेरदेवताना दंडके वज्रऋषभ नाराच संघयण कहे छे पण ते कथन औपचारीक जाणवुं. तिर्थंकर, चक्रवर्ती, बळदेव, वासुदेव, तद्भव मोक्षगामी मनुष्य अने असंख्याता वरसना आयुष्यवाळा तिर्यंच तथा मनुष्योने पहेलुंज संघयण कह्युं छे.

॥ इति संघयणद्वार ॥

अथ नवमुं संस्थान द्वार.

संस्थान–जे आकृतियें प्राणीउ रुडी रीते रहेठे एवो शरीरनो आकार विशेष तेने संस्थान कहीए ते संस्थान बे प्रकारे ठे. एक जीवसंबंधीने बीजु अजीव संबंधी, तेमा जीवसंबंधी संस्थान ठ प्रकारना ठे तेना नाम एक समचतुरस्र बीजुं न्यग्रोध, त्रीजुं सादि, चोथुं वामन पांचमुं कुब्ज अने ठठुं हुंडक. बीजु अजीव संबंधी संस्थान ते पांच प्रकारना ठे तेना नाम, एक चोखुणुं, बीजुं त्रीखुणुं त्रीजु वाटलुं एटले चुडीना आकारे चोथुं गोळ एटले थाळीना आकारे, अने पांचमुं लांबुं, एम जीव संबंधी अने अजीव संबंधी संस्थान कह्या तेमा हवे जीवसंबंधी संस्थाननुं अहिं प्रयोजन ठे. माटे तेनुं वर्णन निचे प्रमाणे जाणवुं.

समचतुरस्र संस्थान–समचोरस आकार जेमके पर्यंकासने बेठा ठता चारबाजुए सरखुं माप थाय ते आवी रीते, जमणा ढींचणथी डाबा ढींचण सुधीनी जेटली दोरी थाय तेटलीज डाबा ढींचणथी जमणा

खभे ने जमणा ढींचणथी काबा खभे तथा पर्यंकाशन नाभध्यभागथी माथा सुधी एम चारे दोरी सरखी थाय ते समचतुरस्र संस्थान अथवा पोताना एकसो आठअंगुळ प्रमाण देहभराय एवुं सर्वांगसुंदर भला लक्षणवाळुं ते समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.

न्यग्रोध परिमंडल संस्थान--वडवृक्षनी पेठे नाभि उपरनो भाग सुंदर प्रमाणोपेत सुलक्षणवान् अने नाभिनी निचेनो भाग असुंदर अलक्षणोपेत होय ते न्यग्रोध परिमंडल संस्थान जाणवुं.

सादि संस्थान--आदिलुं एटले नाभिनी निचेनुं सुलक्षण प्रमाणोपेत अने नाभिना उपरनुं असुंदर अलक्षणोपेत होय ते सादि संस्थान जाणवुं.

वामन संस्थान--पीठ, उदर अने हृदय ए हीन लक्षणो होय अने मस्तक, कोट (कंठ), हाथ अने पग एटलां अवयवो सुलक्षणा प्रमाणोपेत होय ते वामन संस्थान जाणवुं.

कुब्ज संस्थान--कुबडुं ते वामन करतां वीपरीत एटले पीठ,उदर अने हृदय ए सुलक्षणा प्रमाणोपेत होय

अने मस्तक, कंठ, हाथ अने पग एटलां अवयवो हीन लक्षणे अप्रमाणोपेतहोय ते कुब्जसंस्थानजाणवुं.

हुंमक संस्थान–सर्व अंगोपांग कुलक्षण हीनाधिक अशोजनिक होय ते हुंमक संस्थान जाणवुं.

नारकी, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय, ने वनस्पतिकाय तथा बेइंद्रिय, तेइंद्रिय ने चौरिंद्रिय अने समूर्छिम मनुष्य तथा समूर्छिम तिर्यचने एक हुंमक संस्थान कह्युं छे. दश भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिकना दंमके एक समचतुरस्र संस्थान होय छे. गर्जज तिर्यंच पंचेंद्रिय अने गर्जज मनुष्य ना दंमके छए संस्थान कह्यां छे. उपर कह्यां प्रमाणे पांचे एकेंद्रिय दंमके हुंमक संस्थान छे तेमां पृथ्वीकाय जीवोनां शरीर मसुरनीदाळ अथवा चंद्रमासरखां, अपकायनां पाणीनां परपोटा सरखा, तेउकायनां सोयना भारानीअणीयो सरखा, वाउकायनां धजासरखां अने वनस्पतिकायनां नाना प्रकारनाआकारे शरीरजाणवां. वाउकाय वैक्रिय शरीर करे तोपण धजा नां जेवां संस्थान करे. गर्जज तिर्यंच पंचेंद्रिय अने

मनुष्य तथा बारमा देवलोक सुधीना देवो उत्तरवैक्रियशरीरकरेतो ते घणां प्रकारनां संस्थाने(आकारे) करी शके छे. नवग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमानवासीदेवोने उत्तरवैक्रियशरीरकरवानीशक्ति छे पण तेवा शरीरनुं तेमनेप्रयोजननहिहोवाथी कदीए उत्तरवैक्रिय शरीरकरतांनथी. नारकीउत्तरवैक्रिय शरीर करे तो ते पण शरीरहुंमक संस्थानेज जाणवुं.

॥ इति संस्थान द्वार ॥

अथ दशमुं प्राणद्वार.

प्राणने धारण करे ते प्राणी--जीव कहेवाय छे. प्राण बेप्रकारे छे एकद्रव्यप्राण अने बीजुं भावप्राण, तेमां शरीर संबंधीभवोपग्राही आत्मसंबंध ते द्रव्यप्राण अने आत्मानाज्ञानादिगुणते भावप्राण जाणवां. स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रियने श्रोतेंद्रिय तथा मनबल, वचनबल, ने कायबल अने आयुष्य तथा श्वासोश्वास ए दश द्रव्यप्राण जाणवां, ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य एचार भावप्राण कह्यां छे.

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय अने

वनस्पतिकाय ए पांच एकेंद्रियने, स्पर्शेंद्रिय, कायबल ३ श्वसोश्वास अने ४ आयुष्य एम चार प्राण होयछे. शंख विगेरे बेइंद्रियने उपर कहेलां चार प्राणनी साथे रसेंद्रिय अने वचनबल सहित छ प्राण होयछे. कीडी, मांकण, कानखजूरा विगेरे तेइंद्रियजीवोने उपर कहेलां छ प्राणनी साथे घ्राणेंद्रिय सहित सातप्राण होय छे. माखी, भमरा, भमरीओ विगेरे चौरिंद्रियजीवोने उपर कहेलां सात प्राणनी साथे चक्षुरिंद्रिय सहित आठ प्राण होय छे. असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रियने उपर कहेलां आठ प्राणनी साथे श्रोतेंद्रिय सहित नव प्राण होय छे अने असंज्ञी (समूर्छिम) मनुष्यने वचनबल नहि होवाथी अने श्वासोश्वास पर्याप्ति पुरी न करे माटे तेने सात के आठ प्राण होय छे. नारकी, दशभुवन पति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक, गर्भज तिर्यंच पंचें द्रिय अने मनुष्य ए सर्वसंज्ञीपंचेंद्रियने पांच इंद्रिय, त्रणबल, श्वासोश्वास अने आयुष्य एम दश प्राण होयछे. प्राणनी साथे जीवनेजे वियोग थाय तेनुं नाम मरण कहेवाय छे. सिद्धना जीवोने शरीर विगेरे नहि

होवाथी द्रव्य प्राणतो नथी पणनिजआत्मगुण अनंत ज्ञानादि चारे नावप्राण होय ठे.

॥ इति प्राण द्वार ॥

अथ अगियारमुं पर्याप्ति द्वार.

पर्याप्ति—पुद्गलोपचयजः पुद्गल ग्रहणपरिणमन हेतुः शक्ति विशेषः—पुद्गलना उपचयथी थयो (जे) पुद्गल ग्रहण परिणमन हेतुरुप शक्ति विशेष, तेने पर्याप्ति कहे ठे.

जीवने एक गतिथी बीजी गतिए जातां साथे तैजस अने कार्मणशरीर होयठे. ते शरीरवके करीनेजीव यथायोग्य आहारने ग्रहण करे ठे ने पठी ए आहारद्वाराए चार, पांचके ठ विनागे जीववीर्य प्रवृती एटले शक्ति फोरवे ठे, केमके स्वयोग्य सर्व पर्याप्ति जीव साथेज आरंने ने पुरी अनुक्रमे करे ठे. पर्याप्ति ठ ठे. १ आहारपर्याप्ति, २ शरीरपर्याप्ति, ३ इंद्रिय पर्याप्ति, ४ श्वासोश्वासपर्याप्ति, ५ नाषापर्याप्ति, अने ६ मनपर्याप्ति.

प्रथम आहारने ग्रहणकरी परिणमावी रसख-

लादि जुदा करवानी शक्तिविशेष तेने आहारपर्याप्ति कहे छे. रसपणेपरिणामने पामेल आहारने रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि (हाडकां) मज्जा तथा वीर्य एसातधातुपणेपरिणमावीने शरीरनिपजाववानी शक्तिविशेष तेनेवीजी शरीरपार्याप्तिकहेछे. सातधातुपणे परिणामनेपामेलजेरस ते जेने जेटलीद्रव्यइंद्रियोजोइए.तेने तेटलीइंद्रियपणेपरिणमाववानीजेशक्तिविशेष तेने इंद्रियपर्याप्ति कहे छे, जे वडे श्वासोश्वासयोग्य पुद्गल ग्रहण करीने श्वासोश्वासपणेपरिणमावी श्वासोश्वासलेवा मुकवानीशक्तिविशेषने श्वासोश्वासपर्याप्ति कहेछे. भाषा वर्गणा योग्यपुद्गलद्रव्यग्रहीवचनपणे परिणमावी अवलंबी मुकवानी जे शक्तिविशेष तेने भाषापर्याप्तिकहेछे. मनोवर्गणा योग्य पुद्गलग्रहणकरी तेने मनपणेपरिणमावी अवलंबी लेवा मुकवानी शक्तिविशेष तेने मनपर्याप्ति कहे छे.

औदारिक शरीरवाळो पहेली आहार पर्याप्ति एक समयमां अने याकीनीवीजी सर्वेपर्याप्तिओअनुक्रमे अंतरमुहुर्तमां एक पछी एक पुरण करे छे. वै-

क्रियशरीरवाळो एक शरीरपर्याप्ति अंतर मुहुर्तमां अने बाकीनीपांचेपर्याप्तिउ एक एक समयमां अनुक्रमे एकपछी एकपुरीकरेछे.

आहार, शरीर अने इंद्रिय पर्याप्ति पुरी कर्या सिवाय कोइ जीव मरण पामे नहि. स्वयोग्य सर्वे पर्याप्तिपुरीकरे तेने पर्याप्तो अने स्वयोग्य सर्वपर्याप्ति पुरीकरीनथी त्यांसुधीतेने अपर्याप्तो कहेवायछे. पर्याप्तिनां बे भेद छे, एक लब्धिपर्याप्तिने बीजी करण पर्याप्ति स्वयोग्य सर्वपर्याप्ति पुरीकरी नथी पण करशे ते लब्धिपर्याप्ति अने स्वयोग्य सर्व पर्याप्तिपुरीकरी लीधी छे तेने करणपर्याप्ति कहेछे. अपर्याप्ति पण बे प्रकारनीछे एक लब्धि अपर्याप्ति ने बीजी करण अपर्याप्ति. स्वयोग्य सर्वेपर्याप्ति पुरीकरशेजनहि तेने लब्धिअपर्याप्ति अने स्वयोग्य सर्वे पर्याप्ति पुरीकरी नथी पण करशे तेने करण अपर्याप्ति कहेवाय छे.

पर्याप्ति नाम कर्मना उदयथी लब्धिपर्याप्ति अने अपर्याप्ति नाम कर्मना उदयथी लब्धि अपर्याप्ति प्राप्त थाय छे, पण करणपर्याप्ति अने करण

अपर्याप्ति नाम मात्रछे, एकर्मना उदयथी थतीनथी. जेम देवतापर्याप्तिपुरीकरेज पणज्यांसुधी पुरीकरीनथी त्यां सुधी तेनुं कांइक नाम आपवुं जोइए माटे तेने करण अपर्याप्ति कहेछे, अने सर्वे पर्याप्तिउ पुरीकरी लीधीछे एम जणाववानेमाटे तेने करण पर्याप्ति कहेछे.

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय अने वनस्पतिकाए एकेंड्रिय जीवोने आहार,शरीर, इंड्रिय अने श्वासोश्वास एम चार पर्याप्तिउ कही छे. बेइं-ड्रिय, तेइंड्रिय अने चौरिंड्रिय तथा असंज्ञी पंचेंड्रियने उपरनी चार पर्याप्ति साथे नाषा पर्याप्तिसहित पांच पर्याप्ति कही छे, नारकी, दशनुवनपति, व्यंतर, ज्यो-तिषी अने वैमानिक तथा गर्नजतिर्यंच पंचेंड्रियअने मनुष्य ए सर्वे संज्ञी पंचेंड्रियने उपर कहेली पांच-पर्याप्तिसाथे मनपर्याप्तिसहित छए पर्याप्ति होयछे.

॥ इतिपर्याप्तिद्वार ॥

अथ बारमुं योनीद्वार.

योनी–उत्पत्ति स्थानक–सामान्ये जेजे जीवना उत्पत्ति स्थानक वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शे करी सरखां

होय, ते सर्वे एकजाती योनीमांहे गणीए, जेम गो-
बरना छाणमांहे जुदा जुदा कीमा, कमीआ, वींछी
विगेरे घणां जीव उपजे छे, ते सर्वना जुदा जुदा
कुळ छे, पण योनी तो एकज गणाय, एवी रीते गणतां
सर्व संसारी जीवोनी चोरासी लाख योनी छे.

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकायनी सात
लाख अने साधारण वनस्पतिकायनी चौदलाख तथा
प्रत्येक वनस्पतिकायनी दशलाख योनी कही छे. बे
इंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रियनी बब्बे लाख, गर्भज
तिर्यंचपंचेंद्रियनी चारलाख, नारकीनी चारलाख तथा
चारनिकायनादेवतानी चारलाख अने मनुष्यनी चौद
लाख एम सर्वेमळी संसारीजीवोनी चोरासी लाख
योनीकहीछे अने सिद्धना जीवोने शरीर नहि होवाथी
योनी पण नथी.

देवता तथा नारकीनी अचित्त योनी होयछे,
गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा गर्भज मनुष्यनी कांइक
सचित्तने कांइक अचित्तरुप मिश्र योनीछे अने एकें-
द्रिय तथा विगलेंद्रियनीमांहे कोइकनी सचित्त, कोइ-

कनी अचित्तने कोइकनी सचित अचित्तरुप मिश्रयोनी कहीछे. देवता, नारकी अने एकेन्द्रियनी योनी ढांकेली होयछे, विगलेंद्रियनी प्रगट (उघाडी) अने गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा गर्भज मनुष्यनी कांइक ढांकेली ने कांइक प्रगट एटले गर्भ होवाथी बाहेर पेट मोटुं देखाय अने मांहे देखाय नहि तेमाटे एने कांइक ढांकेली अने कांइक प्रगट एम बे प्रकारे योनी कहीछे. साते नारकीमांहे केटलाएकनी उष्ण योनी ने केटलाएकनी शीतयोनी होयछे. गर्भजतिर्यंचपंचेंद्रिय, गर्भजमनुष्य अने चारनिकायनादेवतानी कांइकशीत अने कांइकउष्णरुप मिश्रयोनी होय छे, तेउकायनी उष्णयोनी अने पृथ्वीकाय, अपकाय, वाउकाय ने वनस्पतिकाय तथा बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरिंद्रिय मांहे कोइकनीउष्ण, कोइकनी शीतने कोइकनी शीतउष्णरुप मिश्रयोनीकहीछे.

॥ इति योनी द्वार ॥



अथ तेरमु कुलकोटी द्वार.

जीवोने उपजवानीयोनीमांहे १९७५०००००००००० कुलनीकोटी छे तेमां पृथ्वीकाय ने विषे बार लाख कुलकोटी अपकायनेविषे सात लाख कुलकोटी, तेउ कायने विषे त्रणलाख कुलकोटी वाउकायने विषे सात लाख कुलकोटी अने वनस्पतिकायनेविषे अठा वीस लाख कुलकोटी बेइंद्रियने विषे सात लाख कुलकोटी तेइंद्रियने विषे आठ लाख कुलकोटी अने चौरिंद्रियनेविषे नवलाख कुलकोटी, जलचरने विषे साडाबार लाख कुलकोटी, खेचरनेविषे बारलाख कुलकोटी चोपगा ने विषे दश लाख कुलकोटी उर परिसर्पनेविषे दशलाख कुलकोटी अने भूजपरिसर्पने विषे नवलाख कुलकोटी जाणवी, एमज मनुष्यनेविषे बारलाख कुलकोटी, देवतानेविषे छवीसलाखकुलकोटी अने नारकीने विषे पचीसलाख कुलकोटीछे. ए सर्व मळीने जीवोना एक कोडा कोड, सत्ताणुं लाखकोड पचासहजारकोड कुल कह्यां छे.

॥ इति कुलकोटी द्वार ॥

अथ चौदमु ज्ञानद्वार.

ज्ञान–जेने करी वस्तुनुं स्वरुप जाणीए, गुणपर्याये करी वस्तुनो निर्णय करीए तेनुं नाम ज्ञान, अथवा सामान्य विशेषात्मक वस्तुने विषे विशेष ग्रहणात्मक जे बोध तेनुं नाम ज्ञान कहेवायछे. १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्यवज्ञान, अने ५ केवलज्ञान एम ज्ञान पांच प्रकारनुं छे. पांच इंद्रिय तथा मनवडे नियत वस्तुनुं जोवने जे ज्ञान, तेनुं नाम मतिज्ञान. सांभळवे करी जाणीए एटले सम्यक प्रकारे शास्त्र जाणवा, वांचवा तथा सांभळवाथी मननपूर्वक वस्तुनुं जीवने जे ज्ञान थाय तेनुं नाम श्रुतज्ञान. इंद्रियादिकनी अपेक्षा विना मर्यादा प्रमाणे रुपी वस्तुनुं जीवने जे ज्ञान थाय तेनुं नाम अवधिज्ञान, संज्ञी पंचेंद्रिय जीवना मनोगत भावनुं अर्थात् मनचिंतित अर्थनुं जीवने जे ज्ञान थाय तेनुं नाम मनः पर्यवज्ञान. संपूर्ण लोकालोकनुं तथा जीवअजीवना सर्व गुण पर्यायोनुं तथा रुपी अरुपी सर्व वस्तुओनुं जीवने जे ज्ञान थाय तेनुं नाम केवळज्ञान

सर्व ज्ञानावरणी कर्मनोक्षय थवाथी, आवरणरुप उ
पाधी रहीत, केवळज्ञान सर्वथा एकज प्रकारनुं
अने बाकीना चारे ज्ञान ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयो
पशम प्रमाणे होवाथी घणां प्रकारनां छे. मतिज्ञा
ने श्रुतज्ञान परोक्ष छे अने अवधिज्ञान, मनः पर्य
ज्ञान तथा केवळज्ञान प्रत्यक्ष कह्यां छे.

दश भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानि
ए देवताना तेर दंडके तथा नारकी अने गर्भज ति
र्यंचपंचेंद्रियना दंडके सम्यकदृष्टि जीवने मतिज्ञा
श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान एम त्रण ज्ञान होय
बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, अने चौरिंद्रिय ए त्रण विकलेंद्रि
यना दंडके अपर्याप्तावस्थाए केटलाएक जीवोने म
तिज्ञान अने श्रुतज्ञान एम बे ज्ञान सिद्धांतने वि
कह्यां छे. गर्भज मनुष्यना दंडके पांचे ज्ञान कह्या
पांच एकेंद्रियना दंडके एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं हो
वाथी ते जीवोने ज्ञान होतुं नथी. सिद्धना जीवोने
केवळज्ञान होय छे.

॥ इति ज्ञान द्वार ॥

अथ पंदरमुं अज्ञानद्वार.

अज्ञान–अनंत धर्मात्मक वस्तुने मोहनीकर्मना उदयथी एकरुप पुर्णकरीजाणे, संसार हेतु तेने मोक्ष हेतु जाणे, एकांते ग्रहण करवारुप अथवा त्याग करवारुप एम एकांतेज वस्तु स्वरुप माने पण उभय रुप नजाणे, माटे मिथ्यात्वना उदये करीने मिथ्यात्वीनुं जाणपणुं ते अजाणरुपज होय तेनुं नाम अज्ञान कह्युं छे. १ मतिअज्ञान, २ श्रुतअज्ञान, ३ विभंगज्ञान एम त्रण प्रकारनां अज्ञान कह्यां छे.

तेर देवताना दंडक एक गर्भज मनुष्यनो तथा एक गर्भज तिर्यंचनो अने एक नारकीनो दंडक एम सर्व मळीने सोळदंडकने विषे त्रण अज्ञान लाभे अने पांच एकेंद्रियना तथा त्रण विगलेंद्रियना दंडके एम आठदंडके एक विभंगज्ञान विना बाकीना बे अज्ञान कह्यां छे.

॥ इति अज्ञान द्वार ॥

अथ सोळमुं दर्शन द्वार.

दर्शन–सामान्यपणे निराकारोपयोगरुप वस्तु

नो जे अववोध तेनुंनाम दर्शन १ चक्षुदर्शन, २ अचक्षुदर्शन, ३ अवधिदर्शन, ४ केवळदर्शन एम चार प्रकारे दर्शन छे.

चक्षुदर्शन–घटादि पदार्थोने आंखोवडे सामान्य पणे देखवुं ते. अचक्षुदर्शन एटले चक्षु सिवाय वाकोनी इंद्रियो जे स्पर्शन, रसन, घ्राणन, श्रोतन अने नोइंद्रिय जे मन एणे करी शब्दादिक अर्थनो जे सामान्याववोध थाय ते अचक्षुदर्शन, द्रव्य, क्षेत्र, काळने भाव ए चार मर्यादा मांहे रह्यां जे रुपी द्रव्य तेनो सामान्याववोध ते त्रीजुं अवधिदर्शन, सर्वद्रव्यनो सामान्याववोध ते निरावरण अप्रतिपातीएवुं चोथुं केवळ दर्शन जाणवुं. ए चार दर्शन अनाकार छे, कारणके जाति, गुण, क्रियादिक विशेषण रहित तथा वस्तुना आकार रहित केवळ आकांक्षक छे एवुं देखीए तेनुं नाम दर्शन कह्युं छे.

पृथ्वीकायादि पांच एकेंद्रियना पांच दंडक, वे इंद्रियनो एकदंडकअने तेइंद्रियनो एक दंडक एम सात दंडकने विषे एक अचक्षु दर्शन होय, चौरिंद्रि-

यनादंडके चक्षुदर्शन तथा अचक्षुदर्शनकह्युं छे. तेर देवताना दंडक, एक नारकीनो दंडक अने एक तिर्यंच पंचेंद्रियनो दंडक एम पंदर दंडकने विषे चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शन एम त्रण दर्शन होय अने मनुष्यना दंडके केवळदर्शन सहीत चारे दर्शन होय छे. सिद्धना जीवोने एक केवळदर्शन होय छे.

॥ इति दर्शन द्वार ॥

अथ सत्तरमुं दृष्टि द्वार.

दृष्टि—जे अवलोकनकरवुं तेने दृष्टिकहीए. ते दृष्टि त्रण प्रकारे छे. १ सम्यग् दृष्टि, २ मिथ्यात्वदृष्टि अने ३ मिश्रदृष्टि तेमां श्री वितरागे कहेलां वस्तुतत्वनुं ज्ञानथाय ते प्रथम सम्यग् दृष्टिजाणवी. सम्यग्दृष्टिनां लक्षणथी जे विपरीत ते बीजी मिथ्यात्वदृष्टि तथा सारुं अथवा मातुं ज्ञान बेहुने विषे जे खरापणानुं थाय ते त्रीजी मिश्रदृष्टि जाणवी.

पृथ्वीकायादिकपांच एकेंद्रियनादंडके एक मिथ्यात्वदृष्टिछे. विगलेंद्रियनात्रणदंडके एक मिथ्या-

त्वदृष्टि अने वीजी सम्यक्त्वदृष्टि एम बे दृष्टि कहीछे कारणके जे जीव परभवथी सास्वादन सम्यक्त्व सहीत आवे छे तेने अपर्याप्तावस्थाए सम्यक्त्व दृष्टि होय छे ते अपेक्षाए विगलेंद्रियना दंडके बे दृष्टि जाणवी, तेर देवताना दंडके गर्भज मनुष्य अने तिर्यंचना दंडके तथा नारकीना दंडके एम सोळ दंडके त्रण दृष्टि कही छे. पण एमां नव ग्रैवेयके एक सम्यक्त्व अने वीजी मिथ्यात्व ए बे दृष्टि लाभे तथा पांच अनुत्तर विमाने एक सम्यक्त्व दृष्टिज लाभे तथा समुर्छिम तिर्यंचने समयक्त्व अने मिथ्यात्व ए बे दृष्टिज लाभे अने समुर्छिम मनुष्यने एक मिथ्यात्व दृष्टि कही छे.

॥ इति दृष्टि द्वार ॥

अथ अढारमुं योगद्वार.

योग—जुडवं तेने योगकहीए अथवा जीवना बळवीर्य, शक्ति, पराक्रमने योग कहीए, अथवा योग एटले व्यापार तेयोग त्रणप्रकारनाछे मन १ योग २ वचन योग अने ३ काययोग.

मनयोग एटले मननोव्यापार ते चारप्रकारे छे. १ सत्यमनोयोग, २ असत्यमनोयोग, ३ सत्यासत्य-मनोयोग अने ४ असत्याअमृषा मनोयोग वचन योग एटले भाषानो व्यापार ते चारप्रकारे छे. १ सत्य वचनयोग २ असत्य वचनयोग ३ सत्यासत्य (मिश्र) वचनयोग अने ४ असत्याअमृषा वचनयोग, काय-योग एटले कायानोव्यापार ते सातप्रकारे छे. १ औदारिक काययोग २ औदारिक मिश्र काययोग ३ वैक्रिय काययोग ४ वैक्रिय मिश्र काययोग ५ आ-हारक काययोग ६ आहारकमिश्रकाययोग अने ७ कार्मणकाययोग. ए प्रमाणे यथामळीने पंदर योग कह्यां छे.

सत्य मनयोग एटले वस्तुने वस्तुरुपे चिंतववी जेमके जीवादिक पदार्थ द्रव्यरुपे नित्य, पर्यायरुपे अनित्य एम अनेकांतपणे चिंतववुं ते सत्य मनयोग अने तेथी विपरीत ते असत्य मनयोग जेम जीवा-दिक पदार्थ एकांतपणे नित्य विश्वव्यापी इत्यादिक चिंतववुं तेनुं नाम असत्यमनयोग. सत्यासत्य मनो-

योग एटले कांइक साचुं कांइक जुठुं एम मिश्र न्नावे चिं-
तववुं जेमके आजे गाममां दश जनम्या दश मुआ
एम अनुमाने कांइक साचुं जुठुं चिंतववुं. असत्या
अमृषामनोयोग एटले आनुं अमुक नाम छे, आ
अमुक जात छे, आ वस्तु लाव. आ वस्तु ले इत्या-
दिक चिंतववुं तेथी जीनवचन विराधाय नहि माटे
जुठ पण नहि अने साच पण नहीं एवुं व्यवहारिक
चिंतववुं. साचा वचननुं आत्मानीसाथेजोम्वुं ते सत्य
वचनयोग, असत्यवचननी साथे आत्माने जोम्वुं
ते असत्यवचनयोग, कांइक सत्य अने कांइक अ-
सत्य एम मिश्रन्नाषा बोले ते सत्यासत्य वचनयोग,
हे देवदत्त चोपमी लाव ब्रह्मदत्त अमुक गाम गयो
एम बोलवुं अर्थात् आमंत्रण, याचना विगेरे करवु
ते सत्याअमृषावचनयोगजाणवो. औदारिक श-
रीरने योगे जे जीवनो व्यापार ते औदारिक काय-
योग, अने अपर्याप्तावस्थाए मनुष्य अने तिर्यंचने
कार्मण साथे मिश्र जे औदारिक पुजलजन्य व्या-
पारने औदारिक मिश्रयोग जाणवो. वैक्रिय शरीरने

योगे जे जीवनो व्यापार ते वैक्रिययोग अने देवता तथा नारकीने अपर्याप्तावस्थाए कार्मग साथे मिश्र जे वैक्रिय पुद्गल अथवा मनुष्यादिकने उत्तर वैक्रिय करतां ज्या सुधी तेनीपर्याप्तिपुरीथइनथी त्यां सुधी औदारिक पुद्गल साथे वैक्रिय पुद्गल मिश्र होय तेनाथी थतो जीवनोव्यापार ते वैक्रियमिश्रयोग जाणवो. आहारक शरीरनेयोगे जे जीवनो व्यापार ते आहारक काययोग अने आहारकशरीर करतां ज्यां सुधी तेनीपर्याप्तिपुरीकरीनथी त्यां सुधी औदारिक शरीर साथे आहारक मिश्र होय तेनाथी थतो जे जीवनो व्यापार ते आहारकमिश्रयोग जाणवो. सातमुं कार्मण काययोग एटले कर्मदळ साथे आत्मप्रदेशनुं मळवुं ते कार्मण शरीर कहीए तेणे करी परभवादिकथी आगमन शक्ति तेनुं नाम कार्मणकाययोग जाणवो, तैजस शरीर अने कार्मण शरीर सर्वदा होय तेथी तैजस काययोग मांहेज गण्यो छे. एम जाणवुं.

देवताना तेर दंडक, नारकीनो एक दंडक एम

चौद दंरुके मनना चार, वचनना चार तथा वैक्रिय-काययोग, वेक्रियमिश्रकाययोग अने कार्मणकाय-योग ए त्रण योग कायाना मळीने अगियार योग कह्यां ठे. तिर्यंचना दंडके एक आहारककाययोग अने बीजो आहारक मिश्रकाययोग वर्जीने बाकीना तेर योग कह्यां ठे, गर्न्नजमनुष्यना दंरुकनेविषे पंदर योग होय ठे. बेइंड्रिय, तेइंड्रिय अने चौ-रिंड्रियना दंरुके एक औदारिककाययोग, बीजो औ-दारिक मिश्रकाययोग, त्रीजो कार्मणकाययोग अने चोथो असत्यामृषावचनयोग एम चार योगकह्यां ठे. वाउकायना एकदंरुकनेविषे एक औदारिककाययोग, बीजो औदारीकमिश्र काययोग, त्रीजो वैक्रियकाय-योग, चोथोवैक्रिय मिश्र काययोग,अने पांचमो कार्म-णकाययोग एम पांचयोग कह्यां ठे. पृथ्वीकाय, अप-काय,तेउकाय अने वनस्पतिकायना दंरुके एक औदा-रिक काययोग, बीजो औदारिकमिश्रकाययोग अने त्रीजो कार्मण काययोग एम त्रणयोगकह्यां ठे, सिद्धना जीवो अयोगी ठे. ॥ इति योगद्वार. ॥

अथ उगणीसमुं उपयोग द्वार.

उपयोग–वस्तुस्वरुपने उळखवा, जाणवा, प्रकाशवाने विषे जेउपयोगीहोय तेनुंनाम उपयोग ए जीवनुंलक्षण जीवस्वभावचेतनारुपजाणवुं, ते उपयोग साकार अने निराकार एम बे प्रकारनो छे तेमां दरेकवस्तुने नियमेकरीग्रहणकरवी एज तेनो परिणामरुपआकार तेजेनेकरीनेथाय ते पांचज्ञान अने त्रणअज्ञानरुप आठ प्रकारे साकार उपयोग जाणवो. अने ए लक्षणोथीभीन्न उपयोग ते निराकारचार प्रकारनां दर्शनरुपजाणवो. साकारने निराकार वंने मळीने वार प्रकारनां उपयोग कह्यां छे.

मनुष्यना दंडके वारउपयोगहोयछे. नारकीनो एकदंडक, तिर्यंचपचेंद्रियनो एकदंडक तथा देवताना तेरदंडक ए पंदरदंडकनेविषे केवळज्ञान, केवळदर्शन अने मनःपर्यव ज्ञानविना बाकीना नवउपयोगहोयछे. बेइंद्रिय तथा तेइंद्रियना दंडके एक मतिज्ञान बीजुं श्रुतज्ञान त्रीजुं

मतिअज्ञान चोथुं श्रुत अज्ञान अने पांचमुं अचक्षु दर्शन ए पांच उपयोग होय, अने चौरिंद्रियना दंडके ए पांच उपयोगनीसाथे एक चक्षुदर्शनसहीत छ उपयोग होय छे, पृथ्वीकायादि पांच थावरना दंडके एक मतिअज्ञान बीजुं श्रुतअज्ञान अने त्रीजुं अचक्षुदर्शन एम त्रणउपयोग होय. समुर्छिम तिर्यंचने मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शन ए छ उपयोग कह्या छे. समुर्छिम मनुष्यने मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शन एम चार उपयोग कह्या छे. सिद्धना जीवने एक केवळदर्शन अने बीजुं केवळज्ञान ए बे उपयोग जाणवा. एक समये जीवने एक उपयोग होय. छदमस्थ जीवने पहेले समये दर्शन अने बीजे समये ज्ञान तथा केवळीभगवानने तो पहेले समये ज्ञान (विशेषावबोध) अने बीजे समये दर्शन (सामान्याव बोध) होय छे.

इति उपयोगद्वार.

अथ वीशमुं गुणस्थानकद्वार.

गुणस्थान–गुण जे जीवना ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि गुण तेनुं स्थान अशुद्ध, शुद्ध, शुद्धतर, शुद्धतम विगेरे अध्यवसायने गुणस्थानक कहेछे, जो पण जीवना असंख्याता अध्यवसाय स्थानक भेदे असंख्य गुणस्थानक होयछे तो पण स्थुल व्यवहारे चौद गुणस्थानक कह्यां छे तेनां नाम १ मिथ्यादृष्टि गुणस्थानक, २ सास्वादन गुणस्थानक ३ मिश्रदृष्टि गुणस्थानक, ४ अविरति सम्यक् दृष्टि गुणस्थानक, ५ देशविरति गुणस्थानक, ६ प्रमत्त संयत गुणस्थानक, ७ अप्रमत्तसंयत गुणस्थानक, ८ निवृत्ति अथवा अपूर्व करण गुणस्थानक, ९ अनिवृत्ति–बादर संपराय गुणस्थानक, १० सूक्ष्म संपराय गुणस्थानक, ११ उपशांतमोह वीतराग गुणस्थानक, १२ क्षीणमोह वीतराग गुणस्थानक, १३ सजोगी गुणस्थानक, १४ अयोगी केवळी गुणस्थानक एम चौद गुणस्थानक जाणवां.

मिथ्यात्व एटले जीन वचनथी विपरीत दृष्टी, जेम धंतुराना बीज खाधे थके श्वेत वस्तुने पण पी·

ळीवस्तु जाणे छे तेम मिथ्यात्व मोहनीयना जोरथी रागद्वेष मोहादिक अढार दोषे सहीत अथवा संसारना हेतु एवा स्त्री हथियार वगेरे चिन्हे करीने सहीत होय तेने पण देवकरी माने धनधान्य स्त्री वगेरेमां आसक्त परिग्रहादिक गुरुना लक्षणे हीनने गुरु करी माने हिंसादिक अधर्मने धर्म करी माने एने मिथ्यात्व कहीए. एवा मिथ्यात्व उदयवंत जीव पण कोइक देखादेखीए, कोइ सुगतिनी अभिलाषे तथा कोइ भद्रकजीव मोक्षहेतु क्रिया करे माटे तेने मिथ्यात्व गुणस्थानक कहीए अथवा एकांशे घटादिकनी मान्यता अविरुद्ध पण होय ते कारणे अने अक्षरनो अनंतमो भाग जीवने सदा सर्वदा उघाडो रहे अवराय नहि ते गुणने लीधे पण मिथ्यात्व उदयवंत जीवने मिथ्यात्व गुणस्थानक कह्युं छे. औपशमिक सम्यक्त्व वंत जीव अनंतानु बंधी कषायना उदये औपशमिक वमता क्षीरना स्वाद सरखो भाव मिथ्यात्व गुणस्थानक पाम्या पहेला जे जीवने होय ते सास्वादन सम्यक्दृष्टी गुणस्थान बीजुं जाणवुं.

मिश्रमोहनीना उदयथी जीवने रुची के अरुची प-
चन्ने न होय एवा जे अध्यवसाय ते मिश्रदृष्टी गुण-
स्थानक त्रीजुं जाणवुं. विरति गुण जाणतो छतो पण
अप्रत्याख्यान कषायोदये विरति आदरी न शके पण
तत्वरुची, सम्यक्त्ववंत जीनवचन यथार्थस्थितपणे
परिणमे तेनुं नाम अविरति सम्यक्‌दृष्टी गुणस्थानक
चोथुं जाणवुं. प्रत्याख्यानी कषायोदये सर्व विरति-
पणुं तो न आदरी शके, पण कांइक अंसे सावद्य
योगनी विरति करे. जेम निरपराध, निरपेक्ष, संक-
ल्पी, त्रसजीवने न हणवो, इत्यादिक सम्यक्त्व
सहीत अध्यवसाय अथवा सम्यक्त्वसहीत एक
नवकारसी करे एवा अध्यवसाय ते देशविरतिसम्य-
क्‌दृष्टीगुणस्थानक पांचमुं जाणवुं. देशविरतिगुण
स्थानकथी अनंतगुण विशुद्ध सर्व विरतिरुप चारित्रना
अध्यवसाय पण प्रमादेकरीनेसहीतहोय तेनुं
नाम प्रमतसंयत गुणठाणु छठु जाणवुं. प्रमादपांच
प्रकारेछे, मद, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा,
ते पांचेप्रमादथीरहीत अनंतगुणविशुद्ध, निश्चय

चारीत्रे स्थिरतारुप अध्यवसाय ते सातमुं अप्रमत्त संयतनामनुं गुणस्थानक जाणवुं. पूर्वे नहि पामेला एवा अत्यंतविशुद्धअध्यवसायेकरी चारीत्रमोहनीनी एकवीस प्रकृति उपशमाववा अथवा खपाववाने अर्थे रसघात, स्थितिघात, गुणश्रेणी, गुणसंक्रम अने अपूर्वस्थितिबंध ए पांचवाना धुरसमयथी करे ते आठमुंअपूर्वकरणगुणस्थानक जाणवुं; अथवा एक समये अनेकजीव ए गुणस्थानकेचढे पण अध्यवसाय, शुद्ध, शुद्धतरादिके निवृत्ति एटले फेरफार होय माटे ते आठमागुणस्थानकने निवृत्तिगुणगुणस्थानक पण कहे छे. नवमे गुणस्थानके एक समये घणा जीव चढे पण तेउना अध्यवसायमां फेरफार न होय माटे तेनुं नाम अनिवृत्तिगुणस्थानक अथवा बादर एटले मोटाखंड अने संपराय एटले कषायना आ गुणस्थानके जीव करे एटले कषायना उपशमाववाके खपाववाने अर्थे घणाखंडकरे तेथी तेनुं नाम बादरसंपरायनामा नवमुंगुणस्थानक जाणवुं. सूक्ष्म छे संपराय एटले किट्टीकृत लोभकषायनो

उदय ज्यां ते सूक्ष्म संपराय नामे दशमुं गुणस्थानक जाणवुं. जेम मेलवाळुपाणी शान्तथवाथी मेल निचे बेसे ने पाणीनिर्मळथाय अथवा जणाय तेम ज्यां मोहनीकर्मनोउपशमथाय तेनुंनाम उपशांतमोह गुणस्थानक अगीयारमुं कह्युं छे. पाणीमां मळ छे ते पाछुं कोळावाथी अवस्य मलीन थाय, तेम आ गुणस्थानकपामेलाजीवने कषाय सत्तामां छे तेथी त्यांथी अवस्य पडेज एम जाणवुं, सर्व मोहनीप्रकृतिक्षयथतां, सत्तामांथी पण मोहनीकर्म टळीजतां अत्यंत विशुद्धअध्यवसायस्थानक छे ज्यां तेनुं नाम क्षीणमोहगुणस्थानक बारमुं जाणवुं. बारमागुणठाणेथी कोइजीव पडे पण मरणपामे नहि. मन, वचनने काययोगसहीत वर्ते अने घाती कर्मनाक्षयथकी केवळज्ञान होय ते सयोगी केवळी गुणस्थानक तेरमुं जाणवुं. त्रणे योगनो रोध करे एटले बादर मनवचनने कायाना व्यापारने अन्नावे, मेरुपर्वतनी पेठे निःप्रकंप शैलेसीकरणकरतां, अयोगी केवळी गुणस्थानक चौदमुं जाणवुं. ते चौदमागुण-

स्थानकना छेल्ला समये जीव ऋजु श्रेणीए मोक्ष प्रत्ये पामे छे.

पहेला मिथ्यात्व गुणस्थानकनीस्थिति अभव्यनी अपेक्षाए अनादीअनंत अने भव्यनीअपेक्षाए अनादीसान्त तथा समकीतथी पडेला जीवनी अपेक्षाए सादीसान्त तेथी जघन्यथी अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्ट देशेउणी अर्धपुद्गल परावर्त्त जेटली कही छे. बीजा सास्वादन गुणस्थानकनी स्थिति जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी छ आवलीका जाणवी. त्रीजा गुणस्थानकनी स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्टथी पण अंतरमुहुर्त जेटली कही छे. चोथा अविरति सम्यक्गुणस्थानकनी स्थिति जघन्य अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमथी झाझेरी कही छे. पांचमुं देशविरति गुणस्थानक छट्ठु प्रमतगुणस्थानक, अने तेरमुं सयोगीगुणस्थानक ए दरेक गुणस्थानकनी स्थिति जघन्य अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्ट देशे उणपूर्व क्रोड वर्षनी कही छे. सातमुं अप्रमत, आठमुं अपूर्वकरण, नवमुं अनिवृत्तिबादरसंपराय,

दशमुं सुक्ष्म संपराय अने अगियारमुं उपशांत मोह गुणस्थानकनी स्थिति जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अंतरमुहुर्त दरेकनी कही छे. बारमा क्षीणमोह गुणस्थानकनी स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्टथी पण अंतर मुहुर्तनी जाणवी. चौदमा अयोगीकेवळीगुणस्थानकनी स्थिति पांचह्रस्वाक्षर उच्चारण काळ जेटली कही छे.

दरेक गुण स्थानके लेश्या, योग, उपयोग, बंध, उदय, उदीरणा अने सत्ता कहे छे. मिथ्यात्वादिक प्रथमना छ गुणस्थानके सर्व छए लेश्याहोयछे; अहीयां प्रत्येकलेश्याना असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण अध्यवसायस्थानक होय छे ने तेथी प्रमत्त गुण स्थानके पण कांइक कृष्ण लेश्याना अध्य वसाय होय माटे कांइ वीरोध जाणवो नही. सातमा अप्रमत गुणस्थानके, तेजो, पद्म अने शुक्ल ए त्रण लेश्या होयछे.आठमा अपुर्व करणगुणस्थानकथी तेरमां गुणस्थानक सुधी एक शुक्ल लेश्या कहीछे अने चौदमुं अयोगी गुणस्थानक अलेशी कह्युं छे. पहेला मिथ्यात्व

गुणस्थानके अने चोथा अविरतिसम्यक्दृष्टी गुण-स्थानकने विषे, आहारकर काययोग अने आहारक मिश्र काययोगविना बाकीना तेरयोग कह्यां छे. त्रीजामिश्र गुणस्थानके चारमनना, चारवचनना अने औदारिक काययोग तथा वैक्रिय काययोगसहित दशयोग कह्यां छे. पांचमा देशविरति गुणस्थानके चार मनना, चार वचनना अने औदारिक काययोग, वैक्रियकाययोग तथा वैक्रियमिश्रकाययोग सहित अगियार योग कह्यां छे. उपर कहेलां अगियार योगनी साथे आहारककाययोग अने आहारकमिश्र काययोग सहीत तेरयोग छठ्ठा प्रमत्त गुणस्थानके, अने तेमांथी आहारकमिश्र अने वैक्रियमिश्रविना अगियार योग अप्रमत्त गुणस्थानके कह्यां छे. आठमा अपूर्वकरण गुणस्थानकथी बारमा क्षीण मोह गुणस्थानक सुधी दरेक गुणस्थानके, चारमनना, चार वचनना अने एक औदारीक काययोग मळी नवयोग होय छे. तेरमा सयोगी केवळी गुणस्थानके, एक सत्य वचनयोग, बीजु असत्यामृषा वचनयोग,

त्रीजु सत्यमनयोग, चोथु असत्यामृषामनयोग, पांचमुं औदारीककाययोग, छठु औदारीकमिश्र काययोग अने सातमुं कार्मणकाययोग एम सात योग कह्यां छे. चौदमा अयोगी गुणस्थानके योगने रुंधे माटे एके योग होय नही अयोगी छे माटे एम जाणवुं. पहेला मिथ्यात्व गुणस्थानके अने बीजा सास्वादन गुणस्थानके, त्रण अज्ञान अने चक्षु दर्शन, अचक्षुदर्शन तथा अवधिदर्शन सहीत छ उपयोग सिद्धांतने विषे कह्यां छे. त्रीजा मिश्र गुणस्थानके त्रण अज्ञान ज्ञानेकरीमिश्र अने त्रण दर्शन एम छ उपयोग होय छे. अविरति सम्यक् गुणस्थानके अने देशविरति गुणस्थानके, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने चक्षु, अचक्षु तथा अवधिदर्शन सहीत छ उपयोग कह्या छे, छठा प्रमत्तगुणस्थानकथी बारमा क्षीणमोहगुणस्थानक सुधी पूर्वोक्त छ उपयोगनी साथे मनःपर्यवज्ञान सहीत, सात उपयोग कह्या छे. तेरमे अने चौदमे गुणस्थानके केवळ ज्ञान अने केवळ दर्शन एवं बे उपयोग जाणवा ? ज्ञाना

वरणीयकर्म, २ दर्शनावरणीयकर्म, ३ वेदनीय कर्म, ४ मोहनीय कर्म, ५ आयुकर्म, ६ नामकर्म, ७ गोत्रकर्म अने ८ अंतराय कर्म एवं आठ कर्म छे. प्रथम मिथ्यात्व गुणस्थानकथी सातमा अप्रतमगुणस्थानक सुधीना सातगुणस्थानकमांथी एक मिश्रगुणस्थानक वर्जी बाकीना छए गुणस्थानके सातके आठ कर्म बांधे; आयु बंधकाळे आठ अने आयु न बांधतो होय त्यारे सातकर्म सदा सर्व जीव बांधे त्रीजुमिश्र गुणस्थानक, आठमुं अपूर्व करण अनेनवमुं अनिवृत्ति बादरगुणस्थानक एवं त्रण गुणस्थानके आयु कर्मविना बाकीना सात कर्म बांधे. दशमा सुक्ष्मसंपरायगुणस्थानके एक आयु कर्म अने बीजु मोहनीय एवे कर्म वर्जी बाकीना छ कर्म बांधे. अगियारमुं उपशांतमोह, बारमुं क्षीणमोह अने तेरमुं सयोगी केवळी एवं त्रण गुणस्थानके एक साता वेदनीजबांधे अने चौदमुअयोगीगुणस्थानक तो अबंधक छे त्यां कोइ जीवकर्म बांधे नहि एम कह्युं छे. मिथ्यात्वथी मांडी सूक्ष्मसंपरायगुणस्थानक सुधी आठे कर्मनो

उदय, अगियारमे तथा बारमे गुणस्थानके मोहनीय कर्मविना बाकीना सात कर्मनो उदय अने तेरमे तथा चौदमे गुणस्थानके, अघाती एवा वेदनीय, आयुः, नाम अने गोत्र एवं चार कर्मनो उदय होय छे. मिथ्यात्वथी प्रमत्त सुधी छ गुणस्थानकमांथी एक मिश्र गुणस्थानक वर्जी बाकीना पांच गुणस्थानके, सातके आठ कर्मनी उदीरणा, मिश्रगुणस्थानके आठ कर्मनी उदीरणा, अप्रमत्त, अपूर्व अने अनिवृत्ति गुणस्थानके आयुकर्म अने वेदनीय कर्मविना छ कर्मनी उदीरणा, सूक्ष्म संपराय गुणस्थानके छ अथवा पांच कर्मनी उदीरणा अने उपशांतमोहगुणस्थानके, वेदनीय, आयुः अने मोहनीयविना बाकीना पांच कर्मनी उदीरणा होय छे, तथा बारमा क्षीण मोह गुणस्थानके उपर कहेलां त्रण कर्मविना पांचकर्मनी अने आवळीका थाकते ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय अने अंतराय कर्मनी उदीरणाटळे तेथी बाकीना एक नामकर्म अने बीजुं गोत्र एवं बे कर्मनीउदीरणा होय तथा तेरमा सयोगीगुणस्थानके पण ते नाम अने गोत्र

कर्मनी उदीरणा कही छे. चौदमुं अयोगी गुणस्थानक अणुदरीक होय त्यां एके कर्मनी उदीरणा होयनहि. पहेला गुणस्थानकथी मांडी अगियारमां गुणस्थानक सुधी आठ कर्मनी सत्ता, बारमा गुणस्थानके मोहनीयकर्म वर्जी सात कर्मनी सत्ता अने तेरमे तथा चौदमे गुणस्थानके वेदनीय कर्म, आयुः कर्म, नाम कर्म अने गोत्रकर्म ए चार अघाती कर्मनी सत्ता कही छे.

पृथ्वी कायादि पांच एकेंद्रियना दंडके एक मिथ्यात्व गुणस्थानक सिद्धांतने विषे कह्युं छे. बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरिंद्रियनादंडके मिथ्यात्व अने सास्वादन एम बे गुणस्थानक लाभे. नारकी, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिकने विषे पहेलेथी चार गुणस्थानक लाभे पण एमां एटलुं विशेष छे के अनुत्तर विमानवासी जीवोने एक अविरति समकीत दृष्टि चोथु गुणस्थानकज होयछे. गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रियने पहेलेथी देशविरति पर्यंत पांच गुणस्थानक अने मनुष्यना दंडके चौद गुणस्थानक कह्यां छे.

॥ इति गुणस्थानक द्वार ॥

अथ एकत्रीसमुं आहारद्वार.

आहार त्रण प्रकारनां छे ओजाहार, रोमाहार अने प्रक्षेपाहार तेमां ओज–तैजस शरीर, तेणे करीने जे आहारले तेनुं नाम ओजाहार अर्थात् जीव परभवे जतां प्रथमसमये तैजस अने कार्मण शरीरवडे औदारिक शरीर योग्य पुद्गलनो आहार करे अने बीजा समयथीमांडी, कार्मण साथे औदारिक मिश्र कायवडे आहार करे ते, शरीर पर्याप्ति पुरी थाय त्यां सुधीजे आहार ते सर्व ओजाहार जाणवो.लोमाहार स्पर्शेंद्रिये करीने जीवजे आहार पुद्गल ग्रहण करे तेनुं नाम लोमाहार जेमके–तेलादिक शरीरे चोळवाथी अंदर गरमी तथा चिकाश आदि आवे अथवा उष्ण काळने विषे पाणीना स्पर्शवडे एटले न्हावाथी अगर भीनुं कपडुं शरीर उपर राखवाथी शीतळ पणाएकरी तृषा गरमी अने दाह विगेरे उपशमे एम जे स्पर्शेंद्रियवडे आहार ते लोमाहार जाणवो. प्रक्षेपाहार जे कोळीआ विगेरे करी कोठामां

(पेटमां) प्रक्षेपाय (नखाय) अर्थात् मुखप्रक्षेपे जे आहार ते त्रीजो प्रक्षेपाहार जाणवो.

एकेंद्रियनापांच, देवतानातेर, अने नारकीनो एक उगणीस दंडके एक उजाहार अने वीजो लोमाहार होय छे. विगलेंद्रियना त्रण, गर्भज तिर्यंचनो एक अने गर्भज मनुष्यनो एक एम पांच दंडकने विषे, उजाहार, लोमाहार अने प्रक्षेपाहार ए त्रणे प्रकारना आहार कह्यां छे. एकेंद्रिय, विगलेंद्रि, अने गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्यनामळीदश दंडके सचित्त, अचित्त, अने मिश्र आहार होय छे एटले कोइ वार सचित्त, कोइवार अचित्त अने कोइवार कांइ सचित्त कांइ अचित्तरुप मिश्र एम त्रण प्रकारना आहार होय छे अने नारकी तथा देवताना दंडके सदा सर्वदा अचित्तज आहार कह्यो छे. शरीर पर्याप्ती पुरी करे त्यां सुधी सर्व अपर्याप्ता अवस्थाए जीवोने उजाआहार होय छे अने शरीरपर्याप्ति पुरी कर्यां पछी लोमाहार होय; ते लोमाहार असंज्ञीने अजाणता अने संज्ञीने जाणता अजाणता तथा देव-

ताने मनोज्ञपणे अने नारकीने अमनोज्ञपणे परिणमेछे.

॥ इति आहारद्वार ॥

अथ बावीसमुं आहारनी इच्छाद्वार.

पृथ्वीकायादिक सर्व एकेंद्रियने आहारभिलाष सदा सर्वदा निरंतर होयछे. बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय अने नारकीनाजीवोने एकवार आहार लीधा पछी वधारेमां वधारे अंतरमुहुर्तने आंतरे फरी आहारनी इच्छा थाय. पचेंद्रियतिर्यंचगर्भजने वधारेमां वधारे बे अहोरात्री अने मनुष्यने त्रण अहोरात्रीने आंतरे स्वाभाविक एटले तापरोगादिकना अभावे आहारनी इच्छाथायछे. आ उत्कृष्ट आहार इच्छा प्रमाण देवकुरु तथा उत्तरकुरुक्षेत्रना तथा भरत अने ऐरवत्तक्षेत्रनेविषे पहेला आराना मनुष्य तथा तिर्यंचनीअपेक्षाएजाणवो. भुवनपति, व्यंतर जोतीषि अने वैमानिकनादंडके, मनगमतो अने सर्व इंद्रियोने आल्हादकारी आहार परिणमेछे. माटे आयुष्यनाकाळमाननीअपेक्षाए आहारनी इच्छानो काळमान कह्यो छे. दशहजार वरसना आ-

युष्यवाळा देवताने एक अहोरात्रीनेआंतरे आहारनीइच्छाथाय, दशहजारवरसथी समयाधिकथी मांडीने एक सागरोपमथी ऊंचा आयुष्यवाळा देवोने वेथी नव दिवसना आंतरे आयुष्यना प्रमाण प्रमाणे आहारनी इच्छानुंकाळमान जाणवुं. एक सागरोपमना आयुष्यवाळा देवोने एक हजारवरसे आहारनीइच्छा वे सागरोपमनाआयुष्यवाळाने वे हजारवरसेआहारनी इच्छा, त्रण सागरोपमना आयुष्यवाळाने त्रण हजारवरसे आहारनी इच्छा एम जेटला सागरोपमनुं आयुष्य होय तेटला हजार वरसे देवोने आहारनी इच्छा थाय ते छेवट अनुत्तर विमानवासी देवोनुं तेत्रीश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष्यछे तेदेवोने तेत्रीशहजारवरसे उत्कृष्ट आहारनीइच्छानो काळमान जाणवो एम सर्व देवोने आयुष्य प्रमाणनी अपेक्षाए आहारनी इच्छानो काळमान कह्यो छे.

॥ इति आहार इच्छाद्वार ॥

अथ त्रेवीशमुं किमाहारद्वार.

पूर्व, पश्चिम, उत्तर अने दक्षिण ए चार तथा उर्ध्व (ऊंची) अने अधो (नीचि) मळी ठ दिशाउ मांथी जीव केटली दिशाउनो आहार ग्रहण करे ठे एम जे कहेवुं ते किमाहार.

एक अणाहारक ने बीजा आहारक एम जीवो बे प्रकारना ठे. तेमां परभवजतां विग्रहगतीए जीव एक समयथीमांनी वधारेमां वधारे चारसमय सुधी अणाहारी होयअने केवळज्ञानी कर्म खपाववानेआठ समयनो केवळी समुद्घातकरे तेमां त्रीजे चोथे अने पांचमे समये केवळ कार्मणयोग होय, त्यां ते पण त्रण समय सुधी अणाहारी होय अने चौदमे गुण-स्थानके सेलेशीकरणे जीव अंतरमुहुर्त प्रमाण अणा-हारी होय अने सिद्धाजीव अनंतकाळ सदासर्वदा अणाहारी होय ठे, उपर कहेला अणाहारी जीव सिवाय बाकीना सर्व जीवो आहारक जाणवा.

आहारक एवा चोवीसदंडकनाजीवो ठए दिशाओथी आहारग्रहणकरे ठे, पण एमां एटलुं

विशेष छे, के, एकेंद्रियना पांच दंडकना जीवोतो, त्रण, चार, पांच अथवा छएदिशाओनो आहार ग्रहण करेछे, कारणके चौदराजलोक, सुक्ष्म एकेंद्रिथी जर्यो छे, अने चौदराजलोक पछी अलोक छे, तेमा पुद्गलादिकनहिहोवाथी आहारछे नहि, माटे जे शुक्ष्मजीवो लोकनामध्यन्नागमां छे तेने तो छए दिशाओनो आहार होय, पण जे लोकने छेरू रहेला छे, एवा जीवोने उपर अलोक होवाथी उर्ध्वदिशीनो आहार होय नहि माटे ते जीवोने उर्ध्वदिशीसिवाय वाकीनी पांच दिशानो आहार होय; एवीज रीते लोकना छेरू रहेला जीवोने वेदिशीए अलोक होय तेने चारदिशानो अने जेने त्रण दिशाएअलोक होय तेने वाकीनी त्रणदिशानो आहार होय एम जाणवुं.

॥ इति किमाहार द्वार ॥

अथ चोवीशमुं जीवन्नेद द्वार.

जीवन्नेद—कर्मगति जात्यादिकनी अपेक्षाए जीवनी विशेप व्याख्या तेनुं नाम जीवन्नेद. जीवना मुख्य वे न्नेद छ, एक मुक्तिना अने वीजा संसारी.

आठे कर्मथी मुकाणा मुक्तथया ते मुक्तिना अने कर्म करीसहीत, चारगतिरुपसंसारमांपरिभ्रमणकरे छे ते संसारीजीवोजाणवा.

मुक्तना–सिद्धना जीवोना भेद–१ जीनसिद्ध, २ अजीनसिद्ध, ३ तिर्थसिद्ध, ४ अतिर्थसिद्ध, ५ गृहस्थलिंगेसिद्ध, ६ अन्यलिंगेसिद्ध, ७ स्वलिंगेसिद्ध, ८ स्त्रिलिंगेसिद्ध, ९ पुरुषलिंगेसिद्ध, १० नपुंसकलिंगेसिद्ध, ११ प्रत्येकबुद्धसिद्ध, १२ स्वयंबुद्धसिद्ध, १३ बुधबोधित सिद्ध १४ एक समये एक सिद्ध अने १५ एक समये अनेक सिद्ध; एम जेवी पदवि अने जेवा चिन्हादिके जीवसिद्धि पदने पाम्या मोक्षे गया ते अपेक्षाए गणता सिद्धनाजीवोना पंदर भेद कह्यां छे.

सर्व संसारीजीवोना एक, बे, त्रण, चार, पांच, छ, अने चौद, बत्रीश तथा पांचसेंने त्रेसठ भेदपण जुदी जुदी अपेक्षाए शास्त्रने विषे कह्या छे, ते आ प्रमाणे–श्रुतज्ञाननो अनंतमो भाग सर्व संसारी जीवने सदा सर्वदा उघाडो होय अवराय नहि ते चेतना लक्षणे करी सर्व संसारी जीवो एक विध–एक

प्रकारना जाणवा. स्थावरनामकर्मोदयेकरी जे स्थिर रहे एटले पोतानी शक्तिए हाली चाली शके नहि ते स्थावर अने त्रसनामकर्मोदये जीव त्रसपणुपामे हालीचालीशके तडकेथी छांए आवे ते त्रस. एवं एकत्रसअनेवीजास्थावरमळी सर्व संसारीजीवोना वे भेदथायछे, पुरुष, स्त्री अने नपुंसक वेदनी अपेक्षाए त्रण भेद, नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अने देवगतिए करी चारभेद, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रिय तथा पंचेंद्रिय मळी इंद्रियोनी अपेक्षाए पांच अने पृथ्विकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय वनस्पतिकायने त्रसकाय एम कायनी अपेक्षाए सर्व संसारी जीवोना छ भेद कह्यां छे. १ सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्ता, २ सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ता, ३ बादर एकेंद्रिय अपर्याप्ता, ४ बादर एकेंद्रिय पर्याप्ता, ५ बेइंद्रिय अपर्याप्ता, ६ बेइंद्रिय पर्याप्ता, ७ तेइंद्रिय अपर्याप्ता, ८ तेइंद्रीय पर्याप्ता, ९ चौरिंद्रिय अपर्याप्ता, १० चौरिंद्रिय पर्याप्ता, ११ असंज्ञी पचेंद्रिय अपर्याप्ता, १२ असंज्ञी पचेंद्रिय पर्याप्ता, १३ संज्ञी

पचेंद्रिय अपर्याप्तां अने १४ संज्ञी पचेंद्रिय पर्याप्ता एम सर्व संसारी जीवोना चौद स्थानक—भेद—कर्म ग्रंथादिकने विषे कह्यां छे. पृथ्वीकायादिक स्थावरना पांच सूक्ष्म अने पांच बादर मळी दश, प्रत्येकवनस्पतिकायनो एक, विगलेंद्रियना त्रण, अने संज्ञी तथा असंज्ञी पंचेंद्रियनां बे भेद एम सर्वेमळीने सोळ भेदने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता करतां बत्रीश भेद पण प्रकारांतरे गण्या छे.

हवे जीवना पांचसें त्रेशठ भेद कह्यां छे ते आ प्रमाणे;—नारकीना सात भेद छे तेने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता करतां चौद भेद थाय. पांच सुक्ष्म स्थावर, पांच बादर स्थावर, एक प्रत्येकवनस्पतिकाय अने त्रण विगलेंद्रिय एवं चौद तथा पांच समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय ने पांच गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एवं दशमळीने चोवीश भेद थाय, तेने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता करतां तिर्यंचना अमताळीस भेद थाय. एकसोने एक गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणतां बसेंने बे अने समुर्छिम - मनुष्यना एकसोने

एक अपर्याप्तामळी त्रणसेंने त्रण मनुष्यना भेद थाय. दश भुवनपति आठ व्यंतर, आठवाण व्यंतर, पंदर परमाधामी, दश तिर्यग्जृंभक, पांच चरज्योतिषी, पांच स्थिरज्योतिषी, नवलोकांतिक, त्रणकिल्विषिआ, बार देवलोक, नवग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तरविमाननां मळीने नव्वाणुं तेने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता गणतां एकसोने अठ्ठाणुं भेद देवताना थाय. एवी रीते चौद नारकीना, अडतालीस तिर्यंचना, त्रणसेंने त्रण मनुष्यना अने एकसोने अठ्ठाणुं देवताना मळी सर्व संसारी जीवोना पांचसेंने त्रेशठ भेद कह्यां छे.

पृथ्वीकायना दंडके चार, अप्कायना दंडके चार, तेउकायना दंडके चार, वाउकायना दंडके चार तथा वनस्पतिकायना दंडके छ जीवभेद जाणवा, बेइंद्रियना दंडके बे, तेइंद्रियना दंडके बे, चौरिंद्रियना दंडके बे अने तिर्यंच पंचेंद्रियना दंडके वीश जीवभेद कह्यां छे. मनुष्यना दंडके त्रणसें ने त्रण ने भेद देवताना दंडके एकसोने अठ्ठाणुं जीवभेद पामीए.

॥ इति जीवभेद द्वार ॥

अथ पचीसमुं वेदद्वार.

वेद–जे अभिलाष करवो ते वेद. त्रण प्रकारेछे स्त्रीवेद, पुरुषवेद अने नपुंसक वेद ते दरेकना वळी वब्बे भेद छे, १ द्रव्यवेद अने २ भाववेद.

दाढी, मुछादिक मुख पुरुषाकार, पुरुषचिन्ह, वीर्यपतन, दृढता अने धैर्यादि लक्षणे युक्त ते द्रव्य पुरुषवेद तथा जेम श्लेष्मनाजोरे खटाशनी इछा थाय खटाश भावे तेम जे कर्मना उदयथी स्त्रीनुं दर्शन, आलिंगन, मैथुनादिकनी इछा थाय ते भावपुरुष-वेद. ते वेद घासना भडका जेवो जाणवो, जेम घासनी ज्वाला एकदम उठे पण पाछी तरत समाइ जायछे तेम पुरुषवेदी वेदना उदये विह्वल थाय पण कार्य सिद्धिए तरत शांत थाय. ते पुरुषवेद जाणवो.

स्तन, योनी प्रमुख अवयव सहित अने दाढी मुछादिक रहित ते द्रव्य स्त्रीवेद तथा जेम पित्तना जोरे मिष्टान्ननी इछा थाय मिष्ट भावे तेम जे कर्मना उदयथी पुरुष सुहामणो लागे, आलिंगन, मैथुनादिक अभिलाष उपजे ते भाव स्त्रीवेद. ते वेद वकरोनी

लींमीना अग्नि सरखो जाणवो, एटले जेम लींमीउ-नी अग्नि जेम जेम खोरीए तेम तेम विशेष दीपे घणीवार प्रज्वले तेम स्त्रीवेदी वेदनाउदये घणी प्र-ज्वले पुरुषनाकरस्पर्शादिके वधारे दीपे घणे कष्टे शांती थाय ते स्त्रीवेद जाणवो.

स्तनादिक स्त्री अवयवो अने दाढी मुछादिक पुरुष चिन्ह जेने होय नहि, कांइक स्त्रीनेमळती कां-इक पुरुषने मळती भाषा बोले, स्त्रीनीपेरे चाळा चेष्टा करे अने स्त्रीनी जेम कोमळता निर्बळतादिकेकरी सहीत होय ते द्रव्य नपुंसकवेद जाणवो तथा जेम पित्त श्लेष्मनाजोरे खारा खाटानी इछाथयाकरे खारुं खाटुं भावे एम जेकर्मनाउदयथी स्त्री अने पुरुष ए बन्ने सबंधि विषयाभिलाष उपजे ते भाव नपुंसक वेद जाणवो; ते वेदोदय नगर दाह सरखो छे, जेम नगर बलतुं होय तेमां रहेलां उकरडांदिक घणा काळ सुधी बळे तरत ओलवाय नहि, तेम नपुं-सकवेदी मोहाग्निज्वालाए जाज्वल्यमान घणा

काळे पण शान्तिने पामे नहि, अंतरंग वेदरुप अग्नि धुंधवातो रहे ते नपुंसक वेद जाणवो.

पांच स्थावर, त्रण विगलेंद्रिय अने नारकीना दंडके एक नपुंसक वेद होय, गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्यना दंडके त्रणे वेद होय, तथा देवताना तेर दंडके नपुंसक विना बाकीना बे वेद होय अने समुर्छिम तिर्यंच तथा समुर्छिम मनुष्यने एक नपुंसक वेद होय छे. गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने सुधर्मा तथा इशान देवलोकनादेवो कायसेवी, कायसेवाए तृप्ति पामे, त्रीजा अने चोथा देवलोकना देवो स्पर्शसेवी, स्तनभुजा आलिंगनादिकायस्पर्शे तृप्ति पामे. पांचमा अने छठा देवलोकना देवो रुपसेवी पोताने भोग योग्य देवीनारुप, हास्य कटाक्षादिकरुप देखीने तृप्ति पामे. सातमा अने आठमा देवलोकना देवो शब्दसेवी पोताने भोग योग्य देवीना गीत वाजींत्र हास्य नेपुर झंकारादि शब्द सांभळीने तृप्ति पामे. नवमां, दशमां, अगियारमां अने बारमां देवलोकना

देवो मनसेवी, एटले पोताने ज्ञोग योग्य देवी मनमांहे चिंतवे तेवारे ते देवी पोताना स्थानके बेठीथकीज शृंगारधरी ज्ञली बुरी काम चेष्टा मनमां चिंतवती ज्ञोगने माटे सावधान थाय तेवारे ते देवता त्यांज एटले पोताने स्थानके बेठा थका मनसंकल्पे परम सुख परम तृप्ति पामेठे. देवीउंनी उत्पत्ति बोजा देवलोक सुधी अने गमना गमन आठमा देवलोक सुधी ठे. स्पर्शसेवी, रुपसेवी अने शब्द सेवीने पण कायसेवीनी पेठे शुक्रपुज्ञल ठे; ते शुक्रपुज्ञल देवतानी शक्तिएकरीने देवांगनाना शरीर ने विषे शंक्रमे संचरे तेथी देवांगनाने संज्ञोग सुख उपजे ठे. ते शुक्रपुज्ञल वैक्रिय होवाथी गर्ज्ञ उपजे नहि. नवग्रैवेयक अने पांचअनुत्तरविमानना देवता अप्रवीचारा एटले विषय सेवा रहित ठे माटे मने करीने पण स्त्रीने प्रार्थे नहि माटे पराधिनरहित्त संतोषवंत सर्व विषय सेवी देवताउंथी पण अत्यंतसुखीया ठे.

काय सेवीथी अनंत गणु सुख स्पर्श सेवीने जाणवुं ने ते थकी अनंत गणु सुख रुपसेवीने ते थकी

अनंतगणुसुख शब्दसेवीने तथा ते थकी पण अनंतगणुसुख मनसेवीने अने ते थकी अनंतगणुं सुख अप्रवीचारीदेवोनेजाणवुं. उपर कहेला सर्व जीवोनासुखथी अनंतगणुं सुख गया छे राग अने द्वेष जेना एवा श्री वीतरागने जाणवुं.

॥ इति वेदद्वार ॥

अथ छवीसमुं कषायद्वार.

कषाय–(कष–आय)कष–संसार ने आय–लाभ एटले जेनाथी संसारनो लाभ थाय संसारनी परंपरावधे तेनुंनाम कषाय. अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी अने संज्वलन ए चार भेद कषायना जाणवा.

अनंतानुबंधी–अनंता संसारने वधारनार एवो क्रोध, मान, माया अने लोभ ते अनंतानुबंधी कषाय जाणवो. ए क्रोध पर्वतनी लींटी जेवो, मान पाषाणना थांभला जेवुं, माया वांशना मुळ जेवी, अने लोभ करमजनारंगजेवो जाणवो, अप्रत्याख्यानी कोइ पण पच्चखाणने उदय आववानदे थोडा पण पच्चखाणनी प्राप्ति न थाय एवो क्रोध, मान, माया अने लोभ ते

अप्रत्याख्यानीकषाय जाणवो. एक्रोध सुकेला तळावनी रेखा सरखो, मान हाम्हकाना थांन्नलासरखुं, माया मेंढानाशिंगम्हा सरखी अने लोन्न कादवना रंग सरखो जाणवो. प्रत्याख्यानी सर्वविरतिरुप पच्चखाणने आवरे, आववा नदे एवो क्रोध, मान, माया अने लोन्न ने प्रत्याख्यानी कषाय जाणवो. ए क्रोध रेतीनी रेखा सरखो, मान काष्टना थांन्नला सरखुं, माया वळदना मुतरनी रेखासरखी अने लोन्न काजळना रंग सरखो जाणवो. संज्वलन चारित्रीयाने पण लगारेक दीपे, उदय आवे एवो क्रोध, मान, माया अने लोन्न ते संज्वलन कषाय जाणवो. ए क्रोधपाणीनीरेखासरखो, मान नेतरना थांन्नला सरखुं, माया वांशनीछाल सरखी अने लोन्न हळदरना रंग सरखो जाणवो.

अनंतानुवंधी समकीतनो, अप्रत्याख्यानी देश विरतिनो, प्रत्याख्यानी सर्वविरतिनो अने संज्वलन कषाय यथाख्यातचारित्रनो घातकरनार छे. क्रोध मान, माया अने लोन्ननी अपेक्षाए जीवो सर्वथी थोम्हामानी, मानीथी विशेषाधिक क्रोधी, क्रोधीथी

विशेषाधिक मायावंत अने मायावंतथी विशेषाधिक लोजीजीवो कह्यां छे.

चोवीशे दंमके क्रोध, मान, माया अने लोज एम चारे कपाय होय छे, पण तेमां एटलुं विशेषके नारकीने क्रोध वधारे. तिर्यंचने माया वधारे मनुष्यने मान वधारे अने देवताउने लोज वधारे होय छे. एम कह्युं छे. ॥ इति कपायद्वार ॥

अथ सत्तावीसमुं संज्ञाद्वार.

संज्ञा–रुमा प्रकारनुं ज्ञान तेनुं नाम संज्ञा कहीए; ते संज्ञा बे प्रकारनी छे. एक ज्ञान संज्ञा अने बीजी अनुजवसंज्ञा. ज्ञान संज्ञा ते मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान अने केवळज्ञान; ते केवळज्ञानरुपसंज्ञा क्षायिक अने मतिआदिक सर्व संज्ञा क्षायोपशमिक छे. बीजी अनुजव संज्ञा ते पोतानांकरेलां शातावेदनियादि कर्मोथी उत्पन्न थाय छे ते जेमके आवस्तु मारे आहारयोग्यछे आ वस्तुथी मारुं पोषण थशे इत्यादिक एकेंडियादिकने पण अव्यक्तऽव्य शब्दार्थो लेख, ते अनुजव

संज्ञा. ते संज्ञा चार प्रकारे छे. आहारसंज्ञा, भय संज्ञा, मैथुनसंज्ञा अने परिग्रहसंज्ञा ए चार प्रकारे संज्ञा जाणवी; वली १ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ, ५ उंघ अने ६ लोक संज्ञा पण कही छे. ते उपरनी चार संज्ञामां मेळवता दश संज्ञा छे. बीजा ग्रंथोमां वळी १ सुख, २ दुःख, ३ मोह, ४ विति-गिछा, ५ शोक, अने ६ धर्म ए छ भेदवाली पण संज्ञा कहेली छे. ए संज्ञाउ ते पूर्वोक्त संज्ञाउ मांहे अंत-र्गत जाणवी.

नरकादिक चोवीसेदंडके सर्वजीवोने उपर कहेली चार अथवा दश संज्ञा होय छे. पृथ्वीकायादि जीवोने मन नथी तो पण आ कहेली संज्ञाउतो सर्व जीवोने होय. जेम वनस्पतिकायजीवो जळादिकना आहारवडे जीवे छे अने आवा प्रकारनी वस्तुउ मळे तो सारुं, आवस्तुथी मारुशरीरपुष्टथशे, एवो अवक्तव्य शब्दार्थो लेख, ते आहार संज्ञा जाणवी. लज्जामणी विगेरे केटलीएकवनस्पति मनुष्यना हा-थनो स्पर्शथवाथी संकोचीजाय छे ए भयसंज्ञा

जाणवी. नोलक चंपकादि वृक्षोने स्त्रीनो स्पर्शथवाथी प्रफुल्लीतथायछे अथवा तारुणीवृक्षनीपासे तारु वृक्ष होय तोज तारुनी फळे छे फळवाळी थाय छे ए मैथुन संज्ञाना लक्षण जाणवा. बील्व पलाशादि वृक्षो नीधान (धन) ना उपर उगे छे अथवा पोताना मुळीया वडे नीधानने वींटेछे नीधाननी आसपास विंटलाय छे ए परिग्रह संज्ञानुं लक्षण जाणवुं. कोकनद वृक्षने मनुष्यादिकनो पगलागवाथी हुंकारा करे छे ए क्रोध संज्ञानुं लक्षण जाणवुं. हुं छता आ लोको दुःखी केमथाय छे एवा अहंकारे करी रुदंती वृक्ष रुदन करे छे कारणके तेथी सुवर्णसिद्धि थाय छे, ए मानसंज्ञानुं लक्षण छे. वेलडीउ फळने पोताना पांदडा वडे ढांके छे, ए माया संज्ञाना लक्षण छे. अति तीव्र लोभनाउदये जीव धनउपरवृक्षथाय छे, अथवा कोइ मोटोफणीधर नागथइ धनની रक्षा करे छे, ए लोभ संज्ञाना भाव जाणवा. वेलडीउमार्ग तजी वृक्षने वींटलाय ए उघसंज्ञा, तथा कीडीउ श्रेणीबंध चालेछे, माकड एकदमनासेछे, अने

आ जवमां हजी मरण नथी आव्युं तो पण हुं मरी जइश ए जीवने जय लागे ठे ए सर्व पूर्वोक्त संज्ञाना जाव जाणवा. जीव जवोजवथी आहारादिक कृत्य वमे टेवाएलो ठे माटे अजाण पणे, असंज्ञीपणे अथवा तो संज्ञीपणे पण उपर कहेली सर्व संज्ञाए सहीत जीव होय ठे. जेम नरघांवगामनारमाणस अन्य व्यवसायमां होय तो पण तेनी आंगळीउं उंची नीची थाय ठे अथवा टकोरा वगामे ठे, तथा कापमनो वहेपारी, कापमने फामवाना व्यवशायथी रात्रे उंघमां पण अणजाणतां पोतानुं धोतीउं के अन्य वस्त्र फामे ठे कारणके ए हंमेशानी प्रवृत्तिनी टेव ठे, एम सर्व संज्ञाए जीवो देहममत्वेकरी आहारादिकथी टेवाएला होवाथी ज्ञानपण जो अजाण होय अज्ञानी होय तो पण तेमां प्रवृत्ति करे ठे एनुं नाम संज्ञा जाणवुं. ॥ इति संज्ञाद्वार ॥

अथ अठावीसमुं स्वकाय स्थिति द्वार.

स्वकाय स्थिति—(स्वकाय स्थिति) स्व पोताना, काय-समुह, अर्थात पृथ्वीना जीवोनो समुह ते पृ-

ब्बीकाय, पाणीना जीवोनी जातीरुप समुद्र तेने विषे फरीफरी मरणपामीने तेनी तेउकायमां उत्पन्न थाय, तो तेनीअपेक्षाए जे स्थिति काळमान तेनुं नाम स्वकाय स्थिति जाणवी.

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय अने वाउकाय ए चार एकेंद्रियना दंडके उत्कृष्टी स्वकाय स्थिति असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळनी अर्थात् पृथ्वीकायनो जीव मरणपामीने फरी तेजकायमां उपजे, पण पोतानी कायने मुके नहि तो असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळसुधी रहे. एमज अपकाय तेउकाय अने वाउकायने विषेपणजाणी लेवुं. वनस्पति कायनी स्वकाय स्थिति उत्कृष्टी अनंता काळ प्रमाणजाणवी. आजे वनस्पतिकायनी स्थिति कहीते व्यवहारराशी जीवनी अपेक्षाए जाणवी. केमके व्यवहारराशीउंजीव मरणपामी नीगोदमां जायतो अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळ सुधी रहेने पछी पाछो व्यवहार राशीमां आवे एम जाणवुं. बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरिंद्रिय एम विकलेंद्रि-

यमां दरेकने उत्कृष्टी स्वकाय स्थिति संख्याता हजार वरश सुधीनी जाणवी. तिर्यंच पचेंद्रिय अने मनुष्यनी उत्कृष्टी स्वकाय स्थिति सात आठ जवनी कही छे.

गर्जज तिर्यंच तथा मनुष्यो संख्याते आयुष्ये सातजव करे अने आठमे जवे युगलीउं थाय ए आठे जवे करी उत्कृष्टी स्वकाय स्थिति त्रण पल्योपम अने सात पूर्व कोम वरसनी गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्य नी जाणवी. त्रसकाय जीवोनी स्वकाय स्थिति बेह- जार सागरोपमनी कही छे, कारणके कोइपण जीव वधारेमां वधारे त्रसकायमां बे हजार सागरोपम सुधी रही शके ने पछी अवश्य एकेंद्रिय थाय, संज्ञीनी स्वकाय स्थिति उत्कृष्टी नवसें सागरोपमनी जाण- वीने पछी अवश्य असंज्ञीमां जाय एम कह्युं छे. दे- वता तथा नारकी मरीने पाछा देवता तथा नारकीमां जाय नहि अवश्य बीजी गतिए जाय. पृथ्वीकायादि उपर कहेला सघळा जीवोनी जघन्यकाय स्थिति अं- तर मुहूर्तनी जाणवी.

॥ इति स्वकाय स्थितिद्वार ॥

अथ त्रेगणत्रीसमुं विरहकाळद्वार.

विरहकाळ—एकजीवउत्पन्नथयापछीबीजो जीव केटलाकाळनेअंतरेउत्पन्नथाय अथवाच्यवे,एम जेदरेक दंडकनेविषेकहेवुं तेनुंनामअहिं विरहकाळ जाणवो.

नारकीना दंडके प्राये समयसमयप्रत्ये जीव उपजेछे अने च्यवेछे;परंतु क्यारेक अंतरपडेतो जघन्य एकसमय अने उत्कृष्टोबारमुहुर्तनोजाणवो. सातेना- रकीमां कोइजीवनउत्पन्नथायतो वधारेमां वधारे बार मुहुर्तसुधीनउपजे पण बारमुहुर्त पछीतो जरुर कोइ- नरकेजीवउपजे माटे सामान्ये सातेनारकीआश्री बार मुहुर्तनोविरहजाणवो. जुदीजुदीनारकीनी अपेक्षाए पहेली रत्नप्रभा नारकीए चोवीसमुहुर्त, बीजीशर्करा प्रभाए सात दिवस,वालुकाए पंदर दिवस,पंक प्रभाए एकमास, धुम प्रभाए वेमास, तमप्रभाए चार मास अने तमस्तम प्रभानारकीनेविषे छमासनो उपजवा तथा चववानो विरहकाळएटले अंतर उत्कृष्टोजाणवो. अहिंजेनो जेटलो विरहकाळकह्योछे तेटलाकाळथी उपरांत अवश्य ए नरकोनेविषे कोइपणजीव उत्पन्न

नाम कह्युं छे.

भवनपतिआदिकके जीव निरंतरच्यवे नहीं तोपण परंतु कदीअंतरपडे तो जघन्यथी एक समयनो अने उत्कृष्टथी चोवीस मुहूर्तनो विरहकाळ पडे? [illegible] ज्योतिषी तथा सौधर्मईशान देवलोकने विषे पण प्रत्येके अनंता [illegible] विरहकाळ यथाक्रमानुसार चोवीस मुहूर्तनो छे. [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] देवलोके [illegible]

वरसनो अने सातमाआठमातथा नवमाग्रैवेयके संख्यातालाखवरसनो उपजवाचववानो विरह काळ कह्योछे. ज्यांसुधी हजार वरस पुरा न थाय त्यां सुधी संख्याता सेंकमा वरस, ज्यांसुधी लाखवरस पुरा नथायत्यांसुधी संख्याताहजारवरस अने ज्यांसुधी क्रोमवरसपुरानथाय त्यांसुधीना संख्यातालाखवरस-गणाय छे.एक सर्वार्थ सिद्धविना बाकीनाचारअनुत्तर-विमाननेविषे पल्योपमना असंख्यातमाभागजेटलो अने सर्वार्थ सिद्ध विमानने विषे पल्योपमनासंख्या-तमाभागजेटलो उत्कृष्ट विरहकाळकह्योछे. जघन्यथी एक समयनो उत्पात तथा चवन विरहकाळ सर्वदेव-लोकेजाणवो.

पृथ्वीकायादिपांचे एकेंडियनादंमके प्रत्येक समये जीवउत्पन्न थायछे अने चवेछे माटे ते एकें-डियनेविषे विरहकाळहोयनहि.

बेइंडिय, तेइंडिय अने चौरिंद्रियना दंमके प्र-त्येके उत्पात अने चवननो विरह वधारेमां वधारे अं-तरमुहूर्त अने जघन्यथी एक समयनो कह्योछे. गर्भज

तिर्यंच पंचेंद्रियने विषे बार मुहुर्तनो अने समुर्छिम तिर्यंचपंचेंद्रियनेविषे अंतरमुहुर्तनो जन्म तथा मरणआश्रीविरहकाळजाणवो. गर्भज मनुष्यने विषे बारमुहुर्तनो अने समुर्छिममनुष्यनेविषे चोवीस मुहुर्तनो उत्कृष्टविरहकाळहोयछे. मोक्षनेविषे निरंतर जीवउत्पन्नथायछे. पण क्यारेक अंतर पडे तो जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी छ मासनुं सिद्धगतिनेविषे आंतरुंकह्युंछे तथा सिद्धगतिथी सिद्धना जीवोनेचववानुंनथी माटे चवनविरहकाळहोयनहि एमजाणवुं.

॥ इति विरहकाळ द्वार ॥

अथ त्रीसमुं चवन संख्याद्वार अने एकत्रीसमुं उपजवानुं संख्याद्वार.

चवन संख्या—एक समयमांजीवकेटलाचवे (मरे) ए संख्यानुं जे कहेवुं ते चवन संख्या तथा एक समयमां केटलां उत्पन्न थाय एम जे कहेवुं ते उपजवानी संख्याद्वार. ए बन्नेद्वार भेगा कहे छे.

नारकीना दंडके, जीवो उपजे तो समये समये जघन्यथी एक, वे त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता अ-

संख्याता उपजे छे तथा च्चवे छे.

दश भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिकमां सौधर्म देवलोकथी मांमीने आठमा सहस्रार देवलोक सुधीना देवलोकने विषे जीवो जो उपजे तो, एक समयमां जघन्यथी एक, बे त्रण अने उत्कृष्टा संख्याता असंख्याता जीवो उपजे तथा चवे छे. कारणके आठमा देवलोक सुधी तिर्यंच पण जायछे; ने ते तिर्यंचगतिमां जीवो असंख्याता छे माटे असंख्याता उपजे एम जाणवुं. नवमा आदि उपरना देवलोके एक समयमां छेवट संख्याता जीवो उपजे अने चवे छे. ते देवलोकमां फक्त गर्भजमनुष्यजायछे.

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय अने वाउकायनादंमके, प्रतिसमये जीवो असंख्याता उपजेछे अनेचवेछे, तथा वनस्पतिनादंडके प्रतिसमये जीवो अनंताउपजे ने अनंताचवे छे; वनस्पतिकायमां जीव अनंता छे माटे वनस्पतिकायमांहेथीआव्या जीवो वनस्पतिकायमां समयेसमये अनंताउपजे अने अनंताचवेछे एम जाणवुं. बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रिय

अने तिर्यंचपंचेंद्रियना दंडके, देवतानी पेठे एक बे त्रणथी यावत् संख्याता असंख्याता उपजेअने चवेछे.

गर्भज मनुष्यने विषे उपजेतो एक समये वधारेमां वधारे संख्याता जीवो उपजे अने चवे, तथा समुर्छिम मनुष्यने विषे देवतानी पेठे संख्याताने असंख्याता उपजे अने चवे छे. सिद्धगति (मोक्ष)ने विषे जीवो उपजेतो एक समये एक, बेथी मांडीने यावत् एकसोने आठ सुधि उपजे छे. ते सिद्धगतिमांथी पडवानो अभाव होवाथी कोइ चवतो नथी.

॥ इति चवन तथा उपजवानु संख्याद्वार ॥

अथ बत्रीशमुं गतिद्वार.

गति—गमन करवुं—कया दंडकनो जीव कया कया दंडके जाय एम जे कहेवुं ते आहिं गतिद्वार जाणवुं.

नारकी जीवो नारकीमांथी नीकळी, गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्य एम बे दंडकमां जाय छे. दशभुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने सौधर्म तथा इशान देवलोकना देवो भवांतरे, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय, पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य एम

पांच दंडके जाय, तथा सनत् कुमारादिसहस्त्रार पर्यंतना देवो गर्भज तिर्यंच अने मनुष्य एम बे दंडके जाय, ने सहस्त्रारथी उपरना देवलोकना देवो एक गर्भज मनुष्यनाज दंडके जाय छे. पृथ्वीकाय, अपकाय, वनस्पतिकाय तथा बेइंद्रिय,तेइंद्रिय अने चौरिंद्रिय ए छ दंडकना जीवो, भवांतरे पांच एकेंद्रिय, त्रण विगलेंद्रिय, तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्यना मळी दश दंडकने विषे जाय अने वाउकाय तथा तेउकायनाजीवो ए उपर कहेलां दश दंडकमांथी एक मनुष्यना दंडक सिवाय बाकीना नव दंडकने विषे जायछे. गर्भजतिर्यंच पंचेंद्रिय अने गर्भजमनुष्यना दंडकमांथी संख्याता आयुष्यवाळा जीवो पोतानाकर्मानुसारे २४ दंडकमां जाय तथा असंख्याता आयुष्यवाळा तो तेर देवतानाजदंडकेजायछे.संख्याता आयुष्यवाळा गर्भज मनुष्यमांथी वज्ररुषभनाराच संघयणना धणी कोइक जीव आठे कर्म खपावीने सिद्धगति मांहे पण जाय छे. एम सामान्ये चोवीसे दंडकना जीवोनीगति कही.

हवे चोवीसे दंडकना जीवोनी गति पांचसेंने

त्रेसठजीवभेदनेविषे कहे छेः—पहेलीथी छठी नारकीना जीवो आयुक्षये नारकीमांथी नीकळीने पंदर कर्मभूमिनां गर्भजमनुष्यपर्याप्ता, पंदर कर्मभूमिनां गर्भजमनुष्य अपर्याप्ता तथा पांचगर्भजतिर्यंचपर्याप्ताने पांचगर्भजतिर्यंचअपर्याप्ता एवं चालीशजीवभेदने विषे जाय, तथा सातमी नारकीथी नीकळ्यां जीवो तो पांच गर्भज तिर्यंच पर्याप्ताने पांच गर्भज तिर्यंच अपर्याप्ता एमदशजीवभेदने विषे जायछे. दशभुवनपति, सोळव्यंतर, पंदरपरमाधामी, दशतिर्यग् जृंभक, दशज्योतिषी, सौधर्म, इशान अने एक किल्बीषिया एम चोसठ जातिनां देवोमांथी नीकळ्या जीवो, पंदर कर्मभूमिनागर्भज मनुष्य अने पांच जातिना गर्भज तिर्यंच तथा बादर पृथ्वीकाय, बादर अपकायने बादरप्रत्येकवनस्पतिकाय मळी त्रेवीसपर्याप्ता तथा त्रेवीस अपर्याप्ता एवं छेताळीस भेदमां जाय छे. सनतकुमारथी मांडीने सहस्त्रार पर्यंत छ देवलोकना देवो, बे किल्बीषिया जातिना देवो अने नवलोकांतिकना देवो एम सत्तर जातिना देवोमांथी नीकळ्या जीवो,

पांच गर्भज तिर्यंच अने पंदर कर्म भूमिना मनुष्य नामळी वीस पर्याप्ता तथा वीस अपर्याप्ता एवं चाळीस भेदमां जाय छे. नवमा आणत देवलोकथी मांडीने बारमा अच्युत देवलोक सुधीना चार देवलोकना देवो अने नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तरविमानना देवो एसर्वे मळीने अढार देवलोकना जीकल्याजीव, ते पंदरकर्म भूमिना मनुष्यमां जाय छे. नारकीनो एक दंकक तथा देवताना तेर दंकक मळीने चौद दंककनी गति कही. जीवमात्र उत्पति काळे अपर्याप्तावस्थाए होय अने पछीथी पर्याप्ता थाय, ए अपेक्षाए अहीं नारकी तथा देवतानी गति पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता जीवभेदे कहीछे तो ते करण अपर्याप्ता जाणवा. करण अपर्याप्ता जीव अवश्य पर्याप्ता थायज, तेथी संग्रहणी विगेरेमां कह्युं छे के नारकी तथा देवता चवीने पर्याप्ता तिर्यंच अने मनुष्य थाय एमां कोइ विरोध नथी.

पृथ्वीकाय, अपकाय, वनस्पतिकाय तथा बे इंद्रिय, ते इंद्रिय अने चौरिंद्रिय एवं छ दंककनाजीवो

आयुक्षये आप आपणा दंरूकमांथी नीकळीने, पंदर कर्म ज्रूमिना गर्न्नज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर गर्न्नज मनुष्य अपर्याप्ता, एकसोने एक समुर्छिम मनुष्य अने अरूतालीसतिर्यंचना ए सर्वे मळीने एकसोने ठगणएंशी जीवन्नेदने विषे पोतपोताना कर्मानुसारे जाय ठे. तेउकाय अने वाउकाय ए वे दंरूकना नीकळ्या जीव. अरूतालीस न्नेदना तिर्यंचमां जाय ठे. एवी रीते वावीस दंकनी गति कही.

गर्न्नज तिर्यंच पंचेंडिय एवा जलचरजीवो आठमांथी वारमा देवलोके, नव ग्रैवेयके अने पांच अनुत्तर विमाने जाय नहि माटे सर्व पांचसे ने त्रेसठ जीवन्नेदमांथी ए अढार स्थानकना पर्याप्ता तथा अपर्याप्तामळी ठत्रीस जीवन्नेद वादकरता वाकीना पांचसेंने सतावीस जीवन्नेदमां जलचर जीवो जाय ठे. गर्न्नजउरपरिसर्पजीवो उपर कहेला पांचसेंने सतावीस जीवन्नेदमांथी सातमी अने ठट्ठी नारकीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी चार न्नेद वर्जीने वाकीना पांचसेंने त्रेवीस जीवन्नेदमां जाय ठे. गर्न्नज

थलचर जीवो (चोपगा) उपर कहेला पांचसेने सतावीस जीवभेदमांथी सातमी, छठी अने पांचमीनारकीनापर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळीछभेदवर्जी ने बाकीना पांचसें ने एकवीस जीवभेदने विषे जाय छे. गर्भजखेचरजीवो उपरकहेला पांचसेंने सतावीसजीवभेदमांथी सातमी, छठी, पांचमी अने चोथी नारकीनापर्याप्ता तथा अपर्याप्तामळीआठभेदवर्जीने बाकीना पांचसेंने ओगणीस जीवभेदमा जाय छे. गर्भज भुजपरिसर्पजीवो उपरकहेलापांचसेंने सत्तावीस जीव भेदमांथी सातमी, छठी, पांचमी, चोथी अने त्रीजी नारकीनापर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळीदशभेदवर्जीने बाकीनापांचसेनेसत्तरजीवभेदमांजाय छे. हवे असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रियजीवो आयुक्षयेनिकळीनेत्रणसेंने पंचाणुंभेदनेविषे जाय तेनां नाम कहे छे;—दश भुवन पति, सोळ व्यंतर, पंदर परमाधामी, दशतिर्यग् जृंभक, छप्पनअंतरद्वीपनामनुष्यो, पहेली नारकी अने पंदरकर्मभूमिनामनुष्यो एवं एकसोने त्रेवीस पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळीने बसेंने छेताळीस तथा

एकसोने एक समुर्छिम मनुष्यो अने अमृताळीस ज्ञेद तिर्यंचना गणतां त्रणसेंने पंचाणुं जीवज्ञेद थया तेमां असंज्ञी तिर्यंच पचेंद्रियनी गति जाणवी. एवं त्रेवीस दंमकनी गति कही.

मनुष्यना दंमके गति कहे छे. प्रथम समुर्छिम मनुष्य आयुक्षये, समुर्छिम मनुष्यमांथी नीकळ्या, पंदर कर्म ज्ञुमीज मनुष्यपर्याप्ता, पंदरकर्मज्ञुमिज अपर्याप्या, एकसोने एक समुर्छिम मनुष्य अने अमृताळीस ज्ञेदना तिर्यंच एवं एकसोने छगणा एंसी जीवज्ञेदमां जाय छे पंदर कर्म ज्ञुमिना गर्ज्ञज मनुष्यो मांथी जीवो नीकळीने पांचसेंने त्रेसठ जीवज्ञेदमां जाय छे. त्रीस अकर्म ज्ञुमिना मनुष्यमांथी नीकळ्या जीवो, दशज्ञुवनपति, सोलव्यंतर, पंदर परमाधामी, दशतिर्यंग् ज्रंज्ञक, दश ज्योतिषी, एक किल्वीषिया अने सौधर्म तथा इशान ए बे देवलोक मळी चोसठ जीवज्ञेदमां जाय छे. छप्पन्न अंतर द्वीपनामनुष्यमांथी नीकळ्या जीवो, दश ज्ञुवनपति, सोलव्यंतर, पंदर परमाधामी अने दश तिर्यग् ज्रंज्ञक एम एकावन

जीवन्नेदमां जाय छे. इति गतिद्वार.

अथ तेत्रीशमुं आगतिद्वार.

आगति—आगमन—कया दंमकने विषे कयाकया दंमकना जीवो आवीने उपजे एम जे कहेवुं तेनुं नाम अहिं आगतिद्वार जाणवुं.

नारकी तथा देवताना मळी चौद दंमकने विषे एक तिर्यंच पंचेंडिय अने वीजा मनुष्य एम वे दंमक मांहेथी जीवो आवी उत्पन्नथायछे. पृथ्वीकाय, अपकाय अने वनस्पतिकाय एम त्रण दंमकने विषे. एक नारकीवर्जीने वाकीना त्रेवीशें दंमकमांहेथी जीवोआवी उत्पन्नथायछे. तेउकाय, वाउकाय, वे इंडिय, ते इंडिय अने चौरिंडिय एम पांच दंमकने विषे. थावरना पांच, विगलेंडियना त्रण, तिर्यंच पचेंडिय अने मनुष्य एम दश दंमक मांहेथी जीवो आवी उत्पन्न थाय छे. तिर्यंच पचेंडियना दंमकनेविषे चोवीशे दंमकमांहेथी जीवो आवी उत्पन्न थाय छे. मनुष्यना दंमकने विषे. तेउकाय अने वाउकाय सिवाय वाकीना वावीश दंमकमांहेथी जीवो आवी-

उत्पन्न थाय छे. एम सामान्ये चोवीशें दंमकनी आगति कही.

हवे चोवीशे दंमके, पांचसे त्रेसठ जीवन्नेदमांथी आगति कहेछे–पहेली नरके. पंदरकर्मन्नूमीज गर्न्नज मनुष्य, पांच गर्न्नज तिर्यंच पंचेंद्रिय अने पांच समुर्छिमतिर्यंच पंचेंद्रिय एम पच्चीशभेदना जीव आवी उपजे. वीजी नरके. पंदरकर्मन्नूमिजगर्न्नज मनुष्य अने अने पांच गर्न्नज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम वीस न्नेदनाजीव आवी उपजे. त्रीजीनरके. पंदर कर्म न्नूमिज गर्न्नज मनुष्य तथा गर्न्नज जलचर, थलचर, उरपरिसर्प अने खेचर एम ओगणिश न्नेदमांहेथीजीव आवी उपजे. चोथीनरके पंदरकर्मन्नूमिज गर्न्नजमनुष्यतथा गर्न्नज जलचर थलचरअने उरपरिसर्प एम अढार न्नेदमांहेथीजीव आवी उपजे. पांचमी नरके पंदर कर्मन्नुमिज गर्न्नज मनुष्य तथा जलचर अने उरपरिसर्प एम सत्तर न्नेदमांहेथी जीव आवी उपजे. छठीनरके पंदर कर्मन्नुमिज गर्न्नज मनुष्य अने गर्न्नज जलचर एम सोलन्नेद मांहेथी जीव आवी उपजे. सातमी नरके पण पंदर कर्मन्नुमिजग-

नेज मनुष्य अने जलचर एम सोल नेदमांहेथी आवी उपजे. नरकने विषे अपर्याप्ता जीवो जाय नहि ए प्रकारे नारकीना दंमके आगति कही.

दशनुवनपति, सोल व्यंतर, पंदर परमाधामी अने दशतिर्यग्नृंजक ए एकावनजातिनादेवोनेविषे एकसोने एक क्षेत्रना गर्न्नज मनुष्यपर्याप्ता, पांचग-र्न्नजतिर्यंच पर्याप्ता अने पांच असंज्ञी तिर्यंच पचेंद्रिय एमएकसोने अगियार नेदमांहेथी जीव आवी उपजे. दश प्रकारना ज्योतिषी अने सौधर्म एम अगियार जातीनां देवोने विषे पंदर कर्मनूमिज गर्न्नज मनुष्य, त्रीस अकर्मनुमिज गर्न्नजमनुष्य अने पांच गर्न्नज तिर्यंच एम पचास नेदमांहेथी जीवो आवी उपजे. बीजा इशान देवलोकने विषे पंदरकर्मनुमि, पांचहरि वर्ष, पांच रम्यक, पांचदेवकुरु ने पांच उत्तरकुरु एवं पांत्रीस क्षेत्रना गर्न्नज मनुष्यो तथापांचगर्न्नजतिर्यंच एम चालीश नेदमांहेथी जीव आवी उपजे. पहेला किल्बीषिया जातिना देवोने विषे पंदर कर्मनुमि,पांच उत्तरकुरुने पांच देवकुरु एवं पचीस क्षेत्रना गर्न्नज

मनुष्यो तथा पांचगर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम त्रीस भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. त्रीजाथी आठमासुधी ० देवलोक, नव लोकांतिक अने वे किल्वीषिया एम सत्तर जातिना देवोने विषे पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य अने पांच गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम वीस-भेदमांहेथी जीवो आवी उपजे. नवमा आणंत देव-लोकथी मांडीने पांच अनुत्तर विमान पर्यंतना अढार देवलोकने विषे पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्यना भे-दमांहेथी जीव आवी उपजे. एवी रीते एक नारकीनो दंडक तथा तेर देवताना दंडक मळीने चौद दंडके आगति कही.

पृथ्वीकाय, अपकाय अने वनस्पतिकाय ए त्रण दंडकने विषे अडताळीसभेदना तिर्यंच, एकसोने एक समुर्च्छिम मनुष्य तथा पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनु-ष्य पर्याप्ता, पंदर कर्मभुमिना गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता तथा पंदर परमाधामी, दश भुवनपति, सोळव्यंतर, दशतिर्यक् जंभक, दश ज्योतिषी, सौधर्म तथा इशान अने एक किल्वीषिया जातिना देवो एम सर्व मळी

बसेंने त्रेंताळीस नेदमांहेथी जीव आवी उपजे. ते उकाय, वाउकाय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चोरिंद्रिय अने असंज्ञीतिर्यंच पंचेंद्रियने विषे एकसोनेएक समुर्छिम मनुष्य अपर्याप्ता, पंदर कर्म नुमिज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर कर्म नुमिज मनुष्य अपर्याप्ता अने अमताळीस नेदना तिर्यंच एम एकसोने ओगणाएंसी नेदमांहेथी जीव आवी उपजे. गर्नज तिर्यंच पंचेंद्रिय एवा जलचर, थलचर, उरपरिसर्प, नुजपरिसर्प अने खेचरने विषे एकसोने एक समुर्छिम मनुष्य अपर्याप्ता, पंदर कर्मनुमिज गर्नज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर कर्म नुमिज मनुष्य अपर्याप्ता, अमताळीस नेदना तिर्यंच तथा पंदर परमाधामी, दश नुवनपति, सोलव्यंतर, दश तिर्यग् जंनक, दश ज्योतिष, त्रण किल्विषीया, नव लोकांतिक अने सौधर्मथी मांमीने आठमा सहस्रार पर्यंत् देवलोक तथा सात नारकी एम सर्वे मळीने बसेंने समसठ जीवनेद मांहेथी जीव आवी उपजे. त्रेवीस दंमके आगति कही.

समुर्छिम मनुष्यने विषे पंदर कर्म नुमिज म-

नुष्य पर्याप्ता, बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर अपकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर प्रत्येक वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, सुक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता सुक्ष्म अपकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता सुक्ष्म साधारण वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर साधारण वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता त्रण विकलेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता, तथा वीस तिर्यंच पंचेंद्रियना अने एकसोने एक समुर्छिम मनुष्य एम सर्वे मळीने एकसोने छंत्रोतेर भेदमांथी जीवो आवी उपजे. पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य ने चोथे उपर कहेला एकसोने छंत्रोतेर जीवभेद, तथा नवाणु देवताना भेद अने पहेलीथी छठीनारकी सुधीना नारकी एम सर्वे मळीने बसोने छोंतेर भेदमांहेथी जीव आवीउपजे. त्रीस अकर्म भुमिना मनुष्यने विषे पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य पर्याप्ता अने पांच गर्भज [illegible] मळी वीसभेद मांथी जीव आवीउपजे. [illegible] मनुष्यने विषे पंदर कर्मभुमिज [illegible] मनुष्य [illegible] तथा पांच गर्भज तिर्यंचपर्याप्ता

अने पांच समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय पर्याप्ता एम प-
चीसभेदमांहेथी जीव आवी उपजे. एवीरीते चोवीस
दंडके आगतिकही.

॥ इति आगतिद्वार ॥

अथ चोवीसमुं संपदा द्वार.

संपदा–पदवी त्रेवीसना नाम. १ अरिहंतनी
पदवी, २ चक्रवर्तिनी, ३ वासुदेवनी, ४ बळ देवनी,
५ केवळीनी, ६ साधुनी, ७ श्रावकनी, ८ सम्यक्दृ-
ष्टिनी, ९ मंडळिकनी, ए नव मोटी पदवी तथा चौद
रत्न चक्रवर्तिना मेळवतां त्रेवीस पदवी थाय. ते चौद
रत्नना नाम, १ सेनापति रत्न, २ गाथा पति रत्न,
३ वार्धिक रत्न, ४ पुरोहित रत्न, ५ स्त्रीरत्न, ६ ह-
स्तिरत्न अने ७ अश्वरत्न ए सात पचेंद्रीय रत्न छे
तथा १ चक्र रत्न, २ खड्ग रत्न, ३ छत्र रत्न, ४
चर्म रत्न, ५ दंड रत्न, ६ मणिरत्न अने ७ कांगणि
रत्न, ए सात एकेंद्रिय रत्न जाणवा. एम नवमोटी
पदवी, सात पचेंद्रिय रत्न अने सात एकेंद्रियरत्न
मळीने त्रेवीस थया. चौद रत्नमां सेनापति ते देश

लावे, गाथापति ते धान्य रसवती नीपजावे, वार्धिकरो
त्नावास घर निपजावे, पुरोहित ते घाव साजा
करे, शांतिकर्म करे अने विघ्न टाळे, स्त्रीरत्न
भोग साधन थाय, अश्व तथा हस्ति स्वारीकरवाने
काम आवे, चक्ररत्न षट्खंडसाधता मार्ग बतावे, छत्र
रत्न सर्वने मस्तक ढंके, चर्म रत्न चक्रवर्तिना हस्तस्पर्शे
बार जोजन सुधी वीस्तरे तेथी बार जोजन सुधी छाया करे,
चर्म रत्न ते कार्य उपन्ये तुर्त चक्रवर्तिना स्पर्शे बारजो
जन विस्तरे ते जेमां प्रभातकाळे धान वावे ते संध्या
काळे उगेने संध्याये पाका शालिप्रमुखने अन्नकरे,
मणिरत्न ते वैरीनी दृष्टिनाश करे, काम पडे हजार जो
जन अंधकार टाळे अने तमिस्त्रादिक गुफाना चार
उघाडे, कागिणी रत्न ते हस्त अथवा मस्तके बांधवाथी
[illegible] अने बार जोजन सुधी उद्योत करे,
अने खड्गरत्न ते [illegible] गुफामां सर्व
[illegible] नाम होय तथा
[illegible]
[illegible]

ङ्क रत्न ए चार रत्नो आयुध शाळामां उपजे. चर्म रत्न, मणिरत्न अने कांगणिरत्न ए त्रण रत्नो चक्रवर्तिना श्रीकार मांउपजे. सेनापति, गाथापति, वार्धिक अने पुरोहित ए चार रत्नो चक्रवर्तिना पोताना नगरमां उपजे. स्त्री रत्न वैताढ्य पर्वते विद्याधरना नगरमां उपजे. अश्व रत्न तथा गज रत्न वैताढ्य पर्वतना मूळे उपजे. चक्र रत्न, छत्र रत्नअने दंडरत्नए त्रण एक धनुष्य एटले चार हाथ प्रमाणना होय. चर्मरत्न बेहाथ प्रमाण होय, खड्ग रत्न बत्रीस आंगुल लांबु होय, मणि-रत्न चारआंगुललांबुने बे आंगुलनुंपहोळुंहोय, कांगणि रत्न सुवर्णमय चार आंगुल लांबु होय, सेनापति गाथापति, वार्धिक अने पुरोहित ए चारनी उंचाइ (अवगाहना) चक्रवर्ति प्रमाणे जाणवी, स्त्रीरत्न चक्रवर्तिथी चार अंगुलनोची होय, अश्व रत्न कानना मुळथी ते पुंछना मुळ लगे एकसोने आठ आंगुलनो लांबो अने एंशी आंगुलनो उंचो होय अने गजरत्न चक्रवर्तिथी बमणो उंचो होय छे, सर्वे रत्ननुं माप चक्रवर्तिने आत्म आंगुल

प्रमाण जाणवुं.

पहेली नरकथी नीकळया जीवो कर्मानुसारे उपर कहेली त्रेवीस पदवीमांथी सात एकेंद्रियरत्न विना बाकीनीसोळपदवीपामे, बीजीनरकथी नीकळया जीवो कर्मानु सारे उपर कहेली सोळ पदवीमांथी चक्रवर्तिनी पदवीविना बाकीनी पंदर पदवी पामे, त्रीजी नरकना नीकळया जीवो कर्मानुसारे उपर कहेली पंदर पदवीमांथी एक वासुदेवनी अने बीजी बळ देवनी पदवी विना बाकीनी तेर पदवी पामे, चोथी नरकथी नीकळया जीवो कर्मानुसारे उपर कहेलीतेरपदवीमांथीतीर्थंकरनीपदवीविना बाकीनीबार पदवीपामे,पांचमी नरकथी नीकळया जीवोकर्मानुसारे ते बार पदवीमांथीकेवळीनी पदवीविना बाकीनी अगियारपदवी पामे,छट्ठी नरकथी नीकळया जीवो कर्मानुसारे ते अगियार पदवीमांथी साधुजीनी पदवीविना बाकीनी दश पदवीपामे अने सातमीनरकथी नीकळया जीवो कर्मानुसारे समकितदृष्टीनी, अश्वरत्ननी अने गज रत्ननी एम त्रण पदवी पामे, भुवनपति, वाण

व्यंतर अने ज्योतिषी ए त्रण निकायना नीकळया जीवो कर्मानुसारे वासुदेव अने तिर्थंकरनी पदवी विना वाकीनी एकवीस पदवी पामे. पृथ्वीकाय, अपकाय, वनस्पतिकाय तथा गर्भज मनुष्यअने गर्भजतिर्यंचना नीकळया जीवो कर्मानुसारे तिर्थंकर, चक्रवर्ति, वळदेव अने वासुदेवनी पदवीविना वाकीनी ओगणीस पदवी पामे. वे इंद्रिय, ते इंद्रिय अने चौरिंद्रिय तथा समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिने समुर्छिम मनुष्यमांथी नीकळयाजीवो कर्मानु सारे तिर्थंकरनी, चक्रवर्तिनी, वळदेवनी, वासुदेवनी अने केवळीनी पदवी विना वाकीनी अढार पदवी पामे. तेउकाय अने वाउकायनानीकळयाजीवो कर्मानुसारे सात एकेंद्रियनी तथा हस्ति रत्ननी अने अश्वरत्ननी एम नव पदवी पामे. पंदरपरमांधामीने पहेला किल्वीषियाना नीकळया जीवो कर्मानुसार निर्थंकर, चक्रवर्ति, वासुदेव, वळदेव अने केवळी विना वाकीनी अढार पदवी पामे. उपरना वे किल्वीषियाना नीकळया जीवो कर्मानुसारे उपर कहेली अढार पदवीमांथी सात एकेंद्रिय रत्ननी

पदवी विना वाकीनी अगियार पदवी पामे, सौ-धर्म अने इशान देवलोकना नीकळ्याजीवो कर्मानु-सारे त्रेवीस पदवी पामे. त्रीजाथी आठमा देवलोक सुधीना अने नव लोकांतिकना नीकळ्याजीवो कर्मानु सारे त्रेवीसपदवीमांथी सातएकिंद्रिय रत्ननी पदवी विना वाकीनी सोळपदवीपामे. नवमाथी वारमा देवलोकना तथा नव ग्रैवेयक सुधीना नीकळ्याजीवो सात एकिंद्रिय रत्नो तथा अश्वने हस्ति विना वा-कीनी चौदपदवीपामे. पांच अनुत्तर विमानना निकळ्याजीवो तिर्थंकरनी, चक्रवर्तिनी, वळ देवनी, केवळीनी, मंडळिकनी, साधुनी, श्रावकनी अने सम-कित दृष्टिनी एम आठ पदवी पामे. तिर्थंकर अने च-क्रवर्तिने विषे कोइ जीवोने तिर्थंकरनी, चक्रवर्तिनी मंडळिकनी, समकितनी,साधुनी अने केवळीनी एम ठ पदवीउं लाभे, वासु देवने विषे वासुदेवनी, मंड-ळिकनी अने समकीतनी एम त्रण पदवी लाभे. व-ळदेवने विषे कोइ जीवोने वळदेवनी, मंडळिकनी साधुनी, केवळीनी अने समकितनी एम पांचपदवी

लाजे. मनुष्यमांहे पुरुषवेदे नव मोटी पदवी तथा सेनापति, गाथापति, वार्धिक अने पुरोहित एम तेर पदवी लाजे, मनुष्यमांहे स्त्रीवेदे समकीतनी, श्राविकानी, साध्वीनी, केवळीनी अने स्त्री रत्नना ए पांच पदवीलाजे.

॥ इति संपदा द्वार ॥

अथ पांत्रीसमुं देवद्वार.

देव–१ द्रव्यदेव, २ नरदेव, ३ धर्मदेव, ४ देवाधिदेव अने ५ भावदेव ठे. मनुष्य अथवा तिर्यंच पंचेंद्रियजीवोमांथी जेने देवतानुं आयुष्य बांध्युं ठे ते आवताभवे देवपणे उपजशे एवा जे जीवो तेने द्रव्यदेव कहीए. चौद रत्न, नवनिधान जेहने होय तेने नरदेव कहीए. साधुना सत्तावीस गुणे करी सहित होय तेहने धर्म देव कहीए. वार गुणे सहित, अढार दोष रहित तथा चोत्रीस अतिशय, पांत्रीस वाणीना गुण ए विगेरे अनंत गुणे करीने सहित धर्मना प्रवर्तक होय तेने देवाधिदेव कहीए. चारनिकायना देवोने भाव देव कहीए. द्रव्य देवनी जघन्य

स्थिति अंतर मुहुर्तनी अने उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी कही छे, नरदेवनी जघन्यस्थिति सातसेंवरसनी अने उत्कृष्ट चोरासीलाखपूर्वनीकहीछे, धर्मदेवनी जघन्यस्थिति अंतरमुहुर्तनी अने उत्कृष्ट देशे उणी पूर्वक्रोड वरसनी कही छे, देवाधि देवनी जघन्य स्थिति बहोंतेर वरसनी अने उत्कृष्ट चोरासीलाख पूर्वनी कहीछे अने भाव देवनी जघन्यस्थिति दशहजारवरसनी अने उत्कृष्ट तेत्रीससागरोपमनी जाणवी. द्रव्य देवचवीने देवता थाय, नरदेव चवीने नरके जाय अथवा कोइक चारित्र ग्रहण करी स्वर्गे अथवा मोक्षे पण जाय छे, धर्म देवचवीने वैमानिक अथवा मोक्षमां जाय छे, देवाधिदेव चवीने मोक्षे जाय अने भावदेव चवीने बादर पृथ्वीकाय, अपकायने वनस्पतिकाय तथा गर्भज मनुष्य अने तिर्यंचमां जाय छे. सर्वथी थोडा नरदेव होय, नरदेवथी देवाधी देव संख्यात गुणा, देवाधि देवथी धर्म देव संख्यात गुणा, धर्म देवथी द्रव्यदेव असंख्यात गुणा अने द्रव्य देवथी भावदेव असंख्यात गुणा जाणवा.

द्रव्यदेवने विषे युगलीआ मनुष्य तथा युगलीआ तिर्यंच अने सर्वार्थसिद्धविना बाकीना सर्व स्थानकेथी जीवो आवी उपजे. नरदेवने विषे देवताना तेर दंडकने पहेली नारकीना नीकळ्या जीवो आवी उपजे, धर्म देवने विषे छट्ठीने सातमी नारकी तथा तेउकायने वाउकाय अने युगलीआ मनुष्य तथा युगलीआ तिर्यंच वर्जीने बाकीना सर्व स्थानकना नीकळ्या जीवो आवीने उपजे, देवाधिदेवमां किल्बीषिया सिवाय वैमानिक देवलोकना देवो तथा पहेली, बीजी अने त्रीजी नारकीमांथी नीकळ्या जीवो आवीने उपजे अने भावदेवने विषे तिर्यंच पंचेंद्रिय अने संज्ञी मनुष्यमांथी नीकळ्या जीवो आवीने उपजेछे.

॥ इति देवद्वार ॥

अथ बत्रीसमुं संजतिद्वार.

संजति–संयमी ते–१ संयती (संजमवाळा), २ संयता संयती, ३ असंयती, ४ व्रती (व्रतवाळा), ५ व्रताव्रती, ६ अव्रती, ७ पच्चखाणी, ८ पच्चखाणा पच्चखाणी, ९ अपच्चखाणी, १० पंडिया (पंडित), ११

वालपंडिया, १२ वाला, १३ संवुडा (संवृत), १४ संवुडा असंवुडा, १५ असंवुडा, १६ जागरा(जागृत) १७ सुताजागरा, १८ सुता, १९ धम्मिया (धर्मिष्ट), २० धम्माधम्मिया, २१ अधम्मिया, २२ धम्मविवसाइया (धर्मव्यवशाइ), २३ धम्माधम्म विवसाइया, २४ अधम्मविवसाइया, २५ धम्मेठिया (धर्ममांस्थित), २६ धम्माधम्मेठिया अने २७ अधम्मेठिया. एम सत्तावीस प्रकारनुं विवेचन चोवीस दंडके नीचे प्रमाणे जाणवुं.

नारकी, देवता, एकेंडिय, विगलेंडिय एम बावीसदंडकना जीवो तथा समुर्छिम मनुष्य अने समुर्छिम तिर्यंच पंचेंडियना जीवो, असंयती, अव्रती, अपच्चखाणी, वाला, सुता, असंवुडा, अधम्मिया, अधम्मेठिया अने अधम्मविवसाइया कह्यां छे. गर्जजतिर्यंच पंचेंडियना दंडके जीवो, असंयती, संयतासंयती, अव्रती, व्रताव्रती, अपच्चखाणी, पच्चखाणा पच्चखाणी, वाला, वालपंडिया, सुता, सुताजागरा, असंवुडा, असंवुडा संवुडा, अधम्मिया, धम्माधम्मिया, अध-

म्मेठिया, धम्माधम्मेठिया, अधम्मविवसाइया अने धम्माधम्मविवसाइया कह्यां छे. गर्भज मनुष्यना दंडके तो संयती विगेरे सत्तावीसे बोल लाजे छे.

चोवीसे दंडकमां उत्तमधर्म साधन योग्य गर्भज मनुष्यनो भव छे. तेमां संयम थइ शके छे. ते संयम (चारित्र)ना पांच प्रकार छे. १ सामायिक चारित्र, २ छेदो पस्थापनियचारित्र, ३ परिहार विशुद्धिचारित्र, ४ सूक्ष्म संपरायचारित्र अने ५ यथाख्यात चारित्र. ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो जे लाभ तेनुं नाम सामायिक चारित्र, पूर्व पर्यायनो छेद अने नवापर्यायनुं स्थापन करवुं ते छेदोपस्थापनिय चारित्र, विशेषकर्म निर्जरार्थे तपो विशेष ते परिहार विशुद्धि चारित्र, अति सूक्ष्म कषाय ते सूक्ष्म संपरायचारित्र अने अकषायपणुं थाय तेनुं नाम यथाख्यात चारित्र कह्युं छे.

विशेषपणे जाणवाने अर्थे पांचे चारित्रे, १ भेद, २ वेद, ३ राग, ४ निर्ग्रंथ, ५ ज्ञान, ६ लिंग, ७ शरीर ८ क्षेत्र, ९ काळ, १० गति, ११ योग, १२ उपयोग,

१३ कषाय, १४ लेश्या, १५ गुणस्थानक, १६ नव,१७ आकर्ष, १८ नाव अने १९ अल्प वहुत्व ए ओगणीस वोल संक्षेपे कहे छे.

सामायिक चारित्रना वे नेद छे, एक इत्वरिकने वीजुं यावत्कथिक तेमां इत्वरिक एटले स्वल्पकाळनुं ने ते पहेला तथा छेला तिर्थंकरना वारामां होय अने यावत्कथिक एटले घणा काळनुं ते वावीश तिर्थंकरना वारामां तथा महाविदेह क्षेत्रमां होय छे.छेदोपस्थापनिय चारित्रना वे नेद छे, एक सातिचार छेदोपस्थापनियने वीजु निरतिचार छेदोपस्थापनिय,तेमां सातिचार एटले मुळ गुणघातिने प्रायश्चितरुप होय अने निरतिचार एटले इत्वरीक सामायिकवंत नव दिक्षितने वडिदिक्षारुप होय छे. परिहार विशुद्धि चारित्रना वे नेद छे, एक निर्विषमानसिकने वीजुं निर्विष्टकायिक परिहार विशुद्धिचारित्र, तेमां निर्विषमानसिक एटले कर्म निर्जरा अर्थे तपो विशेष आचारित्रना आ सेवक ए कल्पमां प्रवर्तता होय तेने होय अने निर्विष्ट कायिक एटले आ, चारित्रमां प्रवर्तता

ना अनुचारी एटले वैयावच्चादिकना करनारने होय छे. सूक्ष्म संपराय चारित्रना बे भेदछे, एक विशुद्ध मानसिक अने बीजुं संक्लिष्ट मानसिक सुक्ष्म संपराय चारित्र, तेमां विशुद्धमानसिक एटले क्षपक श्रेणीए चमतां जीवने विशुद्ध पारिणामिकरुप अने बीजुं संक्लिष्ट मानसिक एटले उपशम श्रेणीथी पमतां जीवने संक्लिष्ट पारिणामिकरुप होयछे. यथाख्यात चारित्रना बे भेदछे, एक छाद्मस्थिकने बीजुं केवलिक, तेमां छाद्मस्थिक ते अगियारमा तथा बारमा गुणस्थानके वर्तता जीवोने होय अने केवलिक ते तेरमा तथा चौदमा गुणस्थानके होय छे. इतिभेद. सामायिक चारित्र तथा छेदोपस्थापनिय चारित्र, सवेदीने अथवा अवेदीने पण होय तेमां सवेदीने स्त्री, पुरुष अने नपुंसक एम त्रणे वेदे होय अने अवेदी ते उपशम वेदी तथा क्षपकवेदीने होय छे. परिहार विशुद्धी चारित्र सवेदी एटले पुरुष वेदवाळाने अथवा नपुंसक वेदवाळाने होय छे. सुक्ष्म संपराय चारित्र तथा यथाख्यात चारित्र अवेदी एवा उपशम तथा क्षपकवेदी

ने होय छे. इतिवेद. पहेलेथी चार चारित्र सरागी होय अने यथाख्यात चारित्र वितरागी होय छे.इति राग. निर्ग्रंथना ७ भेद छे १ पोलाक, २ बकुस, ३ प्रतिसेवना कुशील, ४ कषाय कुशील, ५ निर्ग्रंथ अने ६ स्नातक. ज्ञानादिना अतिचार सेववे करी व्रतने उशीत करे ते पोलाक कहीए, शरीरनी सुश्रुषा विभुषा करे अथवा उपकरण वहु मुल्यजल हळता राखे संग्रहे तेने बकुस कहीए, मुल गुणतो पाळे सेवे पण उत्तरगुणमां कांइ कांइ ठानो दोष लगाडे तेने प्रतिसेवना कुशील कहीए, संज्वलन कषायोदये करी कांइक अप्रशस्त परिणाम थाय पण मुळगुणमां तथा उत्तर गुणमां कांइ दोष लगाडे नहि तेने कषाय कुशील कहीए, संपुर्ण ग्रंथी रहित मोहनीय वर्जीत वितराग छद्मस्थ तेने निर्ग्रंथ कहीए अने घातीकर्म रहित सयोगी केवळी तथा सैलेशी प्रतिपन्न अयोगी केवळी तेने स्नातक कहेवायछे. सडुंसाधान्यनापुळा सरखा पुलाक, सडुंसाधान्यसरखां बकुस, मसळयाधान्य सरखा प्रतिसेवना कुशिल, उपण्या धान्य सरखां क-

षाय कुशील, कणकीसहितचोखासरखा निर्ग्रंथ अने अणीशुद्धचोखासदृश्यस्नातकजाणवा. पुलाक, बकुस अने प्रतिसेवना कुशीलमां एक सामायिकचारित्र तथा बीजुं छेदोपस्थापनियचारित्र एम बे चारित्र लाभे. कषाय कुशीलमां प्रथमना चार चारित्र लाभे. निर्ग्रंथमां अने स्नातकमां एक यथाख्यातचारित्रहोयछे. इतिनिर्ग्रंथ. प्रथमना चार चारित्रे बे, त्रण अथवा चार ज्ञान होय छे अने यथाख्यात चारित्रमां पांचज्ञाननीभजनाजाणवी. इतिज्ञान. स्वलिंगे पांच चारित्र लाभे, अन्यलिंगे अने गृहस्थलिंगे परिहारविशुद्धी चारित्रविना बाकीना चार चारित्रलाभे, एम द्रव्यलिंगनी अपेक्षाएजाणवुं तथा भावलिंगनी अपेक्षाए स्वलिंगे पांचे चारित्र होय अने अन्यलिंगे तथा गृहस्थलिंगे एके चारित्र होय नहि. इति लिंग. पहेला तथा बीजा चारित्रने विषे त्रणचार अथवा पांचे शरीरलाभे अने त्रीजा, चोथाने पांचमा चारित्रने विषे औदारिक, तैजस अने कार्मण एम त्रण शरीर होय छे. इति

शरीर. कर्म भुमिमां पांचे चारित्र होय अने अकर्म भुमि तथा अंतर द्वीपमां एके चारित्र होय नहि. इति क्षेत्र. उत्सर्पिणी काळमां जन्मनी अपेक्षाए पहेले आरे एके चारित्र न लाभे अने बीजा, त्रीजा तथा चोथा आरामां पांचेचारित्रलाभे तथा पांचमां छठा आरामां एके चारित्रहोय नहि. आ अवसर्पिणी काळमां जन्मनी अपेक्षाए पहेलाने बीजा आरामां एके चारित्र न होय, चोथा आरामां पांचे चारित्र होय,पांचमां आरामां एक सामायिकअने बीजुं छेदोपस्थापनिय एम बे चारित्र होय अने छठे आरे एके चारित्र होय नहि. इतिकाळ. नारकी, तिर्यंच अने मनुष्य ए त्रणे गतिमां चारित्रनो आराधक जायनहि पण देवगतिमां जाय तेमां सामायिक अने छेदोपस्थापनिय चारित्र आराधक जघन्य पहेले देवलोके अने उत्कृष्ट अनुत्तर विमाने जाय छे, परिहार विशुद्धी चारित्र आराधक जघन्य पहेले देवलोके अने उत्कृष्ट आठमे देवलोके जाय, सुक्ष्म संपराय चारित्र अने यथाख्यात चारित्रना आराधक अनुत्तर विमाने

जाय तथा यथाख्यात चारित्रआराधक उत्कृष्टो मोक्षे पण जाय छे. इतिगति. मनयोग, वचनयोग अने काययोग ए त्रणे योगे पहेलेथी चार चारित्र अने अयोगीमां एक यथाख्यात चारित्र लाभे. इतियोग. सागार उपयोगमां पांच चारित्र अने अनागार उपयोगमां सुक्ष्मसंपरायचारित्र वर्जीने बाकीना चार चारित्र लाभे. इति उपयोग. प्रथमना चार चारित्र सकषायी अने यथाख्यात चारित्र कषाय रहित जाणवुं. सकषायी चारित्रमांथी पहेला बीजा ने त्रीजा चारित्रे संज्वलननो क्रोध मान, माय अने लोभ होय छे तथा सुक्ष्मसंपरायचारित्रे एक संज्वलन लोभनो कांइक अंश होय छे. इति कषाय, सामायिकने छेदोपस्थापनिय चारित्रमां छलेश्या, परिहारविशुद्धि चारित्रमां पाछली त्रण लेश्या अने सुक्ष्म संपराय तथा यथाख्यात चारित्रने विषे शुक्ल लेश्या कही छे. इति लेश्या. सामायिकने छेदोपस्थापनिय चारित्रे छट्ठुं, सातमुं, आठमुं ने नवमुं एम चार गुणस्थानक होय, परिहार विशुद्ध चारित्रे छठुंने सातमुं एम बे गुणस्था

नक होय, सुक्ष्मसंपरायचारित्रे दशमु गुणस्थानक होय अने यथाख्यात चारित्रे अगियारमुं, बारमुं, तेरमुं तथा चौदमुं एम चारगुणस्थानक कह्यांछे. इति गुणस्थानक. सामायिक अने छेदोपस्थापनिय चारित्रवाळा जघन्य एकभव अने उत्कृष्टा आठ भव करे अने बाकीना त्रण चारित्रवाळा जघन्य एक भव अने उत्कृष्टा त्रणभव करे. इति भव. सामायिक चारित्र एकभवमां जघन्य एकवार अने उत्कृष्ट नवसें वार आवे, छेदोपस्थापनियचारित्र एक भवमां जघन्य एकवार अने उत्कृष्ट एकसोने वीसवार आवे परिहार विशुद्धि चारित्र एक भवमां जघन्य एकवार अने उत्कृष्ट त्रणवार आवे, सुक्ष्म संपराय चारित्र एक भवमां जघन्य एकवार अने उत्कृष्ट चार वार आवे अने यथाख्यात चारित्र एक भवमां जघन्य एकवार ने उत्कृष्ट बे वार आवे छे एम कह्युं छे. इति आकर्ष. पहेलेथी चार चारित्र सुधीमां एक क्षयोपशमभाव लाभे अने यथाख्यात चारित्रने विषे उपशमभाव अने क्षायिक ए बे भावलाभे. इतिभाव. सर्वथी थोडा

सुक्ष्मसंपरायचारित्रवाळा, सुक्ष्मसंपरायचारित्र-वाळाथी परिहार विशुद्धिचारित्रवाळा संख्यातगुणा, परिहारविशुद्धि चारित्रवाळाथी यथाख्यात चारित्र-वाळा संख्यात गुणा, यथाख्यात चारित्रवाळाथी छेदो पस्थापनिय चारित्रवाळा संख्यात गुणा अने छेदो पस्थापनिय चारित्रवाळाथी सामायिक चारित्रवाळा जीवो संख्यातगुणा जाणवे. इति अल्पबहुत्व. ए प्रमाणे छंगणीशद्वारे संक्षेपे करीने पांच चारित्रकह्यां.

॥ इति संजतिद्वार ॥

अथ साडत्रीसमुं जराउद्वार.

जराउ–वेदनी–ते वे प्रकारे छे जरावेदनी अने २ शोक वेदनी ते सर्व संसारी जीवोने होयछे. शरीरे करीने जे वेदाय ते जरावेदनी अने मने करीने जे वेदाय ते शोकवेदनी जाणवी,

नारकीनोएकदंडक, देवताना तेरदंडक, गर्भजतिर्यंचनोएक दंडक, अने गर्भज मनुष्यनो एक दंडक एम सोल दंडकना जीवोने एक जरा-वेदनी अने वीजी शोकवेदनी एम वे वेदनी होयछे.

एकेंद्रियनापांचदंडकअने विगलेंद्रियना त्रण दंडक एम आठ दंडकना जीवोने तथा समुर्छिम मनुष्य अने समुर्छिमतिर्यंचपंचेंद्रियने एक जरा-वेदनीज होय छे. सिद्धना जीवोने एके वेदनी नथी.

॥ इति जराद्वार ॥

अथ अठ्ठावीसमुं परिग्रहद्वार.

परिग्रह—संग्रह ते त्रण प्रकारे छे. १ कर्म परिग्रह, २ शरीर परिग्रह अने ३ बाह्य भंडोपगरण (भाजनादि उपकरण) परिग्रह.

नारकी तथा एकेंद्रियने एक कर्म परिग्रह अने बीजो शरीर परिग्रह एम बे परिग्रह होय छे. देवता तथा त्रण विगलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्यने त्रणे परिग्रह होय छे.

॥ इति परिग्रहद्वार ॥

अथ ओगणत्रीसमुं अल्प बहुत्वद्वार.

अल्पबहुत्व एटले सर्व जीवोमां कया दंडके जीवो थोडा अने कया दंडके जीवो वधारे एम जे कहेवुं तेनुं नाम अहिं अल्पबहुत्व जाणवुं.

सर्वथी गर्भज मनुष्य थोका, तेथी बादर अग्नि-कायना दंमके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी वैमानिकना दंमके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी भुवनपतिना दंमके जीवो असंख्यातगुणा तेथी नारकीना दंमके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी व्यंतरना दंमके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी ज्योतिषीना दंमके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी चौरिंडियना दंमके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी तिर्यंच पंचेंडियना दंमके जीवो विशेषाधिक, तेथी बेइंडियना दंमके जीवो विशेषाधिक, तेथी तेइंडियना दंमके जीवो विशेषाधिक, तेथी पृथ्वीकायना दंमके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी अपकायना दंमके जीवो असंख्यातगुणा, तेथी वाउकायना दंमके जीवो असंख्यातगुणा अने वाउकायथी वनस्पतिकायना जीवो अनंतगुणा कह्यां छे.ए प्रमाणे सामान्ये चोवीशे दंमके जीवोनुं अल्पबहुत्व कह्युं.

विशेष व्याख्याए जीवो संबंधी अल्पबहुत्वना अढाणुं भेदकहेछे गर्भजमनुष्यो सर्वे थइने (७९२२८१६२, ५१४२६४३, ३७५९३५४, ३९५०३३६,)

सातक्रोड बाणुलाख अठ्यावीशहजार एकसोनेबासठ क्रोडाक्रोड क्रोड, एकावनलाख बहेंतालीसहजार ठसेंनेत्रैंतालीश क्रोडाक्रोड, साडत्रीशलाख उंगणसाठ हजार त्रणसेंने चोपनक्रोड, उंगणचालीशलाख पच्चास हजार त्रणसोनेठत्रीश ठे. ते संख्यामांथी पण पुरुषो करतां स्त्री सत्यावीस गणी जाफेरी ठे. माटे, १ प्रथम सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्यो (पुरुषो), २ तेथी मनुष्यणी (स्त्रीउं) संख्यातगुणी, ३ तेथी बादर तेउकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा, ४ तेथी अनुत्तर विमानवासी देवो असंख्यातगुणा, ५ तेथी उपरला त्रण ग्रैवेयकना देवता संख्यातगुणा, ६ तेथी मध्य त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यातगुणा, ७ तेथी नीचला त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यातगुणा, ८ तेथी अच्युत देवलोकना देवता संख्यातगुणा, ९ तेथी आरण्य देवलोकना देवो संख्यातगुणा, १० तेथी प्राणात देवलोकना देवो संख्यातगुणा, ११ तेथी आणत देवलोकना देवो संख्यातगुणा, १२ तेथी सातमी नरक पृथ्वीना नारकी असंख्यातगुणा, १३ तेथी ठठी नरक

पृथ्वीना नारकी असंख्यातगुणा, १४ तेथी सहस्रार देवलोकना देवो असंख्यातगुणा, १५ तेथी महाशुक्र देवलोकना देवो असंख्यातगुणा, १६ तेथी पांचमी नरक पृथ्वीना नारकी असंख्यातगुणा, १७ तेथी लांतक देवलोकना देवता असंख्यातगुणा, १८ तेथी चोथी नरकपृथ्वीना नारकीअसंख्यातगुणा, १९ तेथी ब्रह्मदेवलोकना देवो असंख्यातगुणा, २० तेथी त्रीजी नरक पृथ्वीना नारकी असंख्यातगुणा, २१ तेथी मांहेंद्र देवलोकना देवो असंख्यातगुणा, २२ तेथी सनत्कुमार देवलोकना देवो असंख्यातगुणा, २३ तेथी बीजी नरक पृथ्वीना नारकी असंख्यातगुणा, २४ तेथी समुर्च्छिम मनुष्य असंख्यातगुणा, २५ तेथी इशान देवलोकना देवो असंख्यातगुणा, २६ तेथी इशान देवलोकनी देवीयो संख्यातगुणी, २७ तेथी सौधर्म देवलोकना देवो संख्यातगुणा, २८ तेथी सौधर्म देवलोकवासी देवीयो बत्रीसगुणी छे माटे संख्यातगुणी, २९ तेथी भुवनपतिना देवता असंख्यातगुणा, ३० तेथी भुवनपतिनी देवीयो बत्रीसगुणी छे माटे

संख्यातगुणी ३१ तेथी पहेली नरक पृथ्वीना नारकी असंख्यातगुणा, ३२ तेथी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया पुरुष असंख्यातगुणा, ३३ तेथी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिनी स्त्रीउं त्रिगुणी छे माटे संख्यातगुणी, ३४ तेथी थलचर पंचेंद्रिययोनिया पुरुष संख्यातगुणा, ३५ तेथी थलचर पंचेंद्रिय योनिनी स्त्रीउं त्रिगुणी छे माटे संख्यातगुणी, ३६ तेथी जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिया पुरुष संख्यातगुणा, ३७ तेथी जलचर तिर्यंच योनिनी स्त्रीउं त्रिगुणी छे माटे संख्यातगुणी, ३८ तेथी व्यंतर निकायना देवो संख्यातगुणा, ३९ तेथी व्यंतर देवीयो बत्रीसगुणी छे माटे संख्यातगुणी, ४० तेथी ज्योतिषी देवता संख्यातगुणा, ४१ तेथी ज्योतिषीनी देवीयो बत्रीसगुणी छे माटे संख्यातगुणी, ४२ तेथी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनी या नपुंसक संख्यातगुणा, ४३ तेथी थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनि या नपुंसक संख्यातगुणा, ४४ तेथी जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनि या नपुंसक संख्यातगुणा, ४५ तेथी चौरिंद्रिय पर्याप्ता संख्यातगुणा, ४६ तेथी सर्व पंचेंद्रिय पर्याप्ता

विशेषाधिक, ४७ तेथी वेइंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक, ४८ तेथी तेइंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक, ४९ तेथी पंचेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक, ५० तेथी चौरिंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक, ५१ तेथी तेइंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक, ५२ तेथी वेइंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक, ५३ तेथी प्रत्येक शरीरवाला बादर वनस्पति कायिया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा, ५४ तेथी बादर निगोदपर्याप्ता अनंतकायना शरीर असंख्यातगुणा, ५५ तेथीबादरपृथ्वीकायियापर्याप्ता असंख्यातगुणा ५६ तेथी बादर अपकायिया पर्याप्ता असंख्यात गुणा, ५७ तेथी बादर वाउकायिया पर्याप्ता असंख्यात गुणा, ५८ तेथी बादर ते उकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा, ५९ तेथी प्रत्येक शरीरवाळा बादर वनस्पति कायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा, ६० तेथी बादर निगोदीया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा, ६१ तेथी बादर पृथ्वी कायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा, ६२ तेथी बादर अपकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा, ६३ तेथी बादर वाउकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा, ६४

तेथी सुक्ष्म तेउकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा, ६५ तेथी सुक्ष्म पृथ्वीकायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक, ६६ तेथी सुक्ष्म अपकायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक, ६७ तेथी सुक्ष्म वाउकायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक, ६८ तेथी सुक्ष्म तेउकायिया पर्याप्ता संख्यात गुणा, ३९ तेथी सुक्ष्म पृथ्वीकायिया पर्याप्ता विशेषाधिक, ७० तेथी सुक्ष्म अपकायिया पर्याप्ता विशेषाधिक, ७१ तेथी सुक्ष्म वाउकायिया पर्याप्ता विशेषाधिक, ७२ तेथी सुक्ष्म निगोदनां शरीर अपर्याप्ता असंख्यात गुणा, ७३ तेथी सुक्ष्म निगोदनां शरीर पर्याप्ता संख्यातगुणा, ७४ तेथी अभव्य सिद्धिया जीव अनंत गुणा, ७५ तेथी पडिवाय प्रतिपत्ती सम्यग् दृष्टिजीव अनंतगुणा, ७६ तेथी सिद्धना जीव अनंतगुणा, ७७ तेथी वादर वनस्पतिकायिया पर्याप्ता अनंतगुणा, ७८ तेथी वादर पर्याप्ता विशेषाधिक, ७९ तेथी वादर वनस्पतिकायिया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा, ८० तेथी वादर अपर्याप्ता विशेषाधिक, ८१ तेथी सर्वपर्याप्ता वादरजीव विशेषाधिक, ८२ तेथी सुक्ष्म वनस्पतिका;

यिया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा, ७३ तेथी सुक्ष्म अपर्याप्ता विशेपाधिक, ७४ तेथी सुक्ष्म पर्याप्ता वनस्पतिकायिया संख्यातगुणा, ७५ तेथी सर्व सुक्ष्म पर्याप्ता विशेपाधिक, ७६ तेथी सर्व पर्याप्ता अपर्याप्ता सुक्ष्म जीव विशेपाधिक, ७७ तेथी नव्यसिद्धिक नव्यजीव विशेपाधिक, ७८ तेथी निगोदनाजीव विशेपाधिक, ७९ तेथी वनस्पतिना जीव विशेपाधिक, ८० तेथी एकेंद्रियजीव विशेपाधिक, ८१ तेथी तिर्यंचयोनिया विशेपाधिक, ८२ तेथी मिथ्या दृष्टि विशेपा धिक, ८३ तेथी अविरतिजीव विशेपाधिक, ८४ तेथी सकपायी जीव विशेपाधिक, ८५ तेथी छद्मस्थजीव विशेपाधिक, ८६ तेथी सयोगी विशेपाधिक, तेथी सर्व संसारी जीवविशेपाधिक अने ८७ तेथी सर्व जीवविशेपाधिक छे.

॥ इति अल्प बहुत्वद्वार ॥

अथ चालीसमुं संज्ञीद्वार.

संज्ञी—संज्ञा—जाणवुं तेनेसंज्ञा कहीए. संज्ञा त्रण प्रकारनी छे, १ दीर्घकालीकी संज्ञा, २ हितोप-

देशीकी संज्ञा अने ३ दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा. घणा काळनी वात जाणे एटले त्रिकालिक वस्तुनुं जाणपणुं ते दीर्घ कालिकी नामे संज्ञा जाणवी. पोताना शरीर रक्षणने अर्थे इष्ट वस्तुमां प्रवर्त्ते अने अहित वस्तुथी निवर्त्ते तेनुं नाम हितोपदेशिकी संज्ञा जाणवी. द्वादशांगीना जाणनार सम्यग् दृष्टि श्रुतज्ञानने जे जाणे तेनुं नाम दृष्टिवादोपदेशीकी संज्ञा जाणवी.

भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक ए देवताना तेर दंडक तथा तिर्यंचनो एक दंडक अने नारकीनो एक दंडक एम पंदर दंडके, एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय कारणके आ अमुक काम कर्युं, अमुक काम करुं छुं, अने अमुक काम करीश एम अतीत, अनागत अने वर्तमान ए त्रणकाल विषयिकनुं ज्ञान थाय छे माटे ते दीर्घकालिकी संज्ञा जाणवी. बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरिंद्रियना दंडके जीवोने एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय छे, कारणके एओने ज्ञान मन छे माटे कांइक मनोज्ञान सहित वर्तमान काळने विषे इष्ट वस्तुनी प्रवृत्ति अने अनिष्ट वस्तुनी

निवृत्ति रुप जाण पणुं होय तेथी तेने हितोपदेशिकी संज्ञा जाणवी. पृथ्वीकायादिक पांच एकेंद्रियना दंडके जीवोने एके संज्ञा होय नहि, कारणके एमने एकज काय योग छे माटे संज्ञा रहित जाणवा. मनुष्यना दंडके जीवोने दीर्घ कालिकी संज्ञा होय तथा कोइएक सम्यगदृष्टि, चौदपूर्वधरजीवोने बीजो दृष्टिवादो पदेशिकी संज्ञा पण होय छे. हितो पदेशिकी संज्ञा दीर्घकालिकी संज्ञाने विषे अंतर्भूतछे.

॥ इति संज्ञीद्वार ॥

अथ एकताळीसमुं प्रकीर्णद्वार.

जीवोना शरीरादिकना माप जे अंगुलेथी पामीए ते अंगुलादिकनुं स्वरुप तथा जीवोना आयुष्य जे पल्योपम सागरोपमादिकना कह्यां छे ते पल्योपमअने सागरोपमनुं स्वरुप संक्षेपथी कहे छे.

एक आत्म अंगुल, बीजुं उत्सेधांगुल अने त्रीजुं प्रमाण अंगुल एम अंगुल त्रण प्रकारे छे,तेमां जे काळे जे क्षेत्रेजेटलुं मनुष्यनुं अंगुलहोय तेअंगुलप्रमाणने आत्म अंगुल कह्युं छे. आत्म अंगुले नगर, गाम, कुवा, तळाव,

घाव, गढ, पोळ, कोठा, वहाण, रथ अने गामादिक मपायछे जेमके रुषभदेवना वारे रुषभदेवना अंगुले मापीने लोको घर, हाट, कुवा प्रमुख करता हता अने श्रीमहावीर स्वामीना वारे महावीर स्वामीना अंगुले मापीने घर, हाट, कुवा प्रमुख लोको करता हता ए प्रमाणे आत्म अंगुलनुं स्वरुप जाणवुं.

अनंता सुक्ष्म परमाणुए एक व्यवहार परमाणु थाय, ते व्यवहार परमाणु मंदिरने विषे छिद्रादिकथी आवता सूर्यना किरणोमां जे उडतां रजना कणीया देखाय छे, तेना अनंतमा भाग जेटलो झीणो होय छे. अनंता व्यवहार परमाणुए एक उष्ण सन्नियो थाय, आठ उष्ण सन्निये एक सण सन्नियो थाय. ए आठ सण सन्निए एक उर्धरेणु अने आठ उर्धरेणुए एकत्रसरेणुथाय छे. ते त्रसरेणु बेइंद्रियादिक त्रस जीवोने चालती जे रज उडे छे, तेना एक कणीया बराबर जाणवो. आठ त्रसरेणुए एक रथरेणुए थाय; तेरथरेणु रथादिक चालतां जे रज उडे छे ते मांहेना एक कणीया जेवडो जाणवो. आठ रथरेणुए कुरुदे-

त्रना युगलीयामनुष्यनाएकत्राळाग्र, कुरुक्षेत्रना युगलीयामनुष्यनाआठवाळाग्रे हरिवर्ष अथवा रम्यकवर्षक्षेत्रनायुगलीयानो एकवाळग्र. हरिवर्ष अथवा रम्यक वर्ष क्षेत्रना युगळीयाना आठ वाळाग्रे हेमवंत अथवा ऐरण्यवृत क्षेत्रना युगलीयानो एक वाळाग्र हेमवंत अथवा ऐरण्यवृत क्षेत्रना युगली-याना आठवाळाग्रे, महाविदेह क्षेत्रना मनुष्यनो एक वाळाग्र. महाविदेहना मनुष्यना आठ वाळाग्रे, ज्ञ-रत अथवा ऐरवृतक्षेत्रना मनुष्यनो एक वाळाग्र जाणवो. आठ वाळाग्रे एकलिंख,आठ लिंखे एकजुं, आठजुंए एक जवमध्य अने आठ जवमध्ये एक उत्से धांगुल थाय, एवा छ उत्सेधांगुले एक पग, बे पगे एक वेंत,बे वेंते अथवा चोवीस अंगुले एक हाथ, चार हाथे एक धनुष्य,बे हजार धनुष्ये एकगाउ अने एवा चार गाउए एक जोजन थाय. ए उत्सेधांगुले देवतादिक सर्व संसारी जीवोनी अवगाहनानुं प्र-माण (माप) कह्युं छे.

चारसें उत्सेधांगुले एक प्रमाण अंगुल थाय. अने एक प्रमाण अंगुले चारसें उत्सेधांगुलथाय एम

जरीए पछी ते कुपमांथी समये समये एकेको खंम काढीए एम काढतां काढतां जेटलाकाळे एपल्यखाली थाय तेटला काळने सुक्ष्मउद्धार पल्योपम कहे छे. सुक्ष्म उद्धार पल्योपम असंख्याता समय एटले संख्याता क्रोम वरसनो होय छे. पच्चीस कोमा कोमी उद्धार पल्योपमना जेटला समय थाय तेटला द्वीप अने समुद्रो आतिर्छा लोकमां छे एम कह्युं छे.

पूर्वोक्तयोजन प्रमाण पल्य वादरवाळाग्रेजरी अने तेमांथी सोसो वर्षे एकेक वालाग्र काढतां काढतां ते पल्य जेटलाकाळे खाली थाय तेटलाकाळने वादर अद्धा पल्योपम कहे छे. वादर अद्धापल्योपम संख्याता क्रोम वरस प्रमाण थाय. हवे तेहीज वादर खंमना पूर्वोक्त रीते असंख्याता सुक्ष्म खंम कल्पीए ने ते कल्पेला खंमसांथी एकेको खंम सोसो वर्षे काढीए ने एम सुक्ष्म खंम काढतां काढतां जेटलाकाळे ते पल्य खाली थाय तेटला काळने सुक्ष्म अध्धापल्योपम कहे छे. सुक्ष्म अद्धापल्योपम असंख्याता क्रोम वर्षे थाय, दश कोमाकोमी सुक्ष्म अद्धापल्योपमे एक अद्धा

सागरोपम थाय;ए सुक्ष्म अद्धापल्योपम अने सागरोपमे करी देवता, नारकी अने तिर्यंच विगेरेना आयुष्य तथा स्वकायस्थिति, जवस्थिति अने कर्म स्थितिनुं काळमान कह्युं छे.

पूर्वोक्त रीते एकयोजनप्रमाणपल्यनेविषे जरेला वादरवाळाग्रमांहेथी एकेकावाळाग्रे स्पर्शेला जेटला जेटला आकाश प्रदेश होय तेटला तेटला समये एकवाळाग्र काढीए एम काढतां काढतां जेटलाकाळे ते पल्य खाली थाय तेटलाकाळने एक बादर क्षेत्र पल्योपम कहीए. एक वादरक्षेत्र पल्योपम असंख्याती उत्सर्पीणी अने असंख्याती अवसर्पीणीए थाय छे. हवे तेहीज वादरवाळाग्रखंडना पूर्वोक्त रीते सूक्ष्मवाळाग्रखंड कल्पीए ने ते कल्पेला सुक्ष्म वाळाग्रेने स्पर्शेला प्रदेश तथा अणस्पर्श्या एवा समस्त आकाशप्रदेशने समये समये काढतां जेटलाकाळे ते पल्य खाली थाय तेटलाकाळने सुक्ष्मक्षेत्र पल्योपम कहे छे. सुक्ष्मक्षेत्र पल्योपमनुं काळमान पूर्वोक्त वादरक्षेत्र पल्योपमथी असंख्यातगुण असंख्याती उत्सर्पीणी अने असंख्याती अवसर्पीणी प्रमाण

शुध्धि पत्रिका.

पृष्ठ	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१	९	विरहकाळभो	विरहकालभो
१	११	संग्या	संजया
२	१०	द्वारोना	द्वारोने
२	१३	यस्मिन	यस्मिन्
४	५	ए मूळ ३ छे. ४	ए मूळ छ भेद छे.
४	१५	झाकळनुं करांनुं;	झाकळनुं, करानुं,
	९	वनस्पतिकापने	वनस्पतिकाय ते
	२	पचेंद्रिय वळी	पचेंद्रिय ते वळी
१२	११	कल्याणादिके	कल्याणकादिके
१२	१६	सहसार देवलोक	सहस्रार देवलोक
१४	६	जोजनना	जोजननो
१५	६	धनवात	घनवात
१५	१८	ते नीचे	तेना नाम नीचे
१६	१	शेरुओ	रोरुओ
१६	३	शेरुक	रोरुक
१७	१२	शर्कन	शर्करा
२५	१	धनोदधि	घनोदधि
२५	३	पृथ्व	पृथ्वी
३२	१०	भुवननी	भुवनो
३२	१५	पींड	पींड छे,
३५	३	संभूतला	समभूतल
४०	१२	जहार	हजार
५२	१५	धनुपष्य	धनुष्य

कह्युं छे. एवा दश कोडाकोडी सुक्ष्मक्षेत्र पल्योपमे एक सुक्ष्मक्षेत्र सागरोपम थाय. ए पल्योपम तथा सागरोपमे करी त्रसादिक जीवोनुं परिमाण करवुं एम कह्युं छे.

त्रण प्रकारना सुक्ष्म पल्योपमनुं प्रयोजन शास्त्रने विषे छे अने त्रण प्रकारना बादर पल्योपम कह्यां छे तेतो फक्त सुक्ष्म पल्योपमना सुखावबोध थवा माटे कह्यां छे तेनुं कांइ बीजुं प्रयोजन शास्त्रने विषे नथी.

दश कोडाकोडी पल्योपमे एक सागरोपम थाय दश कोडाकोडी सागरोपमे एक उत्सर्पीणी अने दश कोडाकोडी सागरोपमे एक अवसर्पीणी थाय. एक उत्सर्पीणी अने एक अवसर्पीणी मळीने वीस कोडाकोडी सागरोपमे एक काळचक्र थाय. अनंताकाळचक्रे एक पुद्गल परावर्त्तन थाय. एवा अनंता पुद्गल परावर्त्तनो, जीवे समकित अणफरस्या अतिक्रम्या माटे तत्त्वश्रद्धारूप शुद्ध समकितवडे सर्वा प्रकारे ज्ञान दर्शन चारित्र आराधी अनंत सुखनुं धाम मोक्षने माटे प्रयत्न करवो ते जीवने श्रेयस्कर छे.

॥ इति उपसंहार. ॥

शुध्धि पत्रिका.

[illegible]	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
	९	विरहकाळओ	विरहकाल्ओ
	११	संज्या	संजया
२	१०	द्वारोना	द्वारोने
२	१३	यस्मिन	यस्मिन्
४	५	ए मूळ ३ छे.	४ ए मूळ छ भेद छे.
४	१५	झाकळ्नुं फरांनुं:	झाकळनुं, फरानुं,
६	९	वनस्पतिकायने	वनस्पतिकाय ते
९	२	पचेंद्रिय वळी	पचेंद्रिय ते वळी
१२	११	कल्याणादिके	कल्याणकादिके
१२	१६	सहसार देवलोक	सहस्रार देवलोक
१४	६	जोजनना	जोजननो
१५	६	घनवात	घनवात
१५	१८	ते नीचे	तेना नाम नीचे
१६	१	रोरुओ	रोरुओ
१६	३	रोरुक	रोरुक
१७	१२	शर्कन	शर्करा
२५	१	घनोदधि	घनोदधि
२५	३	पृथ्व	पृथ्वी
३२	१०	भुवननी	भुवनो
३२	१५	पींड	पींड छे,
३५	३	संभूतमा	सनभूतमा
४०	१२	जार	हजार
५२	१५	मनुषप्य	मनुष्य

७२	८	मांथी—तेमां	मां—तो
७५	१२	द्रव्येंद्रियनो	द्रव्येंद्रिय ते
७५	१२	अभ्यंतर	अभ्यंतररूप
८५	११	लगे एक एक	लगे लग एक
९२	१३	फोरवे छे ^	^ तेनुं नाम पर्याप्ति कहेवाय छे.
११२	१	जाणे छे	देखे छे
११३	१	जीवने रुची	जीवने धर्मनी रुची
११५	१२	पडे पण मरण पामे नहि—	पडे के मरण पामे नहि
११६	६	तेथी	०
११८	१७	केळवी	केवळी
१२४	४	एक	एक एम
१२५	४	आहाराभिलाप	आहाराभिलाप
१२५	१७	माटे	माटे देवोने
१२६	२	वरसथी	वरसथी उपर
१३७	१२	विचारनार,	^ समकित थवा न दे
१३८	५	ने	ते
१४१	१	तीव्रक	तीव्रक
१४२	२	ए—	एम
१४३	१	समुद्र,	^ ते अपकाय अने
१४६	११	देवलोक	देवलोके
१५१	१८	पांच	पांचमे
१५२	९	[illegible]	[illegible]
१६०	५	देवनी	देवनी